EDU TERIA
E - D.N.A
Daily Newspaper Analysis
Prelims Mains Essay
By- Nikhil Ranjan

Useful For Prelims

Date: 04 January 2026

गणित का डर भगाने की 'कला' से मारा मैदान...

उपलब्धि

बीएचयू की कला संकाय की छात्रा ऐशिकी सेन ने कैट में 99.18 परसेंटाइल प्राप्त कर इतिहास रचा। गणित से डरने के बजाय उसे प्रतिदिन के अभ्यास का हिस्सा बनाकर जीत का रास्ता बना लिया। पियानो और गायिकी के साथ अंग्रेजी, हिंदी, बांग्ला के साथ फ्रेंच भाषा पर मजबूत की पकड़

संग्राम सिंह • जागरण

वाराणसी : कला संकाय की पृष्ठभूमि कैट जैसी कठिन परीक्षा की राह नहीं रोक सकती। बीएचयू में बीए आनर्स साइकोलाजी की तृतीय वर्ष की छात्रा ऐशिकी सेन ने कामन एडमिशन टेस्ट (कैट-2025) में 99.18 परसेंटाइल हासिल कर सिद्ध कर दिया कि क्वांटिटेटिव एबिलिटी यानी गणित की चुनौती को धैर्य, नियमित अभ्यास और सही रणनीति से पार किया जा सकता है। आम धारणा है कि कला/मानविकी के छात्रों के लिए कैट कठिन परीक्षा होती है, लेकिन ऐशिकी ने इस मिथक को तोड़ते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इस वर्ष लगभग ढाई लाख अभ्यर्थियों में से सिर्फ ढाई हजार परीक्षार्थी ही 99 परसेंटाइल से ऊपर पहुंच पाए।

मूल रूप से कोलकाता की रहने वाली ऐशिकी वर्तमान में वाराणसी में रहती हैं। उनका लक्ष्य देश के शीर्ष प्रबंधन संस्थान से ह्यूमन रिसोर्स (एचआर) में एमबीए करना है। पिता सैकत सेन बीएचयू के सेंट्रल डिस्कवरी सेंटर स्थित डीएसटी-साथी (अत्याधुनिक विश्लेषणात्मक एवं तकनीकी सहायता संस्थान) में मुख्य परिचालन अधिकारी हैं, जबकि मां काजरी सेन शास्त्रीय संगीत की शिक्षिका हैं। पिता की नौकरी के कारण उनका बचपन कई शहरों में बीता। इससे उन्हें अलग-अलग लोगों और उनके व्यवहार को समझने का अवसर मिला। यही उन्हें मानव संसाधन क्षेत्र की ओर आकर्षित करता है।

ऐशिकी न केवल पढ़ाई में तेज हैं, बल्कि बहुमुखी प्रतिभा की धनी भी हैं। अंग्रेजी, हिंदी और बांग्ला के साथ-साथ फ्रेंच भाषा पर अच्छी पकड़ है। उनका बचपन पुडुचेरी में गुजरा तो उन्होंने वहां फ्रेंच सीखी। वह प्रशिक्षित पियानोवादक हैं और स्कूल के दिनों में मंच पर प्रस्तुतियां दे चुकी हैं। पढ़ाई के साथ गायन का अभ्यास आज भी जारी रखे हुए हैं। ऐशिकी के लिए कैट की तैयारी के साथ ही ग्रेजुएशन की परीक्षा का संतुलन बैठाना किसी चुनौती से कम नहीं था। उन्होंने बताया कि 24 नवंबर को ग्रेजुएशन की सेमेस्टर परीक्षा थी, जबकि 30 नवंबर को कैट का एग्जाम था। एक तरफ विषयगत विश्वविद्यालय परीक्षा और दूसरी तरफ गणित, रीडिंग कम्प्रिहेंशन, डाटा इंटरप्रिटेशन, लाजिकल रीजनिंग और क्वांटिटेटिव एबिलिटी जैसे कठिन सेक्शनों वाला कैट का पेपर। दोनों की एक साथ तैयारी करना आसान नहीं था। मौखिक परीक्षा, पठन बोध, डाटा व्याख्या और लाजिक से जुड़े जटिल सवालों के बावजूद उन्होंने घबराने के बजाय योजनाबद्ध ढंग से तैयारी जारी रखी।

ऐशिकी सेन

सालभर की निरंतर मेहनत काम आई

ऐशिकी का कहना है कि उनकी सफलता के पीछे एक साल की निरंतर मेहनत के साथ माता-पिता का भावनात्मक सहयोग सबसे बड़ी ताकत रही। उनकी उपलब्धि बताती है कि कोई भी चीज आपके सपनों की सीमा तय नहीं करती। सही दिशा, अनुशासन और आत्मविश्वास से जीवन की किसी भी परीक्षा में उत्कृष्ट परिणाम हासिल किए जा सकते हैं। ह्यूमन रिसोर्स में एमबीए करने की वजह का उल्लेख करते हुए वह बताती हैं कि एआइ के जमाने में ह्यूमन रिसोर्स यानी मानव संसाधन का सही ढंग से उपयोग ही सबसे बड़ी चुनौती होगी। जो कंपनी इसे नियंत्रित कर सकेगी, वही शीर्ष पर होगी। बदलते समय के साथ इस क्षेत्र में नए मानक भी गढ़े जाएंगे।

****

Dainik Jagaran Page No-13

सुपर वुल्फ मून

ब्रिटेन के दक्षिण पश्चिम लंदन के रिचमंड पार्क में शनिवार की सुबह वुल्फ सुपरमून अस्त होते हुए देखा गया। सुपरमून आमतौर पर तब होता है, जब चंद्रमा की पूर्ण अवस्था पृथ्वी के निकट आने के साथ मेल खाती है, जिसे पेरिगी कहा जाता है। खगोलीय भाषा में इसे सुपर वुल्फ मून भी कहते हैं। सुपरमून में चंद्रमा आठ प्रतिशत अधिक बड़ा और 16 प्रतिशत अधिक चमकीला दिखाई देता है। एएफपी

ज्ञान की गरिमा

विचार बोध

रोहित कुमार

एक आम सूक्ति है कि जब कोई पेड़ फलों से लद जाता है तो झुक जाता है। इसका अर्थ भी सामान्य और सहज है कि अगर कोई व्यक्ति ज्ञान से लैस हो जाता है तो वह विनम्र हो जाता है। बल्कि इससे ज्यादा शायद यह होता है कि एक ज्ञान से लैस व्यक्ति खुद को ज्ञान की राह का यात्री भर मानता है और कुछ जानने के क्रम में जब कुछ हासिल कर लेता है, तब वह जितना अपने पास पहुंच सके ज्ञान का सम्मान करता है, उससे ज्यादा वह अपने पास नहीं पहुंच सके ज्ञान और उससे लैस व्यक्ति की कद्र करना शुरू कर देता है। इसकी वजह यह हो सकती है कि जब व्यक्ति ज्ञान की ओर कदम बढ़ाता है, तब उसे इसकी अहमियत का अंदाजा होता है और इस नाते वह ज्ञान के साथ-साथ ज्ञान के सभी केंद्रों का सम्मान करने लगता है।

इससे आगे की बात भी की जा सकती है कि अगर कोई व्यक्ति खुद को सबसे ज्ञानी या अंतिम विचार देने लायक समझने लगता है तो इसका मतलब ही है कि उसके पास इसकी घोर कमी है और वह सिर्फ ज्ञान की शक्ति के ऊपरी रूप से ही परिचित हो पाया है। ऐसे व्यक्ति की मुश्किल यह होती है कि वह किसी चीज के बारे में जानने-समझने के बजाय उस पर अपनी समझ को अंतिम मान लेता है। इससे खुद उसका नुकसान तो होता ही है, उसके परोसे ज्ञान के संपर्क और प्रभाव में आने वाले लोगों को भी इसका खमियाजा उठाना पड़ता है। सवाल है कि ज्ञान की खोज में निकला या ज्ञान का भूखा कोई व्यक्ति आखिर किस मानस का शिकार रहता है या फिर हो जाता है कि वह ज्ञान को खोजने में कम और अन्य को कमतर घोषित करने की कोशिश में ज्यादा लगा दिखता है।

नकार का रोग

इस तरह की स्थिति में होता यह है कि जो ज्ञान व्यक्तित्व के विस्तार का वाहक बन सकता है, उसे प्राप्त करने की सिर्फ कोशिश के बूते एक व्यक्ति अपनी और ज्ञान की गरिमा को नुकसान पहुंचाने की राह पर निकल पड़ता है। वह कोशिश तो करता है कि किसी अन्य की मेहनत या प्रयास को खारिज किया जाए, उसके सहारे उसे अवसरों से वंचित किया जाए, लेकिन यह ध्यान रखना भूल जाता है कि इससे वह हासिल क्या कर पाता है। संभव है कि इस प्रवृत्ति की वजह से किसी व्यक्ति को कुछ नुकसान हो जाए, मगर इस कीमत पर अगर कोई कुछ पाना चाहता है, तो उसका मूल्य वास्तव में शून्य बराबर होता है, भले ही वह आम परिभाषा में 'कुछ पा लेने' के तौर पर देखा-समझा जाता हो।

ज्ञान का महत्त्व तभी तक स्वीकार किया जाता है, जब वह इंसान के भीतर मानवीय मूल्यों का वाहक बने, उसमें विस्तार करे। अगर ज्ञानी होने के दंभ में कोई व्यक्ति नाहक ही किसी के प्रयास को नकारता है, उसे कमतर घोषित करता है, तो ऐसा करके वह न केवल अपने 'अधजल गगरी छलकत जाए' का परिचय देता है, बल्कि ज्ञान की गरिमा का भी नाश करता है। हालांकि यहीं इस सत्य का भी साक्षात्कार किया जा सकता है कि जिसके पास वास्तव में ज्ञान प्राप्त करने या ज्ञान का राही होने की भूख है, वह ज्ञान को लेकर कभी किसी भी तरह के अहंकार का शिकार नहीं होता। बल्कि ज्ञान का पथिक होने के नाते वह विनम्र हो जाता है और अपने प्राथमिक प्रयास के क्रम में अपने आसपास की जटिलताओं को सुलझाता है, विचारों के ऊपर पड़े जाले को साफ करता है। अगर किसी व्यक्ति से चूक होती है तो वह उसमें सुधार के लिए पूरी विनम्र पहल करता है।

सुधार के समांतर

सच यह है कि ज्ञान की खोज की राह में निकला व्यक्ति अपने विचारों से लेकर व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को बेहतर बनाने की इच्छा रखता ही है, साथ ही वह अपने आसपास की विडंबनाओं में भी सुधार करता है। यह सुधार किसी प्रचार के उद्देश्य से नहीं होता, बल्कि किसी बिगड़ी बात या चीज को दुरुस्त करने की वास्तविक और मानवीय भूख से उपजा प्रयास होता है। इसमें किसी को नुकसान पहुंचाने की मंशा नहीं होती, बल्कि इसके उलट अपने वैचारिक परिदृश्य के साथ-साथ अपने आसपास के वातावरण में भी जीवन-तत्त्व का विस्तार करता है। दरअसल, विनम्रता की अपनी शक्ति होती है। ज्ञान की राह का एक मुसाफिर किसी भी कीमत पर इसमें कमी-बेशी के आधार पर अन्य व्यक्ति का आकलन नहीं करता। वह ज्ञान को समृद्ध करने के लिए अपने सहित अपने आसपास मौजूद सभी लोगों के ज्ञान चक्षु खोलने का प्रयास करता है।

> **ज्ञान** का महत्त्व तभी तक स्वीकार किया जाता है, जब वह इंसान के भीतर मानवीय मूल्यों का वाहक बने, उसमें विस्तार करे। अगर ज्ञानी होने के दंभ में कोई व्यक्ति नाहक ही किसी के प्रयास को नकारता है, उसे कमतर घोषित करता है, तो ऐसा करके वह न केवल अपने 'अधजल गगरी छलकत जाए' का परिचय देता है, बल्कि ज्ञान की गरिमा का भी नाश करता है।

प्रहसन का चेहरा

इस क्रम में होता यह है कि उसके आसपास लोगों के भीतर उसे लेकर एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। इसके ठीक उलट भी होता है। ज्ञान हासिल करने की राह में निकला व्यक्ति आखिरकार अपना खोखलापन दुनिया के सामने रखता है और फिर जो ज्ञान उसके तथा आसपास के लोगों के लिए सम्मानजनक जरिया हो सकता था, वह किसी के अधकचरेपन की वजह से प्रहसन के तौर पर देखा जाने लगता है।

यह वास्तव में हीनभावना और कुंठा का सूचक होता है, जिसकी वजह से व्यक्ति ज्ञान की गरिमा और उसकी अहमियत को समझ नहीं पाता और अपने पास मौजूद दंभ को ही ज्ञान का पर्याय मानने लगता है। हीनता और असुरक्षाबोध में जीने वाला व्यक्ति न दूसरों के ज्ञान की कद्र कर पाता है, न अपनी गरिमा को कायम रख पाता है।

Jansatta Page No-18

अमेरिका में चली दुनिया की पहली चालक रहित मेट्रो ट्रेन

1962 में आज ही अमेरिका में टाइम्स स्क्वायर और ग्रैंड सेंट्रल स्टेशनों के बीच पहली बार चालक रहित मेट्रो ट्रेन चली थी। तीन डिब्बों वाली इस ट्रेन में किसी आपात स्थिति के लिए एक स्टैंड-बाय मोटरमैन होता था। यह 1964 तक सेवा में रही। यह सार्वजनिक परिवहन स्वचालन में एक ऐतिहासिक उपलब्धि थी।

दुबई में दुनिया की सबसे ऊंची इमारत बुर्ज खलीफा का उद्घाटन हुआ

2010 में आज ही दुबई में बुर्ज खलीफा का आधिकारिक उद्घाटन हुआ था। निर्माण कार्य जनवरी, 2004 में शुरू हुआ था। 2,717 फीट ऊंची इस इमारत में 163 मंजिलें हैं। इसे अमेरिकी वास्तुकार एड्रियन स्मिथ ने डिजाइन किया था। इसमें दुनिया की सबसे तेज गति वाली लिफ्टें (10 मीटर/सेकेंड) लगी हैं।

Dainik Jagaran Page -14

बिस्तर पर पड़े मरीज जीएंगे सामान्य जीवन

मस्क की कंपनी न्यूरालिंक ने बनाया चिप, स्वास्थ्य जगत में उपलब्धि को माना जा रहा मील का पत्थर

मस्तिष्क को स्पाइनल कार्ड से जोड़कर पूरे शरीर को करेगी सक्रिय

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

रीढ़ की गंभीर चोट या लकवे की वजह बिस्तर पर लाचार पड़े लोगों के लिए उम्मीद की नई किरण जगी है। टेस्ला और स्पेसएक्स के संस्थापक एलन मस्क ने दावा किया है कि उनकी ब्रेन-कंप्यूटर इंटरफेस कंपनी न्यूरालिंक के ब्रेन इंप्लांट के जरिये भविष्य में रीढ़ की गंभीर चोट झेल रहे लोगों की पूरे शरीर की कार्यक्षमता बहाल की जा सकती है। मस्क के अनुसार, यह तकनीक भौतिकी के लिहाज से पूरी तरह संभव है। स्वास्थ्य जगत में मस्क की कंपनी की उपलब्धि को मील का पत्थर माना जा रहा है।

- रीढ की चोट या लकवाग्रस्त लोगों को मिल सकती है नई जिंदगी
- तकनीक मोटर कोर्टेक्स के जरिए दिमाग और शरीर के बीच संचार जोड़ती है
- 2022 से चल रहे मानव परीक्षण, अब तक 12 मरीजों में ब्रेन चिप प्रत्यारोपित

इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर साझा एक पोस्ट और वीडियो में मस्क ने कहा कि न्यूरालिंक की तकनीक मोटर कोर्टेक्स पर केंद्रित है और यह दिमाग से क्षतिग्रस्त नसों के हिस्से को बायपास कर संचार को फिर से जोड़ सकती है। इससे गर्दन या रीढ़ में नसों के कट जाने के बावजूद शरीर के अंगों को दोबारा काम करने में मदद मिल सकती है। कोर्टेक्स के साथ संवाद में न्यूरालिंक पुल का काम कर सकती है।

न्यूरालिंक का यह फीचर पहली बार वर्ष 2022 में सामने आया था और उसी साल मानव परीक्षण भी शुरू हो गए थे।

प्रतीकात्मक

कंपनी के अनुसार, इसके एन1 इम्प्लांट में 64 थ्रेड्स के जरिये जुड़े 1,024 इलेक्ट्रोड होते हैं, जिन्हें दिमाग में लगाया जाता है। सितंबर तक 12 मरीजों में यह चिप प्रत्यारोपित की जा चुकी है। शुरुआती नतीजों में मरीज सिर्फ दिमाग की मदद से कंप्यूटर चलाने, इंटरनेट इस्तेमाल करने और वीडियो गेम खेलने में सफल रहे हैं।

दृष्टिहीनों के जीवन में भी उम्मीद की रोशनी : इसके अलावा, न्यूरालिंक ने ब्लाइंडसाइट नामक ब्रेन चिप के जरिये दृष्टि बहाली की दिशा में भी बड़ी प्रगति का दावा किया है। इस डिवाइस को सितंबर 2024 में अमेरिकी एफडीए से "ब्रेकथ्रू डिवाइस" का दर्जा मिला था। मस्क के अनुसार, यह तकनीक जन्म से नेत्रहीन लोगों को भी देखने में सक्षम बना सकती है, बशर्ते उनका विजुअल कोर्टेक्स सुरक्षित हो।

न्यूरालिंक क्या करती है : न्यूरालिंक की शुरुआत 2016 में हुई थी। यह कंपनी एक खास चिप बना रही है जिसे सीधे इंसान के दिमाग में लगाया जाता है। यह चिप दिमाग से निकलने वाले संकेतों को समझकर उन्हें कंप्यूटर या डिजिटल डिवाइस के आदेशों में बदल देती है। सिक्के के आकार की यह चिप बेहद पतले धागों के जरिए दिमाग से जुड़ी रहती है। मस्क ने एक्स पर बताया है कि कंपनी 2026 तक ब्रेन इम्प्लांट का बड़े पैमाने पर उत्पादन शुरू करने की तैयारी कर रही है। साथ ही सर्जरी की प्रक्रिया को भी काफी हद तक स्वचालित बनाने की योजना है।

Dainik Jagaran Page -14

प्रकृति मानव की नहीं, बल्कि मानव प्रकृति की संतान है। यदि विकास के नाम पर हम पर्यावरण को क्षति पहुंचाते हैं, तो यह भविष्य की पीढ़ियों से उनका अधिकार छीनने जैसा है।

डा. एपीजे. अब्दुल कलाम, भारतीय वैज्ञानिक व पूर्व राष्ट्रपति

कचरे को 'सोना' बनातीं आइशी

असम की 14 वर्षीय आइशी प्रिया बोरा ने विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपने अभिनव प्रयासों से राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त की है। उन्हें पर्यावरण संरक्षण और स्थायी जीवनशैली को बढ़ावा देने में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान भारत के बच्चों को दिए जाने वाले सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों में से एक है। जानिए इनके बारे में:

सम्मान

आइशी प्रिया बोरा। इंटरनेट मीडिया

नेशनल डेस्क • जागरण

असम के जोरहाट की रहने वाली आइशी प्रिया बोरा ने कम उम्र में ही वैज्ञानिक सोच, सामाजिक उत्तरदायित्व और पर्यावरणीय संवेदनशीलता का अद्वितीय परिचय दिया है। उन्होंने ऐसे सरल, कम लागत वाले समाधान विकसित किए हैं जो टिकाऊ जीवनशैली और अपशिष्ट प्रबंधन पर आधारित हैं।

आइशी पहले लोगों की समस्याओं को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सुलझाने का प्रयास करती हैं। इससे विज्ञान को सामुदायिक जीवन से जोड़ने में मदद मिलती है। उनकी यह सफलता दर्शाती है कि भारत में अब युवाओं की सोच केवल शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि वे नवाचार और सामाजिक बदलाव के माध्यम से बड़ी भूमिका निभा रहे हैं। आइशी जैसी प्रतिभाएं न केवल पर्यावरणीय मुद्दों को समझ रही हैं, बल्कि उनका समाधान भी प्रस्तुत कर रही हैं। उनकी यह यात्रा युवा भारत के लिए प्रेरणा और दिशा दोनों का कार्य कर रही है। आइशी द्वारा किए गए प्रमुख नवाचारों में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना, अखबारों की मल्चिंग विधि द्वारा मृदा स्वास्थ्य में सुधार लाना और पुराने अखबारों से पेंसिल बनाने की मशीन विकसित करना शामिल है। ये प्रयास 'वेस्ट टू वेल्थ' (कचरे से संपत्ति) की सोच पर आधारित हैं। साथ ही पर्यावरण-अनुकूल विकल्प है।

प्रतिष्ठित मंचों पर नवाचार का प्रदर्शन

आइशी की तकनीकें रासायनिक इनपुट को घटाने, पुनर्चक्रण को बढ़ावा देने और स्थानीय आजीविकाओं को सहारा देने में सहायक हैं। ये नवाचार ग्रामीण क्षेत्रों और स्कूल स्तर पर आसानी से लागू किए जा सकते हैं, जिससे उनकी उपयोगिता और प्रभावशीलता और बढ़ जाती है। उन्होंने राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी (दिल्ली) और राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस (अहमदाबाद) जैसे कई प्रतिष्ठित मंचों पर अपने नवाचार प्रस्तुत किए हैं। इससे पहले उन्हें वर्ष 2022 में इंस्पायर मानक राज्य पुरस्कार भी मिल चुका है, जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी में छात्र नवाचारों को प्रोत्साहित करता है। उन्हें इनोवेशन फेस्टिवल 2025 में 'दीनानाथ पांडे सिल्वर इनोवेटर अवार्ड' से भी नवाजा गया। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने राज्य व देश के युवाओं को प्रेरित करने का काम किया है।

स्पेस स्टार्टअप

'ऑन-डिमांड' लॉन्च होने लगेंगे छोटे सैटेलाइट्स

पवन कुमार चंदना
सीईओ व को-फाउंडर
स्काईरूट एयरोस्पेस

साल 2026 भारत के लिए स्पेस स्टार्टअप क्षेत्र में एक ऐतिहासिक मोड़ साबित होने वाला है, जहां भारतीय निजी स्पेस स्टार्टअप्स न केवल अपनी उपस्थिति दर्ज कराएंगे, बल्कि दुनिया के लिए अंतरिक्ष का द्वार भी खोलेंगे। स्पेस सेक्टर केवल रॉकेट भेजने तक सीमित नहीं रहा। इसमें तीन प्रमुख व्यावसायिक अवसर दिखाई दे रहे हैं :

लॉन्च: अंतरिक्ष तक पेलोड ले जाने की क्षमता।

स्पेस इंफ्रा: सैटेलाइट और निजी स्पेस स्टेशनों का निर्माण।

स्पेस इंटेलिजेंस: अंतरिक्ष से प्राप्त डेटा का विश्लेषण, जो खेती से लेकर आपदा प्रबंधन तक में काम आएगा।

2026 का बड़ा धमाकाः विक्रम-1 की लॉन्चिंग

'स्काईरूट एयरोस्पेस' ऑर्बिटल-क्लास रॉकेट 'विक्रम-1' श्रीहरिकोटा से लॉन्च करने की तैयारी में है। उद्देश्य छोटे सैटेलाइट्स के लिए 'ऑन-डिमांड' लॉन्च सेवा देना है। भारत की स्थिति ऐसी है कि यहां से 'लो अर्थ ऑर्बिट' में सैटेलाइट भेजना आसान है। 2033 तक भारत की निजी अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था को 44 बिलियन डॉलर तक पहुंचाना। भारत एक भरोसेमंद और सस्ता लॉन्च पैड बन जाएगा।

इसरो और निजी क्षेत्र का तालमेल: निजी क्षेत्र के आने से इसरो को बड़ी राहत मिलेगी। कमर्शियल लॉन्चिंग और छोटे सैटेलाइट्स का जिम्मा स्टार्टअप्स संभालेंगे, जिससे इसरो अपना पूरा ध्यान गहरे अंतरिक्ष मिशनों, गगनयान जैसे मानव मिशनों और स्वदेशी स्पेस स्टेशन बनाने पर लगा पाएगा।

वेनेजुएला ने कहा–हम अमेरिकी फौज के आगे आत्मसमर्पण नहीं करेंगे

● वेनेजुएला ने अमेरिका पर सैन्य आक्रामकता और संप्रभुता के उल्लंघन का आरोप लगाया

● दुनिया भर में अमेरिकी सैन्य कार्रवाई की निंदा, संयुक्त राष्ट्र चार्टर के उल्लंघन का आरोप

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

वेनेजुएला सरकार ने अमेरिका पर सैन्य आक्रामकता का गंभीर आरोप लगाते हुए इसकी कड़ी निंदा की है। कहा, अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र चार्टर और वेनेजुएला की संप्रभुता का उल्लंघन किया है। यह कदम क्षेत्रीय शांति और स्थिरता के लिए खतरा है। रक्षा मंत्री व्लादिमीर पाद्रिनो ने कहा, हम न तो अमेरिका के आगे समर्पण करेंगे, न ही बातचीत करेंगे। उन्होंने जनता से एकजुट होकर विदेशी दखल के विरोध की अपील की।

व्लादिमीर पाद्रिनो

वेनेजुएला के संचार मंत्रालय की ओर से जारी बयान में कहा गया कि काराकस के साथ-साथ मिरांडा, अरागुआ और ला गुएरा राज्यों में नागरिक व सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया गया। इसे अंतरराष्ट्रीय कानून और संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुच्छेद एक और दो का खुला उल्लंघन बताया गया, जो देशों की संप्रभुता और बल प्रयोग पर रोक से जुड़े हैं। सरकार ने आरोप लगाया कि यह हमला वेनेजुएला के रणनीतिक संसाधनों- विशेष रूप से तेल और खनिजों- पर कब्जा करने और देश की राजनीतिक स्वतंत्रता को कमजोर करने के उद्देश्य से किया गया। बयान में सत्ता परिवर्तन की किसी भी कोशिश को खारिज करते हुए कहा गया कि वेनेजुएला ने दो शताब्दियों से अधिक समय तक संप्रभुता की रक्षा की है।

अमेरिका द्वारा वेनेजुएला पर सैन्य कार्रवाई के बाद काराकस में एक सुपरमार्केट में सामान खरीदने के लिए कतार में खड़े लोग। रायटर

रूस ने कहा- मादुरो को तत्काल रिहा किया जाए : रूस ने अमेरिका की कार्रवाई की सबसे कड़ी आलोचना की। रूसी विदेश मंत्रालय ने इसे अवैध सशस्त्र हमला बताया और कहा कि इसे सही ठहराने वाला कोई औचित्य नहीं है। मंत्रालय ने कहा कि वैचारिक शत्रुता ने व्यावहारिक समझदारी को हरा दिया है। रूस ने वेनेजुएला के लोगों के प्रति अपनी एकजुटता जताई और यह भी बताया कि अमेरिकी हमले में रूसी नागरिकों को कोई चोट नहीं आई। रूस ने मादुरो को तत्काल रिहा करने की मांग की है।

ईरान बोला- अमेरिकी सैन्य हमला अस्वीकार्य : ईरान ने भी अमेरिका के हमले की कड़ी निंदा की और कहा कि यह वेनेजुएला की राष्ट्रीय संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का उल्लंघन है। ईरानी विदेश मंत्रालय ने कहा कि अमेरिकी सैन्य हमला वेनेजुएला पर पूरी तरह अस्वीकार्य है।

चीन ने कहा- अमेरिकी कार्रवाई से झटका : चीन ने कहा कि वह अमेरिका द्वारा एक संप्रभु देश और उसके राष्ट्रपति के खिलाफ बल प्रयोग से बेहद हैरान है और इसकी निंदा करता है। चीन के विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि अमेरिका की ये कार्रवाई अंतरराष्ट्रीय कानून और वेनेजुएला की संप्रभुता का गंभीर उल्लंघन है। चीन ने कहा कि ऐसे कदम लैटिन अमेरिका और कैरेबियाई क्षेत्र की शांति और सुरक्षा के लिए खतरा है।

कोलंबिया ने बढ़ाई सीमा सुरक्षा : वेनेजुएला के पड़ोसी देश कोलंबिया ने सीमा पर सुरक्षा बढ़ा दी है। राष्ट्रपति गुस्तावो पेट्रो ने अमेरिका की कार्रवाई को लैटिन अमेरिका की संप्रभुता पर हमला बताया और चेतावनी दी कि इससे पड़ोसी देशों में मानवाधिकार और प्रवासन संकट बढ़ सकता है।

स्पेन ने मध्यस्थ बनने का प्रस्ताव रखा : स्पेन ने संकट के शांतिपूर्ण समाधान की पेशकश की है। स्पेन के विदेश मंत्रालय ने कहा कि सभी पक्षों को संयम और तनाव कम करने की आवश्यकता है। मंत्रालय ने यह भी कहा कि स्पेन इस संकट का शांतिपूर्ण और बातचीत के जरिए समाधान खोजने में मदद करने को तैयार है।

मेक्सिको सरकार ने हमले की कड़ी निंदा की : मेक्सिको सरकार ने इस हमले की कड़ी आलोचना की और कहा कि मौजूदा मतभेदों को सुलझाने के लिए संवाद और बातचीत ही एकमात्र वैध और प्रभावी माध्यम है। साथ ही क्षेत्र में शांति बनाए रखने और टकराव से बचने में योगदान देने के लिए मध्यस्थता का प्रस्ताव दिया।

ब्राजील ने हमलों को बताया खतरनाक मिसाल : ब्राजील के राष्ट्रपति लूला डी सिल्वा ने कहा, वेनेजुएला पर हमला और राष्ट्रपति को गिरफ्तार करने की अमेरिकी कार्रवाई अस्वीकार्य है। इस तरह की कार्रवाई से अंतरराष्ट्रीय समुदाय में नए तरह का खतरनाक मिसाल तैयार की जा रही है। अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन करके देशों पर हमला करना हिंसा, अराजकता और अस्थिरता वाली दुनिया की ओर पहला कदम है। यूरोपीय संघ ने भी कहा कि संयुक्त राष्ट्र चार्टर का सम्मान किया जाना चाहिए। संघ की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डर लेयेन ने कहा कि संकट की घड़ी में हम वेनेजुएला के लोगों के साथ हैं। देश में शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक बदलाव होना चाहिए।

अमेरिका ने 1989 में पनामा में की थी वेनेजुएला जैसी कार्रवाई

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली : वेनेजुएला पर अमेरिकी कार्रवाई की तुलना 1989 के पनामा आपरेशन 'जस्ट काज' से की जा रही है। आपरेशन 'जस्ट काज' पनामा पर अमेरिका की सैन्य कार्रवाई का कोडनेम था। इसका उद्देश्य पनामा के शासक, जनरल मैनुअल नोरिएगा को सत्ता से हटाना और मादक पदार्थों की तस्करी के आरोपों का सामना करने के लिए उसे अमेरिका प्रत्यर्पित करना था। उस समय जार्ज डब्ल्यू बुश अमेरिका के राष्ट्रपति थे। यह आपरेशन जनवरी 1990 के अंत में नोरिएगा के आत्मसमर्पण के साथ समाप्त हुआ। उसे अमेरिका ले जाया गया, जहां उस पर मुकदमा चला और 40 साल जेल की सजा सुनाई गई।

भारत ने वेनेजुएला में अपने नागरिकों को अत्यधिक सतर्कता बरतने को कहा

नई दिल्ली, प्रेट : भारत ने शनिवार रात अपने नागरिकों के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए कहा कि वह वेनेजुएला की यात्रा करने से बचें। विदेश मंत्रालय ने वेनेजुएला में मौजूद सभी भारतीयों से अत्यधिक सतर्कता बरतने व अपनी गतिविधियां सीमित करने को कहा है।

विदेश मंत्रालय ने कहा- "वेनेजुएला में हालिया घटनाक्रम के मद्देनजर भारतीय नागरिकों को वेनेजुएला की सभी गैर-आवश्यक यात्रा से बचने की सख्त सलाह दी जाती है। जो सभी भारतीय वेनेजुएला में किसी भी कारण से हैं, उन्हें अत्यधिक सतर्कता बरतने, अपनी गतिविधियों को सीमित करने और काराकस में भारतीय दूतावास के संपर्क में रहने की सलाह दी जाती है।" मंत्रालय ने भारतीयों से दूतावास से संपर्क करने का आग्रह किया है। वेनेजुएला में करीब 50 गैर-निवासी भारतीय, 30 भारतीय मूल के व्यक्ति हैं।

आपरेशन वेनेजुएला और निकोलस मादुरो की गिरफ्तारी पर अमेरिकी संसद में घमासान

वाशिंगटन, आइएएनएस: वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो की गिरफ्तारी के लिए की गई अमेरिकी सैन्य कार्रवाई पर अमेरिका में ही तीखा राजनीतिक विवाद खड़ा कर दिया है। कैपिटल हिल पर डेमोक्रेट और रिपब्लिकन इस मुद्दे पर आमने-सामने आ गए हैं। जहां रिपब्लिकन राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के फैसले का खुलकर समर्थन कर रहे हैं, वहीं डेमोक्रेट्स ने इसे असंवैधानिक बताते हुए अमेरिका को एक नए संघर्ष में झोंकने का खतरा बताया है। विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने मीडिया से कहा कि ये इस तरह का अभियान नहीं था कि कांग्रेस को जानकारी दी जाए और बाकायदा अनुमति लेकर कार्रवाई की जाए।

▸ डेमोक्रेट्स ने कार्रवाई को असंवैधानिक बताया, रिपब्लिकन बोले- यह अमेरिका की सुरक्षा के लिए निर्णायक कदम

अमेरिकी संसद। फाइल

हाउस इंटेलिजेंस कमेटी के वरिष्ठ डेमोक्रेट सदस्य जिम हाइम्स ने कहा कि किसी भी सैन्य बल प्रयोग के लिए कांग्रेस की अनुमति जरूरी थी। उनका दावा है कि संबंधित संसदीय समितियों को कार्रवाई के बाद ही सूचना दी गई। न्यू जर्सी के सीनेटर एंडी किम ने प्रशासन पर सांसदों को गुमराह करने का आरोप लगाया। कहा, यह कार्रवाई न तो मजबूत विदेश नीति को दर्शाती है और न ही अमेरिका की वैश्विक साख के लिए ठीक है। वहीं, रूबेन गैलेगो ने इसे "अवैध युद्ध" करार देते हुए कहा कि वेनेजुएला में युद्ध शुरू करना गलत है। इसके विपरीत, रिपब्लिकन नेताओं ने कार्रवाई को जायज ठहराया। सीनेट इंटेलिजेंस कमेटी के अध्यक्ष टाम काटन ने कहा कि गोपनीयता आवश्यक थी, ताकि अभियान लीक न हो। उन्होंने मादुरो की गिरफ्तारी की तुलना अमेरिका में अपराधियों की गिरफ्तारी से की।

अमेरिका के इस हमले के पीछे क्या? ड्रग्स तस्करी, तेल भंडार या अमेरिकी दादागीरी

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

▸ मादुरो ने कहा था, ड्रग्स के बहाने विशाल तेल भंडार पर कब्जे की साजिश

▸ ट्रंप ने कहा था, सत्ता छोड़कर विदेश चले जाएं मादुरो तो समझे जाएंगे स्मार्ट

प्रतीकात्मक

वेनेजुएला लंबे समय से अमेरिका के निशाने पर रहा है। कभी अमेरिका में ड्रग्स तस्करी को लेकर, तो कभी वामपंथी तानाशाही शासन को लेकर राष्ट्रपति निकोलस मादुरो अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के निशाने पर थे। कई महीनों से अमेरिका वेनेजुएला की घेराबंदी कर रहा था। ट्रंप चाह रहे थे कि मादुरो खुद ही देश छोड़कर चले जाएं। उन्होंने ये भी कहा था कि मादुरो अगर खुद सत्ता छोड़ देते हैं तो उनको स्मार्ट माना जाएगा। वेनेजुएला पर दबाव बनाने के क्रम में अमेरिकी आरोपों की फेहरिस्त बहुत लंबी रही है, लेकिन कभी भी वह अपने किसी भी आरोप के समर्थन में कोई मजबूत साक्ष्य नहीं दे सका जिससे विश्व बिरादरी उसके आरोपों पर भरोसा कर सके।

महज आरोपों की फेहरिस्त : अमेरिकी प्रशासन ने मादुरो पर अमेरिका में हजारों वेनेजुएलाई प्रवासियों के पहुंचने का भी आरोप लगाया है। माना जाता है कि 2013 के बाद से आर्थिक संकट और दमनकारी नीतियों के चलते 80 लाख नागरिक पलायन करके अमेरिका पहुंचे हैं। वर्ष 2013 में ही मादुरो कम्युनिस्ट शासन के तहत सत्ता में आए थे। ट्रंप ने मादुरो पर अमेरिका में खासतौर पर फेंटेनिल और कोकीन जैसे नशीले पदार्थों की तस्करी बढ़ने का भी आरोप लगाया है। वेनेजुएला के दो आपराधिक संगठनों, ट्रेन डी आरागुआ और कार्टेल डी लास सोल्स को विदेशी आतंकवादी संगठन भी घोषित किया गया है। ट्रंप ने आरोप लगाया है कि दूसरा संगठन खुद मादुरो के नेतृत्व में चलता है। मादुरो ने खुद को किसी कार्टेल का सरगना होने के आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए अमेरिका पर आरोप लगाया था कि वह "ड्रग्स के खिलाफ जंग" को बहाना बनाकर उन्हें सत्ता से हटाना और वेनेजुएला के विशाल तेल भंडार पर कब्जा करना चाहता है। विश्लेषकों का कहना है कि 'कार्टेल डी लास सोल्स' कोई संगठित नहीं, बल्कि एक ऐसा शब्द है, जिसका इस्तेमाल उन भ्रष्ट अधिकारियों के लिए किया जाता है, जिन्होंने कोकीन को वेनेजुएला के रास्ते आगे भेजने की

वेनेजुएला के आसपास था भारी सैन्य जमावड़ा

न्यूयार्क टाइम्स से

न्यूयार्क : वेनेजुएला पर हमले ऐसे समय में हुए हैं, जब अमेरिका ने क्षेत्र में बड़ा सैन्य जमावड़ा कर रखा है, जिसमें कैरिबियाई क्षेत्र में तैनात एक विमानवाहक पोत, युद्धपोत और अत्याधुनिक लड़ाकू विमान शामिल हैं। यूनाइटेड स्टेट्स सदर्न कमांड के मुताबिक 15 हजार सैनिक दिसंबर से क्षेत्र में तैनात हैं। अगस्त में ट्रंप ने पेंटागन के साथ एक गुप्त निर्देश पर हस्ताक्षर किए थे, जिसमें वेनेजुएला के ड्रग कार्टेल को निशाना बनाने की बात कही गई थी। ट्रंप ने वेनेजुएला के तेल पर नाकेबंदी की मांग की थी, मादुरो सरकार पर प्रतिबंधों को और कड़ा किया तथा प्रशांत महासागर और कैरेबियाई सागर में कथित रूप से ड्रग तस्करी में शामिल जहाजों पर 35 घातक हमले करवाए। इन हमलों में 100 से ज्यादा लोग मारे गए। अमेरिकी सैन्य जमावड़े में अमेरिकी सेना ने ट्रांसपोर्ट और कार्गो विमान भी लगा रखे थे। न्यूयार्क टाइम्स को मिले फ्लाइट ट्रैकिंग डाटा के मुताबिक भारी मालवाहक सी-17 विमानों का बड़े पैमाने पर सैनिकों और साजो-सामान ले जाने के लिए इस्तेमाल किया गया। इन विमानों ने केवल एक हफ्ते में अमेरिकी सैन्य अड्डों से प्यूर्टो रिको तक 16 बार उड़ान भरी। अक्टूबर से अमेरिकी सेना में एक नेवी एक्सपेडिशनरी स्ट्राइक ग्रुप शामिल है, जिसमें हजारों मरीन सैनिकों को ले जाने वाले एम्फीबियस युद्धपोत, साथ ही युद्धक विमान, अटैक हेलीकाप्टर और दूसरे एयरक्राफ्ट शामिल हैं। इस तैयारी के तहत नवंबर में एक पूरा एयरक्राफ्ट कैरियर स्ट्राइक ग्रुप भी आया, जिसमें यूएसएस गेराल्ड आर फोर्ड और कई डिस्ट्रायर वेनेजुएला के तटों से लगभग 100 नाटिकल मील दूर मंडरा रहे थे।

हाई स्कूल तक की पढ़ाई, बस ड्राइवर से नेता बने, फिर देश के सर्वोच्च पद तक पहुंचे मादुरो

निकोलस मादुरो का राजनीतिक सफर 40 साल पहले 1986 में शुरू हुआ था। 23 नवंबर 1962 को जन्मे मादुरो श्रमिक संगठन के नेता के बेटे हैं और राजनीति में आने से पहले बस ड्राइवर थे। राजनीति में आने से पहले उन्होंने क्यूबा की यात्रा की और वैचारिक ज्ञान प्राप्त किया। मादुरो ने सिर्फ हाई स्कूल तक की शिक्षा प्राप्त की है। 1992 में तत्कालीन सैन्य अधिकारी ह्यूगो शावेज के नेतृत्व में विफल तख्तापलट में हिस्सा लिया। इसी दौरान वह शावेज के करीबी बने। 1998 में शावेज के नेतृत्व में चुनाव लड़ा, फिर नेशनल असेंबली के अध्यक्ष और विदेश मंत्री बने। विदेश मंत्री रहते मादुरो ने वेनेजुएला के तेल कारोबार को पूरी दुनिया में फैलाया। शावेज ने निधन से पहले मादुरो को अपना उत्तराधिकारी चुना। 2013 में मादुरो ने चुनाव जीता और राष्ट्रपति बने। उनके शासनकाल में देश आर्थिक संकट में घिर गया और महंगाई चरम पर पहुंच गई। मादुरो के शासनकाल को चुनावी में धांधली, खाद्य संकट और अधिकारों के हनन के लिए जाना जाता है। उन्होंने 2014 व 2017 में सरकार विरोधी आंदोलनों को बेरहमी से कुचला। जनवरी 2025 में वह तीसरी बार राष्ट्रपति चुने गए। विपक्ष ने इन चुनावों को धोखाधड़ी बताया था। हजारों लोगों को जेल में डाल दिया गया था। विपक्षी नेता व नोबेल शांति पुरस्कार विजेता मारिया मचाडो ने सरकार की दमनात्मक नीतियों को दुनिया के सामने रखा था।

वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो की फाइल फोटो। एएफपी

विपक्षी नेता मचाडो ने कहा, गोंजालेज संभालें वेनेजुएला की सत्ता

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

▸ सुरक्षा कारणों से नोबेल शांति पुरस्कार विजेता मचाडो एक अन्य देश में छिपकर रह रही हैं

वेनेजुएला में अमेरिकी आपरेशन के बाद नोबेल पुरस्कार विजेता एक्टिविस्ट मारिया कोरिना मचाडो का नाम चर्चा में है। मचाडो वेनेजुएला की सबसे प्रमुख विपक्षी नेता हैं। वह लिबरल नेता हैं और लंबे समय से ह्यूगो शावेज व निकोलस मादुरो की सरकारों के खिलाफ लोकतंत्र और स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ रही हैं। वह ट्रंप की वेनेजुएला नीति का पूरी तरह समर्थन भी करती हैं और निजीकरण व अमेरिकी निवेश की बात करती हैं। हालांकि, डोनाल्ड ट्रंप ने इस बारे में साफ-साफ कुछ नहीं कहा। वहीं, वेनेजुएला की उपराष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिग्ज फिलहाल रूस में हैं।

बता दें कि मादुरो को सत्ता से बेदखल करने के बाद मचाडो को कमान दी जा सकती है। हालांकि, मचाडो ने अपनी पार्टी के एक अन्य नेता एडमुंडो गोंजालेज का नाम आगे बढ़ाया है। बता दें कि मादुरो के दमनात्मक रवैये के चलते मचाडो दूसरे देश में छिपकर रह रही हैं। उन्हें साल 2025 के नोबेल शांति पुरस्कार के लिए चुना गया था। सुरक्षा कारणों से उनकी बेटी ने ये पुरस्कार ग्रहण किया था।

मारिया कोरिना मचाडो

नए राष्ट्रपति के तौर पर मचाडो अमेरिका की पसंद, हालांकि ट्रंप ने साफ कुछ नहीं कहा

वेनेजुएला में दुर्लभ धातु खनन में निवेश की भारत की मंशा पर ब्रेक

जयप्रकाश रंजन, जागरण

▸ नवंबर, 2025 में भारत-वेनेजुएला के विदेश मंत्रालयों की बैठक में हुई थी चर्चा

▸ वेनेजुएला ने किया था क्रिटिकल मिनिरल्स में भारतीय निवेश का स्वागत

नई दिल्ली: वेनेजुएला पर अमेरिकी का हमले ने इस दक्षिणी अमेरिकी देश में क्रिटिकल मिनिरल्स क्षेत्र में निवेश करने की भारत की मंशा पर ब्रेक लगा दिया है। दरअसल 26 नवंबर, 2025 को ही दोनों देशों के विदेश मंत्रालयों के बीच हुई बैठक में दुर्लभ धातुओं के क्षेत्र में भारतीय निवेश एक अहम मुद्दा था। उस बैठक की सह-अध्यक्षता भारतीय विदेश मंत्रालय के सचिव (पूर्व) पी. कुमारन व वेनेजुएला की विदेश उपमंत्री तातियाना जोसेफिना पुग मोरेनो ने की थी।

वेनेजुएला खासतौर पर इस बात के लिए उत्साहित था कि भारतीय कंपनियां जैसी अर्जेंटीना में दुर्लभ धातुओं की खोज में निवेश कर रही हैं वैसा ही उनकी कंपनियों के साथ मिलकर करें। अमेरिका का वेनेजुएला पर हमले के पीछे इन्हीं दुर्लभ धातुओं को एक बड़ा कारण बताया जा रहा है।

भारत का वेनेजुएला के साथ संबंध हमेशा से ही सौहार्दपूर्ण रहा है। जब से अमेरिका ने वेनेजुएला पर प्रतिबंध लगाना शुरू किया है तब से भारत के साथ उसके संबंध प्रभावित हुए हैं। अमेरिका ने वर्ष 2019 में पहली बार वेनेजुएला पर प्रतिबंध लगाए पर उस समय यह भारत को कच्चे तेल की आपूर्ति करने वाला प्रमुख देश था। वर्ष 2010-19 तक भारत के कुल तेल आयात का 10 प्रतिशत वेनेजुएला से आता था। वेनेजुएला में हेवी क्रूड की अधिकता है जो भारत की पुरानी रिफाइनरियों के लिए उपयुक्त हैं। वर्ष 2020 के बाद भारत ने वेनेजुएला से तेल खरीदना बंद कर दिया। 2023 में अमेरिका ने वेनेजुएला को कुछ अस्थाई ढील दी थी तब भारतीय रिफाइनरियों (खासतौर पर रिलायंस पेट्रोलियम) ने फिर से तेल खरीदना शुरू कर दिया था। लेकिन मार्च, 2025 में ट्रंप ने नए सिरे से प्रतिबंध लगाना शुरू कर दिया। उसके बाद भारत ने कोई तेल नहीं खरीदा।

दोनों देशों के बीच कारोबारी संबंध ऊर्जा पर ही केंद्रित रहे हैं। भारत दौरे पर आने वाले वेनेजुएला के एकमात्र राष्ट्रपति ह्यूगो शावेज (वर्ष 2005) ने दोनों देशों के बीच 'आयल डिप्लोमेसी' की नींव रखी थी। वेनेजुएला से आपूर्ति शुरू होने के बाद भारत की निर्भरता इराक, सऊदी अरब, यूएई, ईरान जैसे देशों पर कम हुई। उल्लेखनीय है कि वेनेजुएला की कार्यकारी उपराष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिग्ज ने फरवरी 2025 में भारत एनर्जी वीक में भाग लिया था और सरकारी व निजी तेल कंपनियों के साथ मुलाकात की थी।

एक सरकारी तेल कंपनी के एक अधिकारी के मुताबिक, ' वेनेजुएला की सरकार बहुत ही आकर्षक कीमत पर तेल भारत को देने को तत्पर रही है पर अमेरिकी प्रतिबंधों की वजह से हमारे लिए सौदा करना आसान नहीं था।'

वेनेजुएला के पास क्रिटिकल मिनरल्स के भी बड़े भंडार

वेनेजुएला के पास दुनिया के सबसे बड़े तेल भंडार के अलावा ओरिनोको माइनिंग आर्क क्षेत्र में कोल्टन (टैंटलम/नियोबियम), रेयर अर्थ एलिमेंट्स (आरईई), लिथियम, निकल, कोबाल्ट, गोल्ड और बाक्साइट जैसे क्रिटिकल मिनरल्स के बड़े भंडार हैं। ये इलेक्ट्रानिक्स, इलेक्ट्रिक व्हीकल्स, बैटरी, हथियार व रिन्यूएबल एनर्जी के लिए जरूरी हैं। चीन से संबंध के बावजूद वेनेजुएला ने इनके भंडार पर उसका प्रभुत्व नहीं होने दिया है। ऐसे में भारत को यहां संभावनाएं दिख रही थीं।

विदेश नीति शक्ति केंद्रों में फंसी दुनिया, भारत ने संतुलन साधा

कूटनीति... भारत किसी ग्रुप का हिस्सा नहीं, इसलिए हम सबसे मजबूत स्थिति में

वीना सीकरी,
वरिष्ठ राजनयिक, बांग्लादेश में भारतीय उच्चायुक्त रह चुकीं

वर्ल्ड ऑर्डर 2026 में और भी जटिल रहने वाला है। बहुध्रुवीय शक्ति केंद्रों में फंसी दुनिया में भारत ने संतुलन को बखूबी साधा है। यूक्रेन हो या फिर गाजा युद्ध भारत की बात सभी पक्ष सुनते हैं। हमारी विदेश नीति का मंत्र है किसी भी ग्रुप के साथ रहने के बजाय सभी देशों के साथ, जिससे हमारे हितों का संरक्षण हो। इसी का नतीजा है कि भारत इस साल दुनिया में सबसे मजबूत पोजीशन में रहने वाला है। बहुध्रुवीय दुनिया में हर देश के साथ अलग-अलग तालमेल। इसका आधार हमारी मजबूत इकोनॉमी है। इस साल कई बड़े देशों के साथ भारत के फ्री टेड एग्रीमेंट पाइपलाइन में हैं। पड़ोस में पाकिस्तान और बांग्लादेश हमारी चिंता के क्षेत्र हैं। लेकिन ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत को दुनिया भर से सपोर्ट मिला है। भारत की मिलिट्री पावर से हमने दुनिया को मजबूती दिखाई है। बांग्लादेश अभी बड़े बदलाव से गुजर रहा है, लेकिन वहां चुनाव के बाद लीडरशिप को समझ में आ जाएगा कि बांग्लादेश के हित भारत से जुड़े हैं। दोनों देशों के रिश्ते सामान्य होने की उम्मीद है।

3 सुपरपावर... जिन्हें हमारी पावर बैलेंस करेगी

अमेरिका; ट्रेड डील होनी तय, डिफेंस और टेक्नोलॉजी सेक्टर में नए करार

अमेरिका के साथ इस साल ट्रेड डील होनी लगभग तय है। इसका बड़ा कारण है अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा थोपे 50% टैरिफ के बावजूद भारतीय इकोनॉमी 7% की अधिक दर से बढ़ रही है। निर्यात भी बढ़ रहा है। इस साल की पहली तिमाही में ट्रेड डील हो सकती है। डिफेंस के सेक्टर में 10 साल के फ्रेमवर्क पर करार हो चुका है। काउंटर ड्रोन सिस्टम भी मिलेंगे।

- सेमीकंडक्टर, एआई, क्वांटम कंप्यूटिंग और साइबर सुरक्षा में तकनीक ट्रांसफर होगा। स्पेस प्रोग्राम बड़ा गेमचेंजर साबित होगा। नासा और इसरो मिलकर स्पेस प्रोजेक्ट्स पर काम करेंगे।

चीन; हमारी इकोनॉमी के बूते सुरक्षा मुद्दे सुलझे, ग्लोबल साउथ में नई ऊर्जा

चीन के साथ हमारे सुरक्षा से जुड़े कई मुद्दे सुलझे हैं। विवादों के सुलझने से ग्लोबल साउथ में नई ऊर्जा का संचार हुआ है। भारत और चीन विकासशील देशों की मुखर आवाज बनेंगे। चीन हमारी इकोनॉमी को किसी भी सूरत में नजरअंदाज नहीं कर सकता है। हमारा बड़ा मार्केट और मिडिल क्लास चीन के सामने एक बड़ी मजबूत प्रतिरोधी दीवार के समान काम करता है।

- भारत-चीन ब्रिक्स की सबसे बड़ी इकोनॉमी हैं। डॉलर के प्रभुत्व को चैलेंज कर सकते हैं। ट्रम्प टैरिफ को यदि लंबे समय तक हथियार बनाते हैं तो इस साल भारत और चीन अमेरिका की आर्थिक घेराबंदी कर सकते हैं।

रूस; एनर्जी ट्रेड जारी रहेगा, भारत की वैश्विक ताकत से रूस को फायदा

अमेरिका के दबाव के बावजूद भारत और रूस के बीच एनर्जी ट्रेड जारी रहेगा। इसके वॉल्यूम में उतार-चढ़ाव आता रहेगा, लेकिन ये खत्म नहीं होने वाला है। रूस के साथ हमारा ऑयल बास्केट इस साल और बढ़ सकता है। भारत और रूस की दोस्ती का आधार बरसों से डिफेंस डील रहे हैं, लेकिन अब हमने इसे और इसका विस्तार किया है। भारत की वैश्विक ताकत में रूस भी अपना फायदा देख रहा है। भारत की दुनिया में स्वीकार्यता मेनस्ट्रीम से अलग रूस के लिए लाभकारी साबित होती है। रूस ये तथ्य जानता है।

नेशनल मैन्यूफैक्चरिंग मिशन की शुरुआत जल्द

राज्यों के मुख्य सचिवों के साथ बैठक में प्रधानमंत्री ने दिए संकेत, तैयारी शुरू करने को कहा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: एक्सपोर्ट प्रमोशन मिशन को लागू करने के बाद सरकार जल्द ही नेशनल मैन्यूफैक्चरिंग मिशन के अमल को लेकर घोषणा करने जा रही है। पिछले सप्ताह सभी राज्यों के मुख्य सचिवों के साथ बैठक में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इसके संकेत दिए। चालू वित्त वर्ष 2025-26 के बजट में आत्मनिर्भर भारत और जीडीपी में मैन्यूफैक्चरिंग की हिस्सेदारी को 25 प्रतिशत तक ले जाने के लिए नेशनल मैन्यूफैक्चरिंग मिशन की घोषणा की गई थी, लेकिन अब तक इस मिशन की विस्तृत गाइडलाइंस या इस मिशन को आगे बढ़ाने को लेकर कोई ऐलान नहीं किया गया है। हालांकि, नीति आयोग ने पिछले साल नवंबर में ही मैन्यूफैक्चरिंग मिशन के लागू होने की बात कही थी।

मैन्यूफैक्चरिंग मिशन के अमल को ध्यान में रखते हुए सभी राज्यों को इसके हिसाब से तैयारी करने के लिए कहा गया है ताकि वे अपने यहां वैश्विक निवेश को आकर्षित कर सकें। नेशनल मैन्यूफैक्चरिंग मिशन के तहत इसके रास्ते में आने वाली बड़ी बाधाओं को दूर करने के उपाय किए जाएंगे। मुख्य रूप से जमीन की अनुपलब्धता, बड़ी संख्या में कुशल कारीगरों की कमी, अपर्याप्त लाजिस्टिक्स जैसी कमियों को दूर करने की कोशिश की जाएगी।

देश के हर भाग में मैन्यूफैक्चरिंग से जुड़े निवेश लाने की कोशिश होगी, ताकि मैन्यूफैक्चरिंग के मामले में एक संतुलित विकास हो सके। देश को पांच क्षेत्र में बांट कर ऐसे क्लस्टर का निर्माण किया जाएगा, जहां नए उद्यमियों को निर्माण से जुड़ी सभी सुविधाएं मिलेंगी।

अभी विभिन्न प्रकार की बाधा और जमीन की कमी की वजह से मैन्यूफैक्चरिंग में नए उद्यमी काफी कम संख्या में आ रहे हैं। मैन्यूफैक्चरिंग क्षेत्र में स्टार्टअप की भी भारी कमी है। पिछले दस सालों से जीडीपी में मैन्यूफैक्चरिंग की हिस्सेदारी 15-17 प्रतिशत के बीच चल रही है। वर्ष 2047 तक विकसित देश बनने के लिए जीडीपी विकास दर को लगातार 8-9 प्रतिशत रखना होगा।

- 2025-26 के केंद्रीय बजट में की गई थी इस मिशन की घोषणा
- अभी तक इस मिशन की विस्तृत गाइडलाइंस जारी नहीं हुई

15-17 प्रतिशत है अभी जीडीपी में मैन्यूफैक्चरिंग की हिस्सेदारी

25 प्रतिशत है जीडीपी में मैन्यूफैक्चरिंग की हिस्सेदारी करने का लक्ष्य

8-9 प्रतिशत विकास दर जरूरी है 2047 तक विकसित भारत के लिए

मशीनरी निर्माण पर दिया जा सकता है विशेष ध्यान

सूत्रों का कहना है कि मैन्यूफैक्चरिंग मिशन का मुख्य उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था को कृषि प्रधान की जगह मैन्यूफैक्चरिंग प्रधान बनाना है। मिशन के तहत रोजगारपरक सेक्टर के साथ हाई-टेक मैन्यूफैक्चरिंग को तरजीह देने की स्कीम बनाई जाएगी। अभी भारत मशीनरी के लिए मुख्य रूप से आयात पर ही निर्भर करता है। मैन्यूफैक्चरिंग मिशन के तहत मशीनरी के निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जा सकता है। विदेश में जाकर मैन्यूफैक्चरिंग शुरू करने को लेकर भी सरकारी समर्थन मिल सकता है। दुनिया के कई देशों में कुशल श्रमिकों की कमी को देखते हुए मैन्यूफैक्चरिंग यूनिट बंद की जा रही है। इसलिए भारत के पास उन देशों में भी मैन्यूफैक्चरिंग शुरू करने या फिर सामान बेचने का बड़ा मौका है।

Dainik Jagaran Page -10

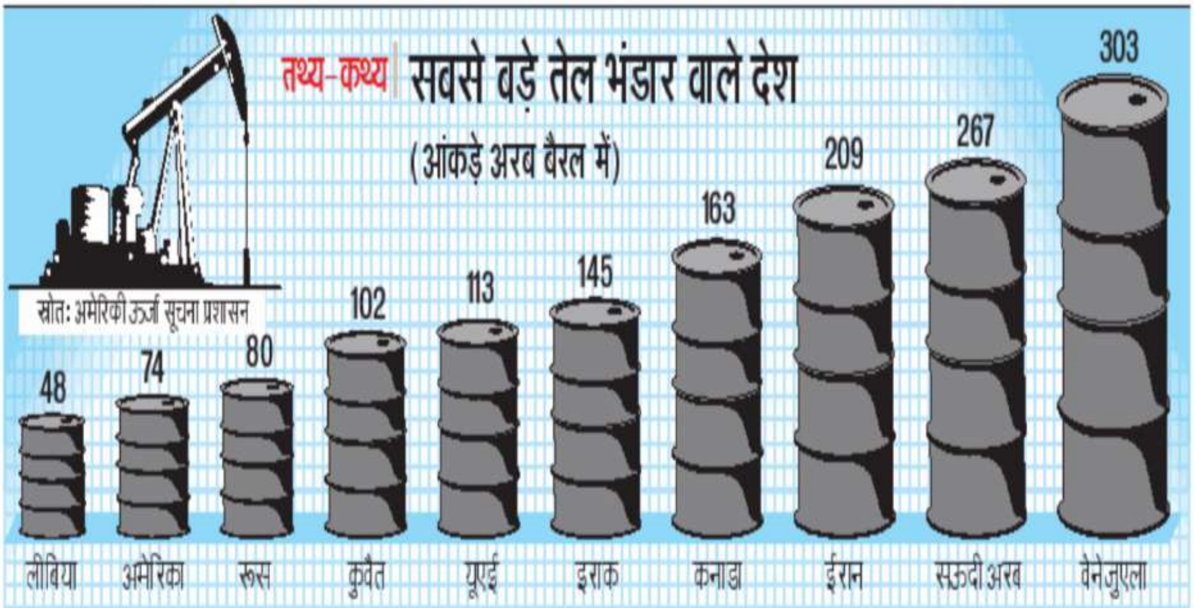

Dainik Jagaran Page -8

संदेश | प्रधानमंत्री बोले, सौभाग्य की बात है कि वर्ष 2026 का पहला सार्वजनिक कार्यक्रम भगवान बुद्ध के चरणों से शुरू हो रहा

बुद्ध के पवित्र अवशेष भारत की विरासत का अटूट हिस्सा

गौरव

नई दिल्ली/सिद्धार्थनगर, हिब्यू/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भगवान बुद्ध सभी के हैं और वे सबको एकजुट करते हैं। उन्होंने कहा कि बुद्ध के अवशेष भारत की पूजनीय विरासत का हिस्सा हैं।

प्रधानमंत्री मोदी शनिवार को दिल्ली के किला राय पिथौरा कल्चरल कॉम्प्लेक्स में 'द लाइट एंड द लोटसः रेलिक्स ऑफ द अवेकन्ड वन' प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। प्रदर्शनी में साल 1898 में मिले पवित्र 'पिपरहवा अवशेषों' (भगवान बुद्ध से जुड़ी धरोहरों) को रखा गया है। भारत न केवल भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेषों का संरक्षक है, बल्कि उनकी परंपरा का जीवित वाहक भी है। वर्ष 2026 की शुरुआत में ही यह आयोजन उनके लिए बहुत प्रेरणादायी है। यह उनका 2026 का पहला सार्वजनिक कार्यक्रम है और सौभाग्य की बात है कि यह भगवान बुद्ध के चरणों से शुरू हो रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्होंने दुनिया भर के बौद्ध तीर्थ स्थलों पर बोधि वृक्ष के पौधे ले जाने का खास ध्यान रखा। कहा, 'कोई कल्पना कर सकता है कि जब परमाणु बम से तबाह हिरोशिमा के बॉटनिकल गार्डन में एक बोधि वृक्ष खड़ा होता है, तो मानवता के लिए यह कितना गहरा संदेश है।' मोदी ने कहा कि उनका जन्मस्थान वडनगर सदियों पहले बौद्ध अध्ययन का एक प्रमुख केंद्र था। वहीं, वाराणसी के पास सारनाथ में भगवान बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था। यह उनकी कर्मभूमि है, क्योंकि वह वाराणसी का प्रतिनिधित्व करते हैं।

बुद्धभूमि को इंतजारः बुद्ध के पवित्र अवशेषों की 127 वर्षों बाद स्वदेश वापसी और दिल्ली में लगी प्रदर्शनी का शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों उद्घाटन से पिपरहवा (कपिलवस्तु) की विरासत ने सिद्धार्थनगर जिले को गौरवान्वित किया है। अस्थि-अवशेषों और ऐतिहासिक साक्ष्यों के दर्शन के साथ ही अब यह आवाज भी बुलंद होने लगी है कि अवशेष रत्नों को उनकी मूल भूमि पिपरहवा में स्थापित किया जाए।

128 साल बाद भारत लौटे हैं अहम अवशेष

प्रधानमंत्री ने बताया कि 1898 में खोजे गए भगवान बुद्ध के ये अवशेष 128 वर्ष बाद भारत लौटे हैं। बताया कि मई 2025 में हांगकांग में इनकी नीलामी हो रही थी। केंद्र सरकार और गोदरेज ग्रुप के हस्तक्षेप के बाद इनकी नीलामी होने से रोका गया। इसके लिए कई कानूनी नोटिस जारी किए गए। इसके बाद करीब दो माह तक केंद्र ने इन अवशेषों को हांगकांग से भारत लाने के लिए काम किया।

नई दिल्ली में शनिवार को 'द लाइट एंड द लोटसः रेलिक्स ऑफ द अवेकन्ड वन' प्रदर्शनी के उद्घाटन के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। • प्रेट्र

Hindustan Page -13

125 साल बाद गौतम बुद्ध के अवशेष भारत लाए गए : मोदी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शनिवार को नई दिल्ली में बुद्ध से जुड़े पवित्र रत्नों और अवशेषों की एक प्रदर्शनी का मुआयना करते हुए। प्रेट्र

नई दिल्ली, प्रेट्र : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को बुद्ध से जुड़े पवित्र रत्नों और अवशेषों की एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया और कहा कि ये महज कलाकृतियां नहीं, बल्कि भारत की पूजनीय विरासत का हिस्सा हैं। दक्षिण दिल्ली के किला राय पिथौरा सांस्कृतिक परिसर में प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए मोदी ने याद दिलाया कि केंद्र सरकार और गोदरेज समूह के हस्तक्षेप से ये पवित्र अवशेष 125 वर्षों से अधिक समय बाद भारत लौटे हैं। बताते चलें, इन दोनों ने मिलकर पिछले साल मई में हांगकांग में इनकी नीलामी होने से रोका था। 1898 में उत्तर प्रदेश के पिपरहवा में खोदाई के दौरान भगवान बुद्ध के ये प्राचीन अवशेष मिले थे।

- **कहा–इन्हें ले जाने वालों के ये प्राचीन वस्तुएं थीं हमारे लिए सभ्यता का अंग**
- **उप्र के पिपरहवा में मिले थे बुद्ध के अवशेष, दिल्ली में प्रदर्शनी का उद्घाटन**

आइएएनएस के अनुसार, मोदी ने कहा कि जो लोग इन अवशेषों को लेकर गए, उनके लिए ये मात्र निर्जीव प्राचीन वस्तुएं थीं। इसलिए उन्होंने इन पवित्र अवशेषों को नीलाम करने की कोशिश की। लेकिन भारत के लिए ये पवित्र अवशेष हमारी सभ्यता का अभिन्न अंग हैं। इसलिए भारत ने संकल्प लिया कि हम इनकी सार्वजनिक नीलामी की अनुमति नहीं देंगे।

Dainik Jagaran Page -3

राजनीति | प. बंगाल, तमिलनाडु, केरल, असम, पुडुचेरी में मई से पहले चुनाव, एनडीए-विपक्ष के संगठन, नेतृत्व और रणनीति की जोर आजमाइश

2026 का संग्राम; क्षेत्रीय दलों की अग्नि परीक्षा

संजय कुमार
चुनाव विश्लेषक और
निदेशक, सीएसडीएस

भारत में हर साल किसी न किसी राज्य में विधानसभा चुनाव होते रहते हैं, क्योंकि अलग-अलग राज्यों/केंद्र शासित क्षेत्र में चुनावों का चक्र अलग होता है। वर्ष 2026 भी इससे अलग नहीं होगा। इस साल अप्रैल-मई में देश के पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं। ये राज्य हैं- पूर्वी भारत में असम और पश्चिम बंगाल तथा दक्षिण भारत में तमिलनाडु, केरल और पुडुचेरी। इन राज्यों में होने वाले चुनावों में राष्ट्रीय और क्षेत्रीय राजनीतिक दल मुख्य भूमिका में होंगे। ये चुनाव एक बार फिर राजनीतिक दलों के जनाधार, संगठनात्मक ताकत, चुनावी रणनीति और नेतृत्व क्षमता की परीक्षा लेंगे, क्योंकि भारतीय चुनावों में यही सफलता के सबसे अहम कारक होते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि शासन और कल्याणकारी राजनीति भी मायने रखती है, लेकिन किसी भी पार्टी की चुनावी जीत की असली नींव संगठन और नेतृत्व ही होते हैं।

इस समय यह कहना बेहद मुश्किल है कि किसी भी राज्य में कौन-सी पार्टी को बढ़त हासिल है। मगर रणनीतिक कारणों से दांव बहुत ऊंचे हैं- खासतौर पर दो बड़े राष्ट्रीय दलों भाजपा और कांग्रेस, वाम मोर्चा और क्षेत्रीय दलों जैसे तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी), डीएमके और एआईएडीएमके के लिए। कई अन्य क्षेत्रीय दल भी अपनी ताकत आजमाएंगे, लेकिन इनमें से ज्यादातर दल अपने राज्यों में प्रभावशाली या बड़ी पार्टियों के साथ गठबंधन में लड़ने की संभावना रखते हैं।

कांग्रेस और इंडिया गठबंधन का भविष्य: इंडिया गठबंधन का भविष्य काफी हद तक इस बात पर निर्भर करेगा कि 2026 में चुनाव लड़ने वाले राज्यों में कांग्रेस और क्षेत्रीय दल कैसा प्रदर्शन करते हैं। असम कांग्रेस के लिए बेहद अहम है, जहां वह पिछले 10 वर्षों से सत्ता से बाहर है। एक और हार कांग्रेस के लिए गंभीर चुनौती बन सकती है। केरल में भी कांग्रेस के सामने बड़ी परीक्षा है। सत्ता परिवर्तन की परंपरा के बावजूद कांग्रेस 2021 में जीत नहीं पाई थी। इस बार पार्टी पर दबाव और ज्यादा है। 'इंडिया' के लिए पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु बेहद अहम हैं। यदि ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली टीएमसी और डीएमके सत्ता में बनी रहती हैं, तो गठबंधन मजबूत रहेगा। कांग्रेस के भीतर राहुल गांधी के नेतृत्व पर भी 2026 के चुनावों का असर पड़ेगा।

भाजपाध्यक्ष का टेस्ट: भाजपा में नए कार्यकारी अध्यक्ष नितिन नवीन की भी परीक्षा होगी। अगर भाजपा असम, बंगाल या केरल में अच्छा प्रदर्शन करती है, तो उनका कद बढ़ेगा। असम में जीत से सीएम हिमंत बिस्वा सरमा के लिए राष्ट्रीय भूमिका का रास्ता भी खुल सकता है। कुल मिलाकर, चुनावी दृष्टि से 2026 एक बेहद दिलचस्प साल होने जा रहा है।

वो सबकुछ, जो आपके लिए जानना जरूरी है

सियासी समीकरण; बंगाल में ममता व असम में हिमंता का किला मजबूत, तमिलनाडु में 'थर्ड पार्टी' का ट्विस्ट

प. बंगाल: 'सत्ता विरोधी' भावना से भाजपा को बड़ी आस

टीएमसी सरकार बचाने की कोशिश करेगी, जबकि भाजपा पूरी ताकत से ममता बनर्जी को सत्ता से हटाने का प्रयास करेगी। टीएमसी पिछले 15 वर्षों से सत्ता में है, इसलिए कुछ हद तक सत्ता-विरोधी भावना और असंतोष की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। महिलाओं के खिलाफ हिंसा की घटनाएं, शिक्षकों की भर्ती से जुड़े विवाद और हाल ही में मशहूर फुटबॉलर मेसी के दौरे के दौरान हुई अव्यवस्था जैसी घटनाओं ने टीएमसी और खासकर ममता की छवि को कुछ नुकसान पहुंचाया है। सवाल यह है कि क्या ये मुद्दे अब अतीत बन चुके हैं या भाजपा इन्हें चुनावी मुद्दा बना पाएगी।

प्रभावी फैक्टर: 2021 विधानसभा चुनाव में भाजपा ने 77 सीटें व 38.1% वोट हासिल कर मुख्य विपक्षी दल के रूप में खुद को स्थापित किया। कांग्रेस और वाम मोर्चा सिंगल डिजिट वोट शेयर पर सिमट गए। भाजपा की यह बड़ी उपलब्धि रही कि उसने कांग्रेस और वाम दलों को काफी पीछे छोड़ दिया।

तमिलनाडु: एक्टर विजय की पार्टी हो सकती है गेम चेंजर

तमिलनाडु में डीएमके और एआईएडीएमके के बीच ही सीधा मुकाबला रहा है। लेकिन अब अभिनेता विजय द्वारा शुरू की गई नई पार्टी तमिलगा वेत्री कड़गम (टीवीके) ने राजनीतिक समीकरणों को नया मोड़ दिया है। विजय ने साफ किया है कि उनकी पार्टी 2026 का विधानसभा चुनाव लड़ेगी। अपनी पहली बड़ी पार्टी कॉन्फ्रेंस में उन्होंने भाजपा को वैचारिक दुश्मन और डीएमके को राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी कहा। हालांकि उनकी रैली में भारी भीड़ जुटी, लेकिन यह जरूरी नहीं कि यह भीड़ वोट में बदले। बिहार में जन सुराज का उदाहरण सामने है, जहां बड़ी रैलियों के बावजूद पार्टी को सिर्फ 3.3 प्रतिशत वोट मिले।

प्रभावी फैक्टर: डीएमके और कांग्रेस एक बार फिर गठबंधन में चुनाव लड़ने का एलान कर चुकी हैं। बीजेपी और एआईएडीएमके गठबंधन को लेकर अन्नामलाई अहम कड़ी बने हुए हैं। बड़े मुद्दों की बात की जाए तो यहां हिंदी-तमिल भाषा विवाद, एसआईआर और एंटी इन्कंबेंसी निर्णायक हो सकते हैं।

असम: दोनों दलों के वोट शेयर में अंतर काफी कम है

भाजपा यहां अपनी सरकार बचाने की कोशिश करेगी। 2021 में भाजपा और उसके सहयोगियों ने 75 सीटें जीती थीं (जिसमें 60 सीटें भाजपा के खाते में गई थीं) और पार्टी ने 43.9% वोट हासिल किए थे। वहीं, इंडिया गठबंधन (जिसे असम में महाजोत कहा गया) ने 50 सीटें जीती थीं और 42.3% वोट पाए थे। यह ध्यान देने वाली बात है कि सीटों के लिहाज से दोनों गठबंधनों में बड़ा अंतर था, लेकिन वोट शेयर का फर्क सिर्फ 1.6% था। समर्थन आधार में थोड़ा सा भी बदलाव एनडीए के सत्ता समीकरणों को बिगाड़ सकता है, हालांकि राज्य में मौजूदा जनभावना को देखते हुए यह बिल्कुल भी आसान नहीं होगा।

प्रभावी फैक्टर: असम में चुनावी सफलता की कुंजी सिर्फ लोकप्रियता नहीं, बल्कि यह भी होगी कि कांग्रेस और भाजपा छोटे क्षेत्रीय दलों (खासतौर पर जनजातीय, जातीय और समुदाय आधारित दलों) के साथ गठबंधन कितनी सफलतापूर्वक कर पाती हैं। सीएम हिमंत बिस्वा सरमा की भी परीक्षा होगी।

केरल: पिछला चुनाव छोड़ दें तो सत्ता परिवर्तन का ट्रेंड है

केरल में एलडीएफ और यूडीएफ के बीच द्विध्रुवीय मुकाबला रहा है और हर चुनाव में सत्ता बदलती रही है। 2021 का चुनाव अपवाद रहा, जब एलडीएफ लगातार दूसरी बार सत्ता में लौटा। भाजपा केरल में लगातार विस्तार की कोशिश कर रही है। 2024 के लोकसभा चुनाव में उसने त्रिशूर सीट जीतकर राज्य में खाता खोला। हाल के स्थानीय निकाय चुनाव में तिरुवनंतपुरम नगर निगम की 101 सीटों में भाजपा ने 50 सीटें जीतीं और सिर्फ एक सीट से बहुमत से चूक गई। हालांकि एक निर्दलीय के समर्थन के बाद भाजपा को बहुमत मिल गया था। अब इसे राज्यव्यापी समर्थन का संकेत समझें या सिर्फ स्थानीय प्रभाव।

प्रभावी फैक्टर: 2019 व 2024 के लोकसभा चुनाव, 2021 का विधानसभा चुनाव और हालिया स्थानीय चुनाव दिखाते हैं कि केरल में भाजपा का आधार बढ़ रहा है। 2026 में भाजपा एक अहम खिलाड़ी होगी। भाजपा को यहां आरएसएस की मजबूत हो रही जमीनी पकड़ का भी फायदा मिल सकता है।

पुडुचेरी: हर सीट पर मतदाताओं की संख्या कम है, हार-जीत का अंतर ज्यादा नहीं होता... इसलिए सत्ता समीकरण जटिल

30 सदस्यीय विधानसभा वाले छोटे राज्य पुडुचेरी में चुनाव हमेशा से जटिल रहे हैं। यहां हर विधानसभा सीट में मतदाताओं की संख्या कम होती है और हार-जीत बहुत छोटे अंतर से तय होती है। अक्सर किसी भी दल या गठबंधन को बड़ा बहुमत नहीं मिल पाता। एनडीए (भाजपा और एनआर कांग्रेस का गठबंधन) पुडुचेरी में अपनी सरकार बचाने की कोशिश करेगा। असम की तरह ही यहां भी पूर्व-चुनावी गठबंधन अहम होंगे। हालांकि, पुडुचेरी में बाद में बनने वाले गठबंधन और निर्दलीय विधायकों की भूमिका भी चुनाव के बाद सरकार गठन में महत्वपूर्ण रही है। **प्रभावी फैक्टर:** एनडीए को 2021 में 16 सीटें मिलीं, जिसमें 6 भाजपा की थीं। डीएमके ने 6, कांग्रेस ने 2, निर्दलीय ने 6 और ऑल इंडिया एनआर कांग्रेस ने 10 सीटें जीती थीं। गठबंधन जारी रहेगा, अन्नाद्रमुक की संभावित एंट्री। पीएमके भी शामिल हो सकती है। लेकिन कांग्रेस-द्रमुक मजबूत चुनौती दे रहे हैं। त्रिकोणीय मुकाबला, लेकिन महिलाओं/युवाओं पर फोकस से एलजेके उभर सकता है।

• दुनिया की राजनीति

अमेरिका; मिड-टर्म चुनाव ट्रम्प का भविष्य तय करेंगे

अमेरिका में 3 नवंबर 2026 को मिड-टर्म चुनाव होने हैं। ये हर 4 साल में राष्ट्रपति चुनाव के ठीक दो साल बाद होते हैं। यदि ट्रम्प की रिपब्लिकन पार्टी हाउस या दोनों सदनों में बहुमत खोती है, तो उनका दूसरा कार्यकाल राजनीतिक रूप से कमजोर हो जाएगा। बड़े कानून पास कराना मुश्किल होगा। यदि वे जीतते हैं तो टैरिफ वॉर बढ़ सकता है। भारत, चीन, ईयू, मैक्सिको जैसे देशों पर दबाव बढ़ेगा। सप्लाई चेन में अनिश्चितता लौटेगी।

बांग्लादेश: तारिक की वापसी से बीएनपी मजबूत है

बांग्लादेश में 12 फरवरी 2026 को आम चुनाव होने वाले हैं, जो 11वीं संसद के 300 सदस्यों का चुनाव करेंगे। ये चुनाव शेख हसीना के 2024 में हटाए जाने के बाद पहले पूर्ण चुनाव हैं। शेख हसीना की पार्टी 'अवामी लीग' को चुनाव लड़ने से प्रतिबंधित कर दिया गया है।
• छात्र नेताओं द्वारा बनाई गई नेशनल सिटीजन पार्टी और जमात-ए-इस्लामी के बीच गठबंधन की खबरें आई हैं, जिससे देश की राजनीति में एक नया ध्रुवीकरण देखने को मिल रहा है।

हम पर असर- तारिक रहमान की वापसी से बीएनपी को फायदा। बीएनपी जीती तो भारत की बॉर्डर सिक्योरिटी प्रभावित होगी। ट्रेड रुकावट संभव। हालांकि, रहमान से संबंध सुधरे तो हालात बदलेंगे।

नेपाल: कांग्रेस जीती तो भारत के लिए सकारात्मक

नेपाल में 5 मार्च 2026 को आम चुनाव होने हैं। इसमें प्रतिनिधि सभा की 275 सीटों के लिए मतदान होगा। यह चुनाव पिछले साल हुए जेनजी आंदोलन के बाद पहला पूर्ण आम चुनाव है। भ्रष्टाचार और आर्थिक संकट के आरोपों के चलते तत्कालीन प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली की सरकार गिर गई थी।

हम पर असर- नेपाली कांग्रेस की जीत भारत के लिए सकारात्मक होगी। व्यापार, और सुरक्षा सहयोग बढ़ेगा। यूएमएल या माओवादी जैसे दल मजबूत होते हैं, तो यहां चीन का असर बढ़ सकता है।

रूस: सितंबर में चुनाव संभावित, पुतिन ही दावेदार

रूस में सितंबर 2026 में स्टेट ड्यूमा (निचली संसद) का चुनाव होना तय है। यानी 450 सदस्यीय ड्यूमा की सभी सीटों के लिए मतदान होगा। यूनाइटेड रूस पार्टी जो पुतिन-समर्थक नेतृत्व की है, अगले चुनाव में भी स्पष्ट बहुमत पाने की स्थिति में है। कई सर्वे में पार्टी को लगभग 55% वोट मिलने का अनुमान बताया गया है।

हम पर असर- भारत को रणनीतिक अनिश्चितता का खतरा कम रहता है। हालांकि, पुतिन के कारण रूस-पश्चिम तनाव बना रहता है, जिससे भारत को बार-बार डिप्लोमेटिक बैलेंसिंग करनी पड़ती है।

रिपोर्ट

लंबित पोक्सो मुकदमे खत्म करने को 600 और विशेष कोर्ट की जरूरत

अतिरिक्त पोक्सो कोर्ट स्थापित करने में 1977 करोड़ रुपये का आएगा खर्च – पोक्सो के मुकदमों के निस्तारण में आई तेजी, 2025 में 109 प्रतिशत निपटान दर

माला दीक्षित • जागरण

नई दिल्ली : यौन शोषण के शिकार बच्चों को जल्द न्याय की उम्मीद जगी है, क्योंकि बाल यौन शोषण के मुकदमों के निस्तारण में तेजी आई है। पहली बार हुआ है कि 2025 में पोक्सो के मुकदमों के निपटान की दर सौ प्रतिशत से ज्यादा, 109 प्रतिशत रही। यानी जितने मुकदमे दर्ज हुए, उनसे ज्यादा निपटाए गए। यह एक सुखद स्थिति है। लेकिन अगर देशभर में लंबित पोक्सो के सभी मुकदमे चार वर्षों में खत्म करने हैं, तो इसके लिए 600 अतिरिक्त विशेष पोक्सो कोर्ट स्थापित करने की जरूरत होगी। इसमें लगभग 1977 करोड़ रुपये का खर्च आएगा। हाल में आई एक रिपोर्ट से यह जानकारी मिली है।

प्रतीकात्मक

बाल यौन उत्पीड़न संरक्षण कानून (पोक्सो) के मुकदमों पर नजर डालें तो 2023 तक देशभर में पोक्सो के 2,62,089 मुकदमे लंबित थे। लेकिन इसमें अब एक अहम बदलाव देखने को मिला है। निपटाए गए मामलों की संख्या दर्ज मामलों से ज्यादा हो गई है। सेंटर फार लीगल एक्शन एंड बिहेवियर चेंज (सी-लैब) फार चिल्ड्रन की रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्ष 2025 में बच्चों के यौन शोषण से जुड़े 80320 मामले दर्ज हुए, जबकि 87754 मामले निपटाए गए। निपटान दर 109 प्रतिशत रही। खास बात यह है कि 24 राज्यों में पोक्सो के मुकदमों की निपटान दर 100 प्रतिशत से अधिक रही। रिपोर्ट में सिफारिश की गई है कि चार साल में सभी लंबित पोक्सो मुकदमे खत्म करने के लिए 600 अतिरिक्त विशेष पोक्सो अदालतें स्थापित की जाएं। इसके लिए लगभग 1977 करोड़ रुपये का प्रविधान किया जाना चाहिए और इसमें निर्भया फंड का भी उपयोग किया जा सकता है।

रिपोर्ट कुछ गंभीर चिंताओं की ओर भी ध्यान खींचती है। जैसे कुल लंबित मामलों में लगभग आधे दो साल से ज्यादा समय से लंबित हैं। दोषसिद्धि की दरों में भी लगातार उतार-चढ़ाव बना हुआ है। एनसीआरबी (राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो) की रिपोर्ट के मुताबिक 2023 में पोक्सो मामलों में दोषसिद्धि की दर 29 प्रतिशत रही, जबकि पोक्सो की त्वरित विशेष अदालतों में दोषसिद्धि दर 19 प्रतिशत रही। पोक्सो के पांच साल से ज्यादा समय से लंबित मुकदमों में अकेले उत्तर प्रदेश की हिस्सेदारी 37 प्रतिशत है। इसके बाद महाराष्ट्र (24 प्रतिशत) और बंगाल (11 प्रतिशत) का नंबर है। पांच साल से ज्यादा लंबित मामलों में लगभग तीन चौथाई अकेले इन्हीं तीन राज्यों में हैं। इन आकड़ों के दूरगामी प्रभाव पर इंडिया चाइल्ड प्रोटेक्शन के निदेशक (शोध) पुरजीत प्रहराज कहते हैं कि जब न्याय व्यवस्था दर्ज मामलों से अधिक पोक्सो मामलों का निपटारा करने लगती है, तब यह सिर्फ आंकड़ों की उपलब्धि नहीं होती। यह उस भरोसे की वापसी होती है, जो बच्चों ने व्यवस्था पर खो दिया था। इसलिए इस गति को बनाए रखना केवल प्रशासनिक जरूरत नहीं, बल्कि नैतिक जिम्मेदारी है। हर बच्चे के लिए समय पर संवेदनशील और बाल-केंद्रित न्याय अपवाद नहीं, बल्कि हकीकत होनी चाहिए।

रिपोर्ट के मुताबिक सात राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में पोक्सो केसों की निपटान दर 150 प्रतिशत से अधिक रही। वहीं अन्य सात राज्यों में 121 से 150 प्रतिशत के बीच रही।

Dainik Jagaran Page -3

न्याय का वास्तविक मतलब कमजोर वर्ग को आवाज प्रदान करना : जस्टिस सूर्यकांत

कहा, जरूरतमंदों की बातें सुनी जाएं, न्यायिक प्रक्रिया में तकनीकी हस्तक्षेप से बढ़ेगी पारदर्शिता

पटना हाई कोर्ट परिसर में सात निर्माण परियोजनाओं का शिलान्यास भी किया

विधि संवाददाता, जागरण • पटना

भारत के प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा कि न्याय शब्द का वास्तविक मतलब कमजोर वर्ग को आवाज प्रदान करना है। सबसे कमजोर को उचित न्याय मिल सके और जो लोग इसके हकदार हैं, उन्हें यह ससमय मिले। जरूरतमंदों की बातें जरूर सुनी जाएं। न्यायिक व्यवस्था में सही तकनीकी संसाधनों के उपयोग से पारदर्शिता लाने के साथ ही दूरदराज के इलाकों में रहने वाले लोगों को अधिक प्रभावी तरीके से न्याय मिल सकता है। तकनीक की मदद से सभी जरूरी दस्तावेजों और डाटा का डिजिटलाइजेशन किया जा सकता है। वह शनिवार को पटना हाई कोर्ट परिसर में सात निर्माण परियोजनाओं के शिलान्यास के बाद समारोह को संबोधित कर रहे थे।

पटना में शनिवार को चाणक्य राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय के दीक्षा समारोह को संबोधित करते सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश जस्टिस सूर्यकांत। एएनआइ

उन्होंने कहा कि बिहार की ऐतिहासिक संस्थाओं की संरचनाएं न सिर्फ एक स्थिर ढांचे या इमारतें हैं, बल्कि एक जीवंत संरचनाएं हैं, जिनकी समाज में प्रासंगिकता है। नालंदा विश्वविद्यालय महज वास्तुशिल्प के लिए महत्वपूर्ण नहीं थे, बल्कि ये खुले वाद-विवाद और मूल तार्किकता के केंद्र के तौर पर भी विख्यात थे। इसी तरह पाटलिपुत्र सिर्फ सत्ता या शक्ति के केंद्र के तौर पर नहीं पहचाने जाते थे, बल्कि प्रशासन एवं लोक कल्याण के केंद्र के तौर पर भी समाज में इनकी प्रासंगिकता थी। पटना उच्च न्यायालय को संवैधानिक, स्वतंत्रता, न्यायिक अधिकार के विस्तार के केंद्र के तौर पर जाना जाता है। हाई कोर्ट परिसर में बनने वाले आडिटोरियम का जिक्र करते हुए कहा कि यह विचारों के आदान प्रदान करने का महत्वपूर्ण केंद्र बन सकता है। यहां न्याय से जुड़े कार्यक्रम आयोजित कराए जाने चाहिए।

अशोक सभागार में चाणक्य राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय (सीएनएलयू) के दीक्षांत समारोह में उन्होंने कहा कि किसी व्यक्ति की महानता जन्म, पद या पहचान से नहीं, बल्कि उसके कर्मों से तय होती है। उन्होंने विद्यार्थियों को यह स्मरण कराया कि वे जिस मुकाम पर पहुंचे हैं, वह किसी संयोग, विरासत या अधिकार का परिणाम नहीं, बल्कि वर्षों की निरंतर मेहनत, अनुशासन और धैर्य का फल है। डिग्रियां उनके अतीत की पहचान नहीं, बल्कि इस बात की स्वीकृति हैं कि वे कठिन परिश्रम और बौद्धिक क्षमता का प्रदर्शन कर चुके हैं।

Dainik Jagaran Page

संस्मरण

गांधी और पटेल की कुछ यादें

सरदार बल्लभ भाई पटेल के संबंध में यह मान्यता प्रचलित है कि वे कठोर स्वभाव के व्यक्ति थे। उनमें विनोदप्रियता का सर्वथा अभाव था। सरदार पटेल के मुखमंडल को देखकर भी उनकी विनोदप्रियता का अनुमान नहीं लगाया जा सकता था। उन्हें लौहपुरुष कहकर भी यह सिद्ध करने की चेष्टा की जाती है कि उनके मन में रेशम-जैसी कोमल भावनाओं का अभाव था, लेकिन सरदार पटेल के व्यक्तित्व में लौह भावनाओं के साथ-साथ रेशमी कोमल भावनाओं का भी मणिकांचन संयोग था। अवसर आने पर वे अपने विनोदप्रिय स्वभाव का भी परिचय दे देते थे। उनके जीवन की कुछ घटनाओं से यह विदित होता है कि उनके व्यक्तित्व में विनोदप्रियता का अभाव नहीं था। उनकी इसी विनोदप्रियता का परिचय देनेवाली कुछ घटनाओं को यहां प्रस्तुत किया जा रहा है:

बकरी का चारा भी

एक दिन गांधीजी, सरदार पटेल और जे. सी. कुमारप्पा एक साथ खाना खाने के लिए बैठे। गांधीजी ने बड़े प्रेम से एक चम्मच नीम की चटनी कुमारप्पा की थाली पर भी रख दी। सरदार पटेल ने गंभीर मुद्रा बनाकर कुमारप्पा से कहा, 'आपने देखा ! बापू अभी तक तो बकरी का सिर्फ दूध ही पीते थे, पर अब तो वे बकरी का चारा भी खाने लगे हैं।'

एक अन्य किस्सा यह है कि गांधीजी जिन दिनों यरवदा मंदिर जेल में थे, तब उनके पास 'यरवदा मंदिर' के पते पर पत्र आते थे। डाकखाने ने भी यह पता स्वीकार कर लिया था। सरदार पटेल ने इस पर टिप्पणी करते हुए कहा, 'मंदिर तो जरूर है, पर प्रसाद के लिए रोज मारामारी होती है।'

इसी तरह एक बार गांधीजी के सामने एक अखबार की समीक्षा पढ़ी जा रही थी। उसमें गांधी की 'रचनात्मक गफलतें' ऐसा वाक्यांश आया, तो महादेव देसाई ने पूछा, 'रचनात्मक गफलत कैसी होती है ?'

सरदार पटेल ने कहा, 'जैसे तुम्हारी दाल जल गई आज।'

यह परिभाषा सुनकर गांधीजी खिलखिलाकर हंस पड़े।

ब्रिटिश बाइबिल

एक बार एक किताब पढ़ते हुए गांधीजी को उसमें ब्रिटिश बाइबिल लिखा मिला। उन्होंने पूछा, 'ब्रिटिश बाइबिल ! यह क्या चीज होती है ?'

सरदार पटेल ने उत्तर दिया 'पौंड, शिलिंग, पैंस।'

इमली

गांधीजी सुबह नौ बजे और शाम को छह बजे रोज सोडा और नींबू पीते थे। गरमियों में नींबू महंगे हो जाते हैं, इसलिए गांधीजी ने इमली का प्रयोग करने का विचार किया। इमली के पेड़ जेल के अहाते में बहुत थे। बल्लभ भाई पटेल ने गांधीजी के इस विचार को हंसी में उड़ा देना चाहा। उन्होंने कहा, 'इमली के पानी से हड्डियां टूटने लगती हैं और वायु का प्रकोप बढ़ जाता है।'

बापू ने पूछा, 'जमनालाल बजाज पीते हैं। उन्हें क्यों नहीं इमली का पानी पीने से वायु प्रकोप होता ? उनकी हड्डियां क्यों नहीं टूटतीं ?'

बल्लभ भाई ने कहा, 'जमनालाल की हड्डियों तक पहुंचने का इमली को रास्ता ही नहीं मिलता।'

गांधीजी ने कहा, 'एक जमाने में मैंने खूब इमली खायी है। मुझे कोई नुकसान नहीं हुआ।'

बल्लभ भाई ने कहा,'उस जमाने में तो आप पत्थर भी हजम कर सकते थे। आज वह कैसे हो सकता है ?'

एक अन्य किस्से के अनुसार, गांधीजी जेल में थे। उनके स्वास्थ्य का समाचार अखबारों में छपने पर सरकार ने प्रतिबंध लगा दिया। इस पर गांधीजी ने असंतोष व्यक्त किया और कहा, 'क्या स्वास्थ्य का समाचार लिखना-छपना कानूनन मना है ?'

जेलर ने कहा, 'हां, आप जैसों के बारे में लोग चाहे जो मानकर चिंता करने लगते हैं। आपको बीमारी की खबर पढ़-सुनकर लोगों की टोलियां पर टोलियां यहां आने लगें, तो कितनी परेशानी हो जाएगी ?'

बल्लभ भाई पटेल चुप नहीं रह पाए। उन्होंने तत्काल कहा, 'आप आर्डिनेंस निकलवा दीजिए कि कोई गांधीजी की बीमारी की खबर न पूछे। गांधीजी के स्वास्थ्य के बारे में पूछने वाले को सजा दी जाएगी।'

-अर्चना रतूड़ी

बिना मिट्टी और पानी के हवा में उगेंगे पौधे

शंघाई, एजेंसी। आने वाले समय में आप बिना मिट्टी या पानी के अपने घर में पौधे उगा सकेंगे। चीन की एक वैज्ञानिक ने दुनिया का पहला एरोपोनिक डेस्कटॉप इकोसिस्टम विकसित किया है, जिसे 'इजेस्टी' नाम दिया गया है। यह तकनीक मिट्टी या पानी के बजाय केवल हवा और पोषक तत्वों वाली धुंध का इस्तेमाल करती है। इसका डिजाइन पूरी तरह पारदर्शी है, जिससे आप पौधे की जड़ों को हवा में लटकते और बढ़ते हुए देख सकते हैं। इजेस्टी में एक खास 'मिस्ट पल्वराइजर' लगा है, जो जड़ों पर हल्की धुंध छिड़कता है। इसके अलावा, इसमें एक हीटिंग सिस्टम और खास 'ग्रो लाइट' भी दी गई है, जो सूरज की किरणों की कमी को पूरा करती है। इससे पौधे मिट्टी के मुकाबले ज्यादा तेजी से बढ़ते हैं। यह अनोखा डिवाइस

उन लोगों के लिए बेहतरीन है, जो घर के अंदर गार्डनिंग करना चाहते हैं, लेकिन मिट्टी और कीचड़ से बचना चाहते हैं।

इसमें तीन मिस्ट मोड भी हैं, जो अलग-अलग पौधों की जरूरत के अनुसार धुंध की मात्रा को नियंत्रित करते हैं। यह डिवाइस छोटे अपार्टमेंट या ऑफिस के लिए भी आदर्श है, क्योंकि इसे कहीं भी रखा जा सकता है। उम्मीद है कि यह जल्द भारत में भी उपलब्ध होगा।

कर्नाटक में दिखा दुनिया का दुर्लभ 'चंदन तेंदुआ'

विजयनगर, एजेंसी। कर्नाटक में वन्यजीव विशेषज्ञों ने एक बेहद अनोखे तेंदुए की खोज की है।

आमतौर पर तेंदुए पीले-भूरे रंग के होते हैं, लेकिन यह तेंदुआ हल्के लाल-गुलाबी रंग का है और इसके धब्बे भूरे हैं। इस खास रंगत के कारण इसे 'चंदन तेंदुआ' नाम दिया गया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसे 'स्ट्रॉबेरी तेंदुआ' कहा जाता है, जो केवल दक्षिण अफ्रीका और तंजानिया जैसे देशों में ही देखा गया था।

Hindustan Page -14

विश्व ब्रेल दिवस | पहली ब्लाइंड महिला टी-20 वर्ल्ड कप मैच के लिए इंडियन टीम में बिहार से अकेली खिलाड़ी अनु थीं

ब्रेल ने दी दृष्टि तो हौसले से बल्ला थाम वर्ल्ड कप का हिस्सा बनीं

हि विशेष

■ स्वाति आनंद

पटना। 'मंजिलें उन्हीं को मिलती हैं, जिनके सपनों में जान होती है, पंख से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है।' आंखों में रोशनी नहीं, पर हौसलों से ऐसी उड़ान भरी कि बिहार से कोलंबो तक पहुंच गई। ब्रेल ने दृष्टि दी तो 18-20 वर्ष में ही हाथों में बल्ला थाम लिया। 23 वर्ष में पहली ब्लाइंड महिला टी 20 वर्ल्ड कप मैच का हिस्सा बनीं और भारत के साथ बिहार का भी प्रतिनिधित्व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किया। यह कहानी है अंतरज्योति बालिका विद्यालय, पटना की पूर्व छात्रा अनु कुमारी की, जिन्होंने ना केवल नेत्रहीन छात्राओं के लिए बल्कि हर उस इंसान के लिए सजीव मिसाल बन गई हैं जो बाधाओं से जूझ रहा है। एक वह दौर था जब नेत्रहीनता के कारण घर के लोग उन्हें डर से निकलने नहीं देना चाहते थे। लेकिन आज वहीं अनु अकेले हवाई सफर करती हैं। अनु ने नेत्रहीनता को अपनी कमजोरी नहीं, बल्कि ताकत बनाया। उन्होंने ब्रेल लिपि को केवल पढ़ने-लिखने का जरिया नहीं, बल्कि स्वावलंबन की वह सीढ़ी बनाया जिस पर चढ़ वह दिल्ली विवि तक पहुंचीं पर उनकी प्रतिभा का असली कैनवास क्रिकेट का पिच बना जब भारत की पहली ब्लाइंड महिला टी-20 विश्व कप टीम का गठन हुआ। इस टीम में पूर्ण रूप से नेत्रहीन (बी1), कम दृष्टि (बी टू), आंशिक दृष्टिहीन (बी थ्री) श्रेणियों की खिलाड़ियों को शामिल किया गया था और अनु बिहार से इस टीम की एकमात्र प्रतिनिधि बनीं।

पहली ब्लाइंड महिला टी 20 वर्ल्ड कप मैच का हिस्सा बनीं अनु। ● हिन्दुस्तान

आंखों में रोशनी नहीं तो मार्शल आर्ट की ट्रेनिंग ले बनाया सशक्त

नेत्रहीन आवासीय विद्यालय कदमकुआं के 20 छात्रों ने रक्षा के लिए मार्शल आर्ट की ट्रेनिंग ली है। नेत्रहीन बच्चों को उनकी सुरक्षा को लेकर कई चुनौतियां होती हैं। इसे देखते हुए स्कूल प्रशासन ने स्वर्ण पदक विजेता लवली कुमारी की मदद से मार्शल आर्ट की ट्रेनिंग कराने का निर्णय लिया। बच्चों को आत्मरक्षा के लिए लवली ने बुनियादी गुर सिखाए, जिससे अगर उनके साथ कोई गलत घटना घटती है तो उससे वह अपनी रक्षा करेंगे। इन बच्चों को आगे भी ट्रेनिंग दी जाएगी।

ऐसे शुरू हुआ सफर

अनु ने बताया कि पढ़ाई के दौरान उनके एक शिक्षक ने उन्हें ब्लाइंड क्रिकेट कैंप के बारे में बताया। इसमें प्रतिभा के प्रदर्शन के आधार पर अनु का चयन पटना में एक लोकल मैच के लिए हुआ। जहां से नेशनल टूर्नामेंट के लिए वह चयनित हुईं। बंगलुरु में हुए ट्रेनिंग कैंप में शामिल हुईं। जहां से पहली महिला ब्लाइंड टी-20 वर्ल्ड कप में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए उनका चयन हुआ।

संकल्पों की उड़ान को कोई बांध नहीं सकता : अनु

अनु ने बताया कि उनके पिता सोहन चौधरी कामगार हैं और मां गृहिणी हैं। दोनों का उनकी पढ़ाई और क्रिकेटर बनने के सपने को पूरा करने में भरपूर योगदान मिला है। अनु ने कहा कि दृष्टि की सीमाएं शारीरिक हो सकती हैं, लेकिन संकल्पों और उड़ान को कोई बांध नहीं सकता है। बताया कि बालिका विद्यालय में ब्रेल लिपि की अच्छी ट्रेनिंग मिली। 10वीं तक वहीं से पढ़ाई पूरी की।

Hindustan Page -4

दो नदियों पर नए बराज से आठ जिलों की लाखों आबादी को होगा फायदा

सर्वे : बागमती और महानंदा नदी पर बनेंगे तीन बराज

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। राज्य में तीन नये बराज के निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो गयी है। तीनों बराज के लिए सर्वे का काम प्रारंभ हो गया है। बागमती नदी पर दो जबकि महानंदा नदी पर एक बराज का निर्माण होगा। पिछले दिनों केन्द्रीय टीम व विशेषज्ञों का दल महानंदा नदी के प्रस्तावित स्थल का निरीक्षण करने पहुंचा। टीम शीघ्र ही बागमती नदी का भी दौरा करेगी।

तीन नए बराज बनने से सीतामढ़ी, शिवहर, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, खगड़िया, किशनगंज, कटिहार और पूर्णिया जिले की बड़ी आबादी को लाभ होगा। पिछले वर्ष सितंबर में केन्द्र ने बागमती और महानंदा पर तीन बराज को हरी झंडी दी थी।

केन्द्रीय जल आयोग के परियोजना मूल्यांकन संगठन ने इन परियोजनाओं की प्रारंभिक संभाव्यता रिपोर्ट को मंजूरी दी है। अब तीनों बराज की डीपीआर का काम शुरू होगा। इससे पहले सर्वे का काम किया जा रहा है। इस समय कोसी, गंडक और सोन पर बराज हैं। विभाग के प्रधान सचिव संतोष कुमार मल्ल ने बताया कि हम बराज निर्माण को लेकर आगे की कार्रवाई में जुटे हैं। दरअसल, पिछले केन्द्रीय बजट में बाढ़ न्यूनीकरण एवं सिंचाई परियोजनाओं, बराज निर्माण सहित नई और चालू योजनाओं के लिए 11,500 करोड़ की वित्तीय सहायता दी गयी है।

सर्वेक्षण शुरू, दो महीने में बन जाएगी डीपीआर

बाढ़ से सुरक्षित होंगे ये इलाके

महानंदा : महानंदा नदी पर किशनगंज के तैयबपुर में बराज बनेगा। इसके बनने से किशनगंज, कटिहार, पूर्णिया जिले के बड़े हिस्से को बाढ़ से मुक्ति मिलेगी। इसके अलावा इन जिलों के बड़े हिस्से में सिंचाई के लिए पानी भी उपलब्ध हो सकेगा।

बागमती : सीतामढ़ी के ढेंग व कटौंझा में बागमती पर नये बराज का निर्माण होगा। इसका लाभ सीतामढ़ी, शिवहर, मुजफ्फरपुर, दरभंगा व खगड़िया जिले को होगा। इन जिलों के बड़े इलाके को बाढ़ से मुक्ति मिलेगी। साथ ही सिंचाई की सुविधा भी मिल सकेगी।

क्यों पड़ी जरूरत

इस समय महानंदा और बागमती नदी पर कोई बराज नहीं है। महानंदा नदी से सीमांचल में बाढ़ की समस्या उत्पन्न होती है। बागमती से सीतामढ़ी, शिवहर, मुजफ्फरपुर, दरभंगा व खगड़िया मे बाढ़ आती है। नये बराज के निर्माण से नदी के अनियंत्रित प्रवाह पर प्रभावी ढंग से रोक लगेगी।

अभी ये बराज
कोसी : वीरपुर, सोन : इन्द्रपुरी
गंडक : वाल्मीकिनगर

"हमारी नदियों का पानी व्यर्थ बहकर बंगाल की खाड़ी चला जाता है। हमारी योजना है कि बाढ़ अवधि में हम नदियों के पानी का संचयन करें और उसका इस्तेमाल सिंचाई के साथ-साथ अन्य कार्यों में करें।
- विजय कुमार चौधरी, जल संसाधन मंत्री

Hindustan Page -1

EDU TERIA

Website : eduteriatestseries.com

संडे) बिग इन्फो

भविष्य की रणभूमि... जिसके पास सर्वश्रेष्ठ AI, वही होगा महायोद्धा

एआई अब युद्ध भी लड़ेगा। 'किल चेन' सेकंडों में सिमट चुकी है। इंसानी नियंत्रण धीरे-धीरे कागजों तक सीमित हो रहा है। क्वांटम सेंसर ड्रोन किसी भी स्टेल्थ तकनीक को तबाह करने में एक डेढ़ साल में सक्षम हो जाएंगे। रक्षा मोर्चे पर हो रहा यह बदलाव कितना बड़ा है, आइए जानते हैं...

मिलिट्री AI खर्च: चीन-अमेरिका में रेस, भारत के भी सधे कदम

ग्लोबल मिलिट्री एआई बाजार ₹96,000 करोड़ रु. तक का है। विशेषज्ञों के अनुसार, यह 13% की वार्षिक वृद्धि दर से बढ़कर 2030 तक करीब ₹1.7 लाख करोड़ से ₹2.45 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच सकता है।

▪ आंकड़े हजार करोड़ रु. में

14 गुना ज्यादा खर्च चीन कर रहा है भारत की तुलना में, अमेरिका 5 गुना ज्यादा

4 vs 1 अकेला चीन 4 अन्य देशों से 94,800 करोड़ रु. ज्यादा खर्च कर रहा है

मिलिट्री एआई पर देशों के खर्च के आंकड़े विभिन्न अनुमानों पर आधारित हैं। वास्तविक खर्च कहीं ज्यादा हो सकता है।

आर्म्स रेस : अभी अमेरिका आगे, लेकिन चीन जल्द पीछे छोड़ देगा

देश	स्कोर
अमेरिका	9.7
चीन	9.3
इजराइल	9
रूस	7.3
भारत	5.3

▪ स्कोर 10 पॉइंट में से

▪ सिपरी के अनुसार, AI आर्म्स रेस में अभी अमेरिका आगे है। 2030 तक चीन आगे होगा। मिलिट्री सिविल फ्यूजन मॉडल उसकी टेक कंपनियों को सीधे युद्ध मैदान में उतार रहा है।

किल चेन: दिनों-घंटों की प्रक्रिया को एआई ने सेकंडों में समेटा

▪ किल चेन युद्ध में दुश्मन को नष्ट करने वाली 6 चरण की प्रक्रिया है। पहले ये कई दिनों की होती थी। एआई ने इसे मिनटों-सेकंडों में समेट दिया।

▪ तेज किल चेन से दुश्मन को जवाब का मौका नहीं मिलता।

पता लगाना – सैटेलाइट/ड्रोन 95% इमेज एआई से एनालाइज हो रहे।

निशाना चुनना – 40 हजार से ज्यादा टारगेट बनाए इजराइली लैवेंडर एआई ने गाजा में।

फैसला करना – 20 मिनट से 10 सेकंड कर दी किल चेन अमेरिकी थंडरफॉर्ज AI ने।

हमला करना – 70% हताहत यूक्रेन में ड्रोन से।

नुकसान आंकना – रूसी लैंसेट ड्रोन 3 मिनट में 90% एक्यूरेट।

सप्लाई मैनेजमेंट – 50% मिलिट्री सप्लाई अमेरिका की AI रूट से है। लागत 15% बची।

जोखिम : 30% तक गलत पहचान होना संभव है एआई टारगेटिंग में ▪ 97 देश बेहद खतरनाक स्वचालित हथियारों पर संधि चाहते हैं, लेकिन अमेरिका-रूस-चीन लगातार इसके विरोध में हैं।

स्रोतः सिपरी, ग्रैंड व्यू रिसर्च, आईआईएसएस - द मिलिट्री बैलेंस, बेल्फर सेंटर्स नेशनल साइबर पावर इंडेक्स

Dainik Bhaskar Page No-17

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस | 2026 में यह ज्यादा तेज, नियंत्रित और भरोसेमंद होगा, इंसान को ज्यादा क्रिएटिव होने का समय देगा

एआई; मनगढ़ंत जवाब कम देगा, जिंदगी के हर काम को री-सेट करेगा

प्रोफेसर विशाल मिश्रा
कंप्यूटर साइंस, डीन-एआई, कोलंबिया यूनिवर्सिटी (US)

पिछले कुछ वर्षों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) को लेकर बहुत कुछ लिखा और कहा गया है। कभी उम्मीद के साथ, कभी डर के साथ तो कभी भ्रम में। लेकिन 2026 एक ऐसा मोड़ साबित हो सकता है जब एआई को लेकर यह शिकायत धीरे-धीरे खत्म होने लगेगी कि ये एक 'ब्लैक बॉक्स' है। दरअसल, सवाल पूछने पर एआई ने कौन-सा नियम चुना? किस जानकारी को ज्यादा महत्व दिया? किस वजह से यही नतीजा निकला? यह प्रक्रिया अक्सर पूरी तरह पारदर्शी नहीं होती। इसलिए इसे 'ब्लैक बॉक्स' कहा जाता है।

अगले एक-दो वर्षों में हम यह बेहतर ढंग से समझने लगेंगे कि बड़े भाषा मॉडल (एलएलएम) वास्तव में कैसे सोचते हैं, कैसे निर्णय लेते हैं। यह समझ एआई को अधिक नियंत्रित, तेज और भरोसेमंद बनाने में मदद करेगी। खासकर वह समस्या, जिसमें एआई आत्मविश्वास के साथ गलत या काल्पनिक जवाब दे देता है (हैलुसिनेशन), उसमें साफ कमी आएगी। इस तकनीकी बदलाव का सबसे बड़ा असर लैब या रिसर्च पेपर में नहीं, बल्कि आम लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी में दिखाई देगा।

जहां तक एआई से नौकरियां जाने की बात है तो इसे ऐसे समझिए कि कैमरा आने के बाद पेंटर खत्म नहीं हुए, उन्होंने 'एब्स्ट्रैक्ट आर्ट' रचा। कंप्यूटर आने के बाद अकाउंटेंट खत्म नहीं हुए, काम का स्तर बदला। एआई भी यही करेगा। रूटीन और मैकेनिकल काम मशीन करेगी। इंसान ज्यादा रचनात्मक, ज्यादा रणनीतिक भूमिकाएं निभाएगा। 2026 में एआई एक ऐसा टूल बनेगा, जो इंसान की जगह नहीं लेगा, बल्कि उसे और ज्यादा सशक्त करेगा। यह ऐसा दौर होगा, जब हम मशीन को बेहतर समझेंगे, तो वह हमें कम इंसान नहीं बनाएगी बल्कि और ज्यादा रचनात्मक बनने का समय देगी।

एआई के बड़े बदलाव... जो सेहत से लेकर मनोरंजन तक में आपको महसूस होंगे

मेडिकल: आपकी आवाज, त्वचा के फोटो से मेडिकल टेस्ट होगा
• 2026 तक एआई लैस मोबाइल एप आपकी आवाज, खांसी, सांस लेने के पैटर्न, चेहरे या त्वचा की तस्वीर से एक प्रारंभिक मेडिकल रिपोर्ट तैयार कर सकेंगे। एआई सर्जरी से पहले की प्लानिंग, रेडियोलॉजी रिपोर्ट और मेडिकल रिकॉर्ड का विश्लेषण करेगा। रोबोटिक सर्जरी और सटीक होगी।

एजुकेशन: क्लास के हर स्टूडेंट के लिए अलग तरह से पढ़ाई
• हर छात्र के पास 'एआई स्टडी साथी' होगा, जो समझेगा कि बच्चा कहां और क्यों अटका है। छात्र की कमजोरी और ताकत पहचानकर उसी स्तर के अभ्यास देगा। यानी क्लास के हर छात्र के लिए अलग तरह से पढ़ाई होगी। टीचर का समय कॉपी जांचने में नहीं, बल्कि बच्चों से संवाद और मार्गदर्शन में लगेगा।

एंटरटेनमेंट: टीवी आपके मूड के हिसाब से प्रोग्राम बताएगी
• एआई 'वॉयस असिस्टेंट' तक सीमित नहीं रहेगा। स्मार्टफोन यह समझेगा कि आप कब व्यस्त हैं, कब थके हैं। उसी हिसाब से नोटिफिकेशन, कॉल व रिमाइंडर को प्राथमिकता देगा। टीवी, ओटीटी सिर्फ ये नहीं बताएंगे कि क्या देखना है, बल्कि समझेंगे कि क्या देखना मूड के लिए सही है।

ट्रांसपोर्ट: कार मौसम, हादसे जैसी घटनाओं से अलर्ट करेगी
• एआई से लैस कारें ड्राइवर की थकान पहचान सकेंगी। मौसम, ट्रैफिक और ड्राइविंग पैटर्न के हिसाब से गाड़ी का व्यवहार बदलेगा। लॉजिस्टिक्स और पब्लिक ट्रांसपोर्ट में एआई रूट व ईंधन की बेहतर योजना बनाएगा। फायदा ये होगा कि आपका सफर सुरक्षित, सस्ता और स्मार्ट होगा।

वर्कप्लेस: 'पहला ड्राफ्ट' एआई बनाएगा, अंतिम फैसला आपका
2026 तक कई प्रोफेशनल कामों में एआई 'पहला ड्राफ्ट' तैयार करेगा। रिपोर्ट, ई-मेल, प्रेजेंटेशन-AI लिखेगा, इंसान अंतिम फैसला करेगा। सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग में AI को-डेवलपर की तरह काम करेगा। छोटे स्टार्टअप भी वही काम कर पाएंगे, जो पहले सिर्फ बड़ी कंपनियां कर पाती थीं।

टेलीकॉम: नेटवर्क खुद को समझेगा और सुधारेगा
• एआई रियल-टाइम में नेटवर्क को ऑप्टिमाइज करेगा, जिससे कॉल ड्रॉप और स्लो इंटरनेट जैसी समस्याएं कम होंगी। स्पैम कॉल और फ्रॉड मैसेज की पहचान पहले से बेहतर होगी। दूरदराज इलाकों में नेटवर्क प्लानिंग सुधरेगी।

पुलिसिंग-आपदा प्रबंधन: पहले ही चेतावनी दे देंगे
• AI क्राइम पैटर्न और भीड़ के व्यवहार का विश्लेषण करेगा। बाढ़, हीटवेव, भारी बारिश जैसी स्थितियों में आपदा प्रबंधन की पहले ही चेतावनी दे देगा। मानव निर्णय लेगा, पर जानकारी पहले व ज्यादा सटीक मिलेगी।

खेती: किसानों को कब-क्या करना है, बताएगा
एआई लैस वेदर मॉडल गांव-स्तर तक मौसम का अनुमान देंगे। फसल बोने का सही समय, कीट-रोग की चेतावनी और खाद की मात्रा पर सलाह मिलेगी। फायदा ये होगा कि कम नुकसान, बेहतर योजना और ज्यादा स्थिर आय।

वेनेजुएला पर अमेरिका का हमला, राष्ट्रपति मादुरो कब्जे में

ट्रंप बोले, सुरक्षित सत्ता हस्तांतरण तक शासन हम देखेंगे, डेल्टा फोर्स समेत नौसेना और वायुसेना ने चलाया सनसनीखेज आपरेशन

- आधी रात को 90 मिनट तक चार शहरों में सुने गए धमाके
- मादुरो पर नार्को आतंकवाद व चुनावी धांधली के आरोप
- लैटिन अमेरिका में सबसे सीधा अमेरिकी हस्तक्षेप
- वेनेजुएला का आरोप- अमेरिका तेल संसाधनों पर कब्जा चाहता है
- रूस, चीन, ईयू, ईरान ने अमेरिकी कार्रवाई की निंदा की

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

अमेरिका ने शनिवार को हैरतअंगेज आपरेशन को अंजाम देते हुए वेनेजुएला पर जोरदार सैन्य कार्रवाई की और महज आधे घंटे में राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को डेल्टा फोर्स के सैनिकों ने उनके बेडरूम से ही उठा लिया। चौंकानेवाली अमेरिकी कार्रवाई से वेनेजुएला ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया सन्न रह गई। लगभग डेढ़ घंटे चली कार्रवाई में अमेरिका ने चार शहरों में करीब सात जगहों पर सैन्य व अन्य महत्वपूर्ण ठिकानों को निशाना बनाया। मादुरो को सत्ता से बेदखल करने के कुछ घंटे बाद राष्ट्रपति ट्रंप ने प्रेस कान्फ्रेंस में कहा कि वेनेजुएला में सुरक्षित सत्ता हस्तांतरण होने तक अमेरिका की देखरेख में शासन चलेगा। इस घटनाक्रम पर वैश्विक स्तर पर तीखी प्रतिक्रियाएं सामने आई हैं। रूस, चीन, यूरोपीय संघ (ईयू) समेत कई देशों ने वेनेजुएला पर अमेरिकी हमले की कड़ी निंदा की है।

1989 में पनामा पर आक्रमण के बाद से लैटिन अमेरिका में वाशिंगटन का यह सबसे सीधा हस्तक्षेप है। मादुरो पर ड्रग्स कार्टेल चलाने समेत तमाम आरोप हैं और वह लंबे समय से अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के निशाने पर थे। मादुरो को 2020 में न्यूयार्क में नार्को आतंकी के तौर पर आरोपित किया गया था। 36 साल पहले इसी तरह के आरोपों पर सैन्य नेता मैनुअल नोरीगा को पद से हटा दिया गया था। अमेरिका कई महीनों से वेनेजुएला की जहाजों पर हमले कर रहा था।

वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को बंधक बनाकर यूएसएस ईओजीमा युद्ध पोत पर ले जाते अमेरिकी सैनिक। राष्ट्रपति ट्रंप ने ट्रुथ सोशल पर यह फोटो शेयर की।

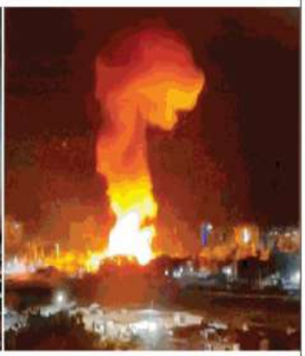

अमेरिका की सैन्य कार्रवाई के बाद वेनेजुएला के सबसे बड़े सैन्य परिसर और काराकस के एक स्थान पर लगी भीषण आग। रायटर

इंटरनेट मीडिया पर तस्वीरें और वीडियो वायरल

इंटरनेट मीडिया पर एक तस्वीर वायरल हो रही है, जिसमें मादुरो को डीईए (ड्रग एनफोर्समेंट एडमिनिस्ट्रेशन) की हिरासत में दिखाए जाने का दावा किया जा रहा है। इसके अलावा, काराकस समेत अन्य शहरों से लोगों के चीखते-चिल्लाते, भागते और सुरक्षित ठिकानों की ओर जाते वीडियो और तस्वीरें भी तेजी से प्रसारित हो रही हैं।

जस्टिस डिपार्टमेंट ने मादुरो पर लगाया नया अभियोग

मादुरो को सोमवार को मैनहट्टन की संघीय अदालत में पेश किए जाने की संभावना है। इस बीच अमेरिकी न्याय विभाग ने मादुरो और उनकी पत्नी के खिलाफ नया अभियोग जारी किया है। अभियोग में मादुरो पर एक भ्रष्ट और अवैध सरकार का नेतृत्व करने का आरोप लगाया गया है, जिसने अवैध गतिविधियों, खासतौर पर ड्रग तस्करी को बढ़ावा दिया।

ट्रंप ने कहा, लाइव देखा आपरेशन वेनेजुएला

समाचार एजेंसी रायटर के अनुसार, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इंटरनेट मीडिया ट्रुथ सोशल पर आपरेशन वेनेजुएला की जानकारी दी। बताया कि ये पूरा सैन्य आपरेशन उन्होंने लाइव टीवी पर देखा। उन्होंने कहा कि मादुरो दंपती को न्यूयार्क लाया गया है, जहां उन पर आपराधिक मामला चलाया जाएगा। ट्रंप ने इस कार्रवाई को अद्भुत बताते हुए डेल्टा फोर्स की प्रशंसा की। कहा कि दुनिया में अब तक किसी ने भी ऐसा आपरेशन नहीं चलाया है। स्टील के दरवाजों को चंद सेकेंड में तोड़कर मादुरो के बेडरूम में घुसते अमेरिकी बलों को मैंने अपने जीवन में पहली बार लाइव देखा। इस आपरेशन में किसी सैनिक की मौत नहीं हुई है। ट्रंप ने कहा कि हम तब तक वेनेजुएला का शासन संभालेंगे, जब तक कि समझदारी भरा सत्ता हस्तांतरण नहीं हो जाता।

मीडिया से बात करते अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप। एएफपी

न्यूयार्क टाइम्स के अनुसार, शुक्रवार रात करीब दो बजे (भारतीय समयानुसार शनिवार सुबह 11.30 बजे) हुई इस कार्रवाई के बाद वेनेजुएला की राजधानी काराकस के अलावा मिरांडा, अरागुआ और ला गुएरा में किए गए। कई लोगों के मारे जाने की खबर है, लेकिन संख्या के बारे में जानकारी नहीं दी गई है।

सीएनएन के मुताबिक, रूस में मौजूद बताई जा रहीं वेनेजुएला की उपराष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिगेज ने इसे देश की संप्रभुता पर सीधा हमला बताते हुए अमेरिका पर विशाल तेल भंडार पर कब्जा करने का आरोप लगाया। कहा कि उन्हें मादुरो और उनकी पत्नी के ठिकाने की जानकारी नहीं है। [विशेष सामग्री पेज 11 पर]

Dainik Jagaran Page No-1

नदियों के सूखने से राज्यभर में गहरा रहा जल संकट

आएं अपनी नदी बचाएं

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। बिहार में नदियों के संकटग्रस्त होने का सबसे बुरा प्रभाव भूजल स्तर पर पड़ रहा है। पिछले 50 वर्षों में राज्य का भूजल स्तर औसतन तीन गुना तक नीचे गया है। विशेषज्ञों के अनुसार राज्य के कई हिस्सों में भूजल 300 फीट तक नीचे चला गया है। कई इलाकों में भूजल इतना नीचे चला गया है कि बड़ी संख्या में जलस्रोतों का अस्तित्व ही खत्म हो गया है।

नदियों के लगातार सिकुड़ने के बाद स्थिति और गंभीर हो गई है। जहां कभी 10-20 फीट पर पानी उपलब्ध हो जाता था, वहां अब 80 से 300 फीट तक बोरिंग करनी पड़ रही है। इसका सबसे ज्यादा दुष्प्रभाव खेती, पशुपालन, पेयजल व्यवस्था और नदी आधारित पारंपरिक रोजगार पर पड़ा है। नालंदा के बिहारशरीफ और नूरसराय में पहले 30 से 70 फीट पर पानी उपलब्ध था। अब 300 फीट गहरी सबमर्सिबल लगाना पड़ रहा है। नवादा के 80 वर्षीय बुजुर्ग कैलाश प्रसाद सिंह बताते हैं कि 50 साल पहले नवादा में मात्र 15 से 20 फीट पर मीठा पानी मिल जाता था। अब जिले का औसत भूजल स्तर 80 से 100 फीट पर है।

सीवान की दाहा नदी में बहता गंदा पानी।

50 साल में तीन गुना तक नीचे गया जलस्तर राज्य के सभी इलाकों में

मधुबनी: हैंडपंप, कुएं और नलकूप सूख रहे

दरभंगा में पिछले 50 वर्षों में जलस्तर छह फीट तक गिर चुका है। सीतामढ़ी की जीवनदायिनी लखनदेई अतिक्रमण के कारण नाले का रूप ले चुकी है, जिससे कृषि और पेयजल दोनों प्रभावित हुए हैं। मधुबनी में भी भूजल स्तर 15 फीट से अधिक नीचे चला गया है। जिले के बाबूबरही, खुटौना, लौकही आदि प्रखंड सर्वाधिक प्रभावित हैं। इसके कारण हैंडपंप, कुएं और नलकूप सूख रहे हैं, जिससे पेयजल आपूर्ति और कृषि कार्य बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं।

भागलपुर: कई इलाकों में जलस्तर 130 फीट नीचे

भागलपुर के शहरी इलाकों में भूजल स्तर 130 फीट तक नीचे चला जाता है। सुल्तानगंज, नाथनगर, सबौर, कहलगांव, पीरपैंती, नारायणपुर, बिहपुर, खरीक, इस्माईलपुर, रंगरा आदि प्रखंडों की कई पंचायतों में भूजल स्तर 50 फीट से नीचे है। सहरसा जिले में पानी 70 फीट से अधिक गहराई पर चला गया है। सुपौल के पिपरा प्रखंड के लालपट्टी निवासी 104 वर्षीय लेखनारायण मंडल और रतौली की 102 वर्षीय चन्द्रकला देवी बताती है कि 1960-70 के दशक में जिले में 10 से 12 फीट की गहराई पर ही पानी निकल आता था।

चंपारण में पहले छह फीट पर मिल जाता था पानी

पूर्वी व पश्चिमी चंपारण के कई प्रखंडों में जलस्तर 20 से 22 फीट तक नीचे चला गया है। इससे बड़ी संख्या में हैंडपंप बेकार हो गए हैं। पश्चिम चंपारण में चंद्रावत, कोहड़ा और बांसी जैसी नदियां सिकुड़ चुकी हैं। बेतिया में भूजल स्तर 15-20 फीट तक गिर गया है। गोपालगंज में 50 वर्ष पहले नदियों में सालों भर बहाव रहता था और 6 फीट पर पानी मिल जाता था।

> नदियों को बांधों में समेटने और जल भगाओ नीति के कारण जमीन रिचार्ज नहीं हो रहा है। छोटी नदियों को समेटकर उसका पानी बड़ी नदियों में मिलाया जा रहा है। पहले नदियों का पानी छितराया रहता था तो उनसे किसानों को सिंचाई में सुविधा होती थी और जलस्तर बना रहता था।
>
> **- गजानन मिश्र**, दरभंगा, सेवानिवृत्त अधीक्षण अभियंता (जल संसाधन विभाग में भी रह चुके हैं)

> पहले बारिश के कुछ ही दिनों में पानी भर जाता था। अब पूरी बरसात के बाद भी जलस्तर ऊपर नहीं आता। नदियों के सूखने से भूजल पुनर्भरण कम हुआ है। जिससे पेयजल और सिंचाई संकट बढ़ा है।
>
> **- रामजीवन सिंह**, बांका, बुजुर्ग किसान

> किशनगंज में नदियों का जलस्तर तेजी से गिरा है। जहां 30 वर्ष पहले 20-25 फीट पर पानी मिल जाता था, आज कम से कम 50 फीट तक बोरिंग करनी पड़ती है। भूजल स्तर का नीचे जाना हर साल बढ़ जाता है।
>
> **-श्यामनन्द**, किशनगंज, सेवानिवृत्त शिक्षक

बक्सर में काव नदी के सूख जाने का असर भूजल पर पड़ा है। 50 साल पहले 70 फीट पर पानी मिलता था। अब 150 फीट से अधिक बोरिंग करनी पड़ रही है। गर्मी में काव नदी किनारे छठिया पोखरा की पानी टंकी भरने में तीन–चार घंटे अतिरिक्त समय लग रहा है।

भोजपुर जिले में पिछले दो दशकों में भूगर्भ जलस्तर लगभग छह फीट नीचे चला गया है। सहार के 90 वर्षीय देव कुमार सिंह बताते हैं कि फरवरी के बाद चापाकल जवाब देने लगते हैं। कैमूर जिले में 1970-80 के दशक में 30-35 फीट पर पानी मिल जाता था। अब 150 फीट पर पानी मिलता है। सीवान जिले में भूजल स्तर 15-20 फीट से गिरकर 80 फीट तक चला गया है।

अमेरिका का वेनेजुएला पर हमला राष्ट्रपति मादुरो व पत्नी पकड़े गए

दोनों पर न्यूयार्क में मादक पदार्थों की तस्करी का मुकदमा चलेगा

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 3 जनवरी।

अमेरिका ने शुक्रवार देर रात को वेनेजुएला पर बड़े पैमाने पर हमला किया। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी को पकड़ लिया गया है और देश से बाहर ले जाया गया है। अमेरिका ने इसे एक असाधारण रात्रिकालीन अभियान बताया, जिसकी घोषणा राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने हमले के कुछ घंटे बाद सोशल मीडिया पर की।

ट्रंप ने बताया कि मादुरो और उनकी पत्नी को अमेरिकी युद्धपोत इवो जिमा पर ले जाया गया। युद्धपोत से दोनों को न्यूयार्क ले जाया जा रहा है, जहां उन्हें अभियोजन का सामना करना पड़ेगा।

ट्रंप ने शनिवार को फाक्स न्यूज को दिए एक साक्षात्कार में कहा कि लैटिन अमेरिकी देश वेनेजुएला के राष्ट्रपति को पकड़ने और उन्हें देश से बाहर ले जाने के बाद अमेरिका इस बारे में आगे क्या करना है, इस पर निर्णय लेगा। ट्रंप ने कहा, देश पर शासन कौन करेगा, इस मामले में हम बहुत हद तक शामिल रहेंगे।'

विस्फोट की कई आवाजें सुनाई दीं और कम ऊंचाई पर उड़ान भरते विमान राजधानी काराकस के ऊपर से गुजरे, जबकि मादुरो की सरकार ने तुरंत ही अमेरिका पर नागरिक और सैन्य प्रतिष्ठानों पर हमला करने का आरोप लगाया। वेनेजुएला की सरकार ने इसे 'साम्राज्यवादी हमला' करार दिया और नागरिकों से सड़कों पर उतरने का आह्वान किया। तत्काल यह स्पष्ट नहीं हुआ है कि देश में शासन किसके हाथ में है, और यह भी जानकारी नहीं है कि

बाकी पेज 8 पर

भारत ने अपने नागरिकों को वेनेजुएला की गैर-जरूरी यात्रा से बचने की सलाह दी पेज 5

अमेरिकी युद्धपोत पर वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने जारी की उनकी तस्वीर।

वेनेजुएला में सुरक्षित सत्ता हस्तांतरण तक अमेरिका प्रशासन संभालेगा : ट्रंप

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 3 जनवरी।

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शनिवार को कहा कि वेनेजुएला में सुरक्षित सत्ता हस्तांतरण होने तक अमेरिका उस देश का प्रशासन संभालेगा।

ट्रंप ने कहा कि सत्ता हस्तांतरण होने तक अमेरिका वेनेजुएला का प्रशासन चलाएगा। उन्होंने दावा किया कि अमेरिकी उपस्थिति पहले से ही स्थापित है, हालांकि इस बात के तत्काल कोई संकेत नहीं थे कि अमेरिका देश चला रहा है।

ट्रंप ने कहा, 'हम लातिन अमेरिकी देश की बागडोर तबतक संभालेंगे जब तक हम एक सुरक्षित, उचित और विवेकपूर्ण सत्ता हस्तांतरण नहीं कर लेते।' ट्रंप ने दावा किया कि विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने वेनेजुएला के उपराष्ट्रपति से उस देश को फिर से महान बनाने के बारे में बात की है।

ट्रंप ने 'मार-ए-लागो' में एक संवाददाता सम्मेलन में दावा किया कि यह 'अत्यंत सफल अभियान किसी भी ऐसे व्यक्ति के लिए चेतावनी के रूप में काम करना चाहिए, जो अमेरिकी संप्रभुता को खतरा पहुंचाना चाहता है या अमेरिकी जीवन को खतरे में डालना चाहता है।' हालांकि, वेनेजुएला सरकार की ओर से ट्रंप के दावों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा

अंडमान व निकोबार राजस्व में प्रमुख योगदानकर्ता बनेगा

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 3 जनवरी।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को कहा कि अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह अगले 10 वर्षों में देश के राजस्व में एक प्रमुख योगदानकर्ता बन जाएगा। उन्होंने यह आशा भी व्यक्त की कि दो वर्षों में भारत वर्तमान में चौथे स्थान से आगे बढ़कर विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

शाह अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में 373 करोड़ रुपए की विभिन्न परियोजनाओं के उद्घाटन और शिलान्यास समारोह में बोल रहे थे। केंद्रीय गृह मंत्री ने द्वीपसमूह में अंतरराष्ट्रीय माल ढुलाई परियोजना, तेल अन्वेषण परीक्षण और अन्य विकासात्मक परियोजनाओं की ओर इशारा करते हुए कहा कि द्वीपों के इस समूह को कभी देश के राजस्व पर बोझ माना जाता था। उन्होंने कहा कि लेकिन आज, (प्रधानमंत्री नरेंद्र) मोदी जी की दूरदृष्टि के तहत, मुझे विश्वास है कि अगले 10 वर्षों के बाद, यह द्वीपसमूह देश के राजस्व में एक प्रमुख योगदानकर्ता होगा। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि भारत अब विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है, और मुझे विश्वास है कि दो वर्षों में यह विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

शाह ने कहा कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने 30 दिसंबर 1943 को राष्ट्रीय ध्वज फहराकर अंडमान को मुक्त कराया था और उनकी इच्छा के अनुरूप प्रधानमंत्री मोदी ने उनके सम्मान में अंडमान एवं निकोबार के दो द्वीपों का नाम क्रमशः 'शहीद' और 'स्वराज' रखा है। स्वतंत्र भारत में रहने वाले प्रत्येक भारतीय के लिए यह भूमि एक तीर्थस्थल है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, सेनानियों पर हुए अत्याचार और उनकी आवाज दुनिया तक नहीं पहुंच सकी।

केंद्रीय गृह मंत्री ने यहां नेताजी स्टेडियम में आयोजित कार्यक्रम में कहा कि अब वीर सावरकर का स्मारक और सेलुलर जेल में जलती मशाल दुनिया को बता रही है कि कई शहीदों ने यहां अपने प्राणों की आहुति दी थी। उन्होंने 2023 में प्रधानमंत्री द्वारा अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह के 21 द्वीपों का नामकरण परमवीर चक्र विजेताओं के नाम पर किए जाने का जिक्र करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री ने द्वीपों का नामकरण वीर योद्धाओं के नाम पर करने का कार्य अपने हाथ में लिया है। शाह ने नए आपराधिक कानूनों पर आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन किया और कहा कि आपराधिक न्याय प्रणाली में हो रहे परिवर्तनों को समझने के वास्ते लोगों को ब्रिटिश कानूनों को समाप्त करने के लिए लागू की गईं न्याय संहिताओं पर आधारित प्रदर्शनी अवश्य देखनी चाहिए।

शाह ने अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में 373 करोड़ रुपए की विभिन्न परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। केंद्रीय गृह मंत्री ने द्वीपसमूह में अंतरराष्ट्रीय माल ढुलाई परियोजना, तेल अन्वेषण परीक्षण और अन्य विकासात्मक परियोजनाओं की ओर इशारा करते हुए कहा कि द्वीपों के इस समूह को कभी देश के राजस्व पर बोझ माना जाता था।

उन्होंने कहा कि आज के समय में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह हमारी स्वतंत्रता, संप्रभुता, समुद्री शक्ति और आर्थिक गतिविधियों का केंद्रबिंदु बन गया है। हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अपनी महत्त्वपूर्ण रणनीतिक स्थिति के कारण, इन द्वीपों में समुद्री अर्थव्यवस्था के लिए अपार संभावनाएं और पर्यटन के लिए व्यापक क्षमता है, तथा केंद्र इसकी विरासत को संरक्षित करते हुए पूरे द्वीपसमूह को विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने 'विकसित भारत' अभियान के बारे में कहा कि 2047 में, भारत की स्वतंत्रता के शताब्दी समारोह के दौरान, जब हमारा देश हर क्षेत्र में नंबर एक होगा, तब आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी पर जोर देना बहुत महत्वपूर्ण होगा। शाह ने ग्रेट निकोबार ब्लाक में 'जीरो पाइंट' से 'ईस्ट वेस्ट रोड' तक एक सड़क परियोजना, उपभोक्ता आयोग भवन, 155 बिस्तरों वाले अस्पताल के पहले चरण, 50 बिस्तरों वाली गहन चिकित्सा इकाई, एकीकृत नियंत्रण और कमान सेंटर केंद्र, तथा डीएनए और साइबर फारेंसिक प्रयोगशाला का उद्घाटन किया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा

बुद्ध के पवित्र अवशेष भारत की वंदनीय विरासत का अटूट हिस्सा

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 3 जनवरी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को बुद्ध से जुड़ी वस्तुओं की एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया और कहा कि ये केवल वस्तुएं नहीं हैं बल्कि भारत की वंदनीय विरासत का अटूट हिस्सा हैं। पवित्र पिपरहवा अवशेष वियतनाम, थाईलैंड और रूस समेत उन विभिन्न देशों की यात्रा कर चुके हैं, जहां बौद्धों की आबादी अधिक है।

इन देशों में आस्था व भक्ति की लहरें उठीं और लोग बड़ी संख्या में श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए पहुंचे। भगवान बुद्ध की यह साझा विरासत इस बात का प्रमाण है कि भारत केवल राजनीति, कूटनीति और अर्थव्यवस्था के माध्यम से ही नहीं, बल्कि भावनाओं, आस्था और आध्यात्मिकता के गहरे बंधनों के माध्यम से भी जुड़ा हुआ है।

दक्षिण दिल्ली के किला राय पिथोरा सांस्कृतिक परिसर में 'लाइट एंड लोटस: रेलिक्स आफ द अवेकंड वंस' नामक प्रदर्शनी का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उद्घाटन किया।

मोदी दक्षिण दिल्ली के किला राय पिथौरा सांस्कृतिक परिसर में 'लाइट एंड लोटसः रेलिक्स आफ द अवेकंड वंस' नामक प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने याद दिलाया कि सरकार और गोदरेज समूह के हस्तक्षेप से ये पवित्र अवशेष 125 वर्षों से अधिक समय बाद भारत लाए गए हैं। उन्होंने कहा कि दोनों ने मिलकर पिछले साल मई में हांगकांग में इनकी नीलामी रोकी थी। प्रधानमंत्री ने बौद्ध विद्वानों, राजनयिकों और अन्य अतिथियों की उपस्थिति में कहा कि भारत के लिए, बुद्ध के पवित्र अवशेष केवल अवशेष नहीं हैं, बल्कि हमारी वंदनीय विरासत व सभ्यता का एक अटूट हिस्सा हैं। भारत न केवल भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेषों का संरक्षक है, बल्कि उनकी परंपरा का जीवंत वाहक भी है। उनका जन्मस्थान गुजरात का वडनगर बौद्ध अध्ययन का एक बहुत बड़ा केंद्र रहा है और वाराणसी के पास स्थित सारनाथ, जहां भगवान बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था, उनकी कर्मभूमि है। मोदी संसद में वाराणसी लोकसभा सीट का प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार बनने से पहले, उन्होंने एक तीर्थयात्री के रूप में बौद्ध स्थलों की यात्रा की थी, और प्रधानमंत्री के रूप में, उन्हें दुनिया भर के बौद्ध तीर्थ केंद्रों का दौरा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मोदी ने कहा कि नेपाल के लुम्बिनी, जापान के तो-जी मंदिर और किंकाकु-जी, चीन के शीआन में स्थित 'जायंट वाइल्ड गूज पैगोडा' तथा मंगोलिया के गांडन मठ की अपनी यात्राओं को याद किया। श्रीलंका के अनुराधापुरा में स्थित जया श्री महाबोधि की उनकी यात्रा सम्राट अशोक, भिक्षु महिंदा और संघमित्रा द्वारा स्थापित परंपरा से जुड़ने का एक अनुभव था।

थाईलैंड के वाट फो और सिंगापुर के बुद्ध टूथ रेलिक मंदिर की यात्राओं ने भगवान बुद्ध की शिक्षाओं के प्रभाव के बारे में उनकी समझ को और गहरा किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्होंने बोधिवृक्ष के पौधे विश्व भर के बौद्ध तीर्थ स्थलों तक पहुंचाने का विशेष प्रयास किया। मानवता के लिए उस गहरे संदेश की कल्पना की जा सकती है जब परमाणु बम से तबाह हुए शहर हिरोशिमा के वनस्पति उद्यान में एक बोधि वृक्ष खड़ा होता है। उनकी सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए प्रयासरत है कि बौद्ध विरासत स्वाभाविक रूप से अगली पीढ़ियों तक पहुंचे।

उन्होंने कहा कि वैश्विक बौद्ध शिखर सम्मेलन और वैशाख एवं आषाढ़ पूर्णिमा जैसे अंतरराष्ट्रीय आयोजन इसी विचार से प्रेरित हैं। उनकी सरकार ने पाली भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया है ताकि बुद्ध द्वारा दिए गए उपदेश आम लोगों तक आसानी से पहुंच सकें। इससे धम्म को उसके मूल स्वरूप में समझना और समझाना आसान हो जाएगा और बौद्ध परंपरा से जुड़े शोध को भी मजबूती मिलेगी। पिपरहवा अवशेष प्रारंभिक बौद्ध धर्म के पुरातात्विक अध्ययन में केंद्रीय स्थान रखते हैं। आधिकारिक बयान के अनुसार, ये अवशेष भगवान बुद्ध से सीधे जुड़े सबसे प्राचीन व ऐतिहासिक रूप से अहम हैं। पुरातत्वीय साक्ष्यों के अनुसार पिपरहवा स्थल प्राचीन कपिलवस्तु जुड़ा था, जिसे व्यापक रूप से उस स्थान के रूप में पहचाना जाता है जहां भगवान बुद्ध ने संन्यास लेने से पहले अपना प्रारंभिक जीवन व्यतीत किया था।

फोटो पर्यटन में वृद्धि के कारण संकट | वन्य जीव | इन मेंढकों की खोज सबसे पहले 1878 में हुई थी

विश्व के सात सबसे दुर्लभ गैलेक्सी मेंढकों के मृत होने की आशंका

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 3 जनवरी।

एक अध्ययन के अनुसार, सात गैलेक्सी मेंढकों का एक समूह गायब हो गया है। संभवतः सभी मर गए हैं, क्योंकि कई फोटोग्राफरों ने उनके आवासीय क्षेत्र में धावा बोल दिया। शोरगुल और व्यवहारिक परिवर्तन के कारण उनके भोजन और प्रजनन के चक्र में बाधा आई।

ये मेंढक उंगली के सिरे से भी छोटे होते हैं। ऐसा लगता है मानो इसने ब्रह्मांड को अपने कंधों पर ढो रखा हो। इसकी चमकदार काली त्वचा पर हल्के नीले रंग के धब्बे हैं, जो तारों से जड़े साफ आसमान की तरह दिखते हैं। साथ ही, इस पर नारंगी रंग की धारियां भी हैं, जो चमकदार सुपरनोवा विस्फोटों की याद दिलाती हैं।गैलेक्सी

मेंढक (मेलानोबैट्राकस इंडिकस) दुनिया के सबसे दुर्लभ और आकर्षक उभयचरों में से एक हैं, जो केरल के पश्चिमी घाट में सड़ी हुई लकड़ियों के नीचे ही रहते हैं। हालांकि, यह दुर्लभ प्रजाति अब विलुप्त होती जा रही है।

'अनैतिक वन्यजीव फोटोग्राफी से पश्चिमी घाट की स्थानिक गैलेक्सी मेंढक, मेलानोबैट्राकस इंडिकस बेडडोम , 1878, खतरे में' शीर्षक वाली रपट 17 दिसंबर, 2025 को हेरपेटोलाजी नोट्स पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। इस अध्ययन के लेखक केपी राजकुमार, बेंजामिन टैपले, ज्योति दास और संदीप दास हैं। ये सभी जूलाजिकल सोसायटी आफ लंदन के फेलो हैं। गैलेक्सी मेंढकों की खोज 1878 में हुई थी, लेकिन इनके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है क्योंकि इन्हें ढूंढना मुश्किल है। 2 से 3.5 सेंटीमीटर के आकार वाले ये मेंढक आवाज नहीं निकालते। वैज्ञानिकों का मानना है कि ये अपने धब्बों का इस्तेमाल संवाद करने के लिए करते हैं, जिससे इनकी आबादी और प्रजनन व्यवहार के बारे में मौजूदा आंकड़े अपर्याप्त हैं। इन मेंढकों को पहले ही इंटरनेशनल यूनियन फार कंजर्वेशन आफ नेचर द्वारा विलुप्त होने के कगार पर मौजूद प्रजातियों की सूची में शामिल किया जा चुका है।

मार्च 2020 में राजकुमार और उनकी टीम ने पश्चिमी घाट के एक वन क्षेत्र में सात गैलेक्सी मेंढकों की खोज की। शोधकर्ता केरल वन विभाग की अनुमति से 2019 से इन उभयचरों की निगरानी के कार्यक्रम के तहत इस क्षेत्र का दौरा कर रहे थे। उनकी खोज के तुरंत बाद कोविड - 19 महामारी फैल गई। महामारी के कारण शोधकर्ता उस क्षेत्र में वापस नहीं जा सके, लेकिन जून 2020 और अप्रैल 2021 के बीच बड़ी संख्या में फोटोग्राफर उस स्थान पर पहुंच गए। अध्ययन में कहा गया है, फोटोग्राफर प्रकाशनों और स्थानीय ट्रैकर्स से प्रजाति के सूक्ष्म पर्यावास से परिचित थे, और प्रजाति की खोज करते समय उन्होंने कई लकड़ियों को पलट दिया।

जब राजकुमार और उनकी टीम ने अगस्त 2021 में उस स्थान का दोबारा दौरा किया, तो जिन लट्ठों के नीचे पहले मेंढक पाए गए थे, वे अपनी जगह से हट चुके थे। एक स्थानीय व्यक्ति ने शोधकर्ताओं को बताया कि फोटोग्राफर अक्सर मेंढकों को हाथों से पकड़ते थे और उन्हें अधिक आकर्षक पृष्ठभूमि के लिए काई या अन्य लकड़ियों पर ले जाते थे। अध्ययन के अनुसार, प्रत्येक सत्र में लगभग चार घंटे तक उभयचरों को उच्च शक्ति वाले कैमरा फ्लैश के संपर्क में रखा जाता था। मैराथन फोटोग्राफी सत्रों के दौरान इनमें से दो मेंढकों की मौत हो गई थी। शोधकर्ता नवंबर 2021 और मई 2022 में उस स्थान पर वापस गए, लेकिन उन्हें गैलेक्सी मेंढक फिर कभी नहीं दिखे। उन सभी को मृत मान लिया गया है।

Jansatta Page No-7

उपग्रह आधारित विस्तृत रपट जारी | अध्ययन | सीधा असर करीब 30 करोड़ लोगों पर पड़ेगा

अरावली का एक तिहाई हिस्सा पारिस्थितिकी जोखिम में

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 3 जनवरी।

एक गैर-राजनीतिक पर्यावरण संरक्षण समूह ने अरावली पर्वतमाला पर उपग्रह-आधारित एक विस्तृत अध्ययन रिपोर्ट शनिवार को जारी की जिसमें दावा किया गया है कि इस पर्वत शृंखला का लगभग एक तिहाई हिस्सा गंभीर पारिस्थितिकी जोखिम में है। 'वी आर अरावली' नाम के समूह ने पूरे क्षेत्र में खनन पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की मांग की है।

समूह का दावा है कि यह स्वतंत्र विश्लेषण जीआइएस वैज्ञानिकों की एक टीम द्वारा 'ब्रिस्टल एफएबीडीईएम' (बेयर अर्थ माडल) के आधार पर किया गया है। 'ब्रिस्टल एफएबीडीईएम' एक उन्नत उपग्रह-आधारित माडल है जिसका उपयोग धरती की वास्तविक सतह (पेड़-पौधों, इमारतों आदि को हटाकर) की ऊंचाई मापने के लिए किया जाता है, इसमें एक ऐसा थ्री-डी नक्शा है जो दिखाता है कि जमीन वास्तव में कहां कितनी ऊंची या नीची है-बिना जंगल, मकान या किसी भी मानवीय संरचना के।

'वी आर अरावली' समूह ने मांग की है कि पूरी अरावली पर्वतमाला को पूर्ण संरक्षित क्षेत्र घोषित किया जाए और पहाड़ तथा पर्वत को ऊंचाई के आधार पर अलग करने की व्यवस्था समाप्त की जाए। इसने सभी प्रकार के खनन पर तत्काल रोक लगाने की मांग भी की।

अध्ययन के अनुसार अरावली की कुल पहाड़ी भूमि का 31.8 फीसद हिस्सा 100 मीटर से कम ऊंचाई का है, जिसे मौजूदा सरकारी मानकों के तहत कानूनी संरक्षण से बाहर कर दिया गया है। समूह ने कहा कि सरकार द्वारा बताया गया 0.19 फीसद का आंकड़ा अरावली की वास्तविक भूवैज्ञानिक संरचना को नजरअंदाज करता है। समूह से जुड़े जलवायु वैज्ञानिक एवं पर्यावरण कार्यकर्ता सुधांशु ने कहा कि यह निष्कर्ष गंभीर नीतिगत खामी को उजागर करते हैं। कम ऊंचाई वाली पहाड़ियों को गलत तरीके से बंजर भूमि के रूप में खारिज किया जा रहा है, जबकि यही क्षेत्र राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली के लगभग 30 करोड़ लोगों के लिए भूजल पुनर्भरण और धूल-रेत को रोकने वाली सबसे बड़ी प्राकृतिक दीवार हैं।

अध्ययन के अनुसार इन निम्न-ऊंचाई वाली पहाड़ियों से संरक्षण हटने का सीधा असर करीब 30 करोड़ लोगों पर पड़ेगा। इसके मुताबिक ये पहाड़ियां उन 'खाली जगहों' में स्थित हैं, जहां थार रेगिस्तान पहले से फैल रहा है। इन्हें नष्ट किए जाने से उपजाऊ मैदान भी रेगिस्तान में बदल सकते हैं।

Jansatta Page No-5

अध्ययन | 35 फीसद का कारण स्थानीय स्रोत

वर्ष 2025 में प्रदूषण का 65 फीसद हिस्सा बाहर से आया

नई दिल्ली, 3 जनवरी (भाषा)।

वर्ष 2025 में दिल्ली के वायु प्रदूषण का लगभग 65 फीसद हिस्सा शहर के बाहर से, मुख्य रूप से एनसीआर के अन्य जिलों से आया, जबकि शेष 35 फीसद का कारण स्थानीय स्रोत रहे।

एक अध्ययन में यह दावा किया गया है। 'सेंटर फार रिसर्च आन एनर्जी एंड क्लीन एअर (सीआरईए)' के एक विश्लेषण के अनुसार, 'निर्णय समर्थन प्रणाली' के शीतकालीन आंकड़ों से पता चला कि 2025 में राष्ट्रीय राजधानी में बाहर से आना वाला प्रदूषण, स्थानीय उत्सर्जन से अधिक था। सर्दियों के मौसम के दौरान प्रदूषण के स्रोत के आंकड़ों से पता चलता है कि दिल्ली के पीएम 2.5 प्रदूषण में वाहनों से होने वाले उत्सर्जन का योगदान लगभग आधा है, जो उद्योग, निर्माण और अन्य दहन स्रोतों से होने वाले योगदान से कहीं अधिक था, फिर भी दिल्ली की सीमा के पार का प्रदूषण स्थानीय प्रदूषण में समग्र रूप से प्रमुख कारक बना रहा।

सर्दियों के मौसम के दौरान प्रदूषण के स्रोत के आंकड़ों से पता चलता है कि दिल्ली के पीएम 2.5 प्रदूषण में वाहनों से होने वाले उत्सर्जन का योगदान लगभग आधा है, जो उद्योग, निर्माण और अन्य दहन स्रोतों से होने वाले योगदान से कहीं अधिक था, फिर भी दिल्ली की सीमा के पार का प्रदूषण स्थानीय प्रदूषण में समग्र रूप से प्रमुख कारक बना रहा।

सीआरईए के विश्लेषक मनोज कुमार एन ने कहा कि एनसीआर जिलों और पड़ोसी राज्यों से होने वाला सीमा पार प्रदूषण दिल्ली के वायु प्रदूषण में प्रमुख भूमिका निभाता है। दिल्ली की भौगोलिक स्थिति भी इसे संवेदनशील बनाती है, क्योंकि उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी हवाएं आसपास के क्षेत्रों से प्रदूषित हवा को शहर में लाती हैं। इसलिए, दिल्ली के प्रदूषण संकट से निपटने के लिए केवल शहर-विशिष्ट उपायों के बजाय समन्वित, वायु प्रवाह क्षेत्र स्तर की कार्रवाई की आवश्यकता है।

आंकड़ों से यह भी पता चला कि 2025 की सर्दियों के दौरान दिल्ली में पीएम2.5 के स्तर में पराली जलाने के योगदान में पिछली 2024 की सर्दियों की तुलना में लगभग 10.6 फीसद की भारी कमी आई है। पीएम2.5 सांद्रता के आंकड़ों से पता चला कि बहादुरगढ़ 2025 में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में सबसे बड़ा योगदानकर्ता बनकर उभरा, जहां जनवरी, अक्तूबर, नवंबर और दिसंबर के दौरान उच्चतम सांद्रता दर्ज की गई।

Jansatta Page No-3

हेल्थ | कैंसर की पर्सनल वैक्सीन बीमारी लौटने की आशंका घटाएगी

नया दौरः मर्ज बनने से पहले ही उसे पहचान कर इलाज

प्रो. राम शंकर उपाध्याय
साइंटिस्ट, हार्वर्ड मेडिकल स्कूल

2026 में प्रवेश करते हुए स्वास्थ्य हमारे जीवन का सबसे अहम विषय बन चुका है। यह अब केवल अस्पताल, डॉक्टर और दवाओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि हमारे रोजमर्रा के फैसलों, जीवनशैली और भविष्य की योजनाओं का हिस्सा बन गया है। महामारी, बढ़ती पुरानी बीमारियों और बुजुर्ग होती आबादी के अनुभवों के बाद चिकित्सा एक नए युग में पहुंच चुकी है- जहां लक्ष्य सिर्फ बीमारी का इलाज नहीं, बल्कि बीमारी से पहले उसकी पहचान और एक लंबा, स्वस्थ जीवन है।

जीनोमिक्स, मेटाबॉलिक जांच और एआई आधारित तकनीकें अब यह पहचानने में मदद कर रही हैं कि किसी व्यक्ति को भविष्य में किन बीमारियों का खतरा हो सकता है। कई मामलों में बीमारी के लक्षण दिखने से पहले ही डॉक्टर हस्तक्षेप कर पा रहे हैं। भले ही कुछ जटिल रोग जैसे अल्जाइमर, पार्किंसन या कुछ दुर्लभ आनुवंशिक बीमारियां अब भी चुनौती बनी हुई हैं, लेकिन नई तकनीकों से इनके प्रभाव को धीमा करने और जीवन की गुणवत्ता बेहतर करने की उम्मीद बढ़ी है।

वैक्सीन विज्ञान में भी बड़ा बदलाव आया है। अब वैक्सीन सिर्फ संक्रमण से बचाव तक सीमित नहीं हैं, बल्कि कैंसर और कुछ पुरानी बीमारियों के इलाज में भी उपयोग हो रही हैं। व्यक्तिगत कैंसर वैक्सीन मरीज के ट्यूमर के अनुसार तैयार की जा रही हैं, जिससे बीमारी के दोबारा लौटने की संभावना कम होती है। कैंसर देखभाल अब अधिक व्यक्तिगत और प्रभावी हो गई है। जीन आधारित उपचार, इम्यूनोथेरेपी और सटीक रेडिएशन तकनीकें इलाज को सुरक्षित और सफल बना रही हैं। वहीं स्टेम सेल थेरेपी और लैब में विकसित ऊतकों से भविष्य में अंग प्रत्यारोपण की चुनौतियां भी कम होने की उम्मीद है। सबसे महत्वपूर्ण बदलाव बुढ़ापे को देखने के नजरिये में आया है। अब लक्ष्य केवल उम्र बढ़ाना नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवनकाल बढ़ाना है। कोशिकाओं की सेहत, पोषण और जीवनशैली पर आधारित चिकित्सा बुढ़ापे को एक नियंत्रित प्रक्रिया के रूप में देखने लगी है। कुल मिलाकर, 2026 में स्वास्थ्य जीवविज्ञान, डेटा और तकनीक के संगम से आगे बढ़ेगा।

वो सबकुछ, जो आपके लिए जानना जरूरी है

वो 9 मेडिकल ट्रायल और थेरेपी... जो, इलाज का तरीका बदल देंगी

1. मधुमेह: 15 महीनों में ही 16.6% वजन कम करेगी

न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन के मुताबिक, दो ट्रायल चल रहे। ओरल वेगोवी और काग्रीसेमा के। ये 64 हफ्तों में 16.6% वजन घटाएंगी। इंसुलिन की जरूरत को भी कम करेंगी।

2. हार्ट अटैक: सूजन कम करने वाली दवा बना रहे...

नोवो नॉर्डिस्क ट्रायल कर रही। यह सूजन बढ़ाने वाले IL-6 को ब्लॉक करती है। इससे हार्ट अटैक और स्ट्रोक का खतरा घट सकता है। इसे कोलेस्ट्रॉल ट्रीटमेंट का पूरक माना जा रहा है।

3. गंजापन: बालों के बढ़ने की गति 539% तक

कॉस्मो फार्मा का ट्रायल थर्ड फेज में है। यह स्कैल्प पर काम करती है, शरीर में हार्मोनल साइड-इफेक्ट नहीं होता। गंजेपन की समस्या दूर होगी। बाल बढ़ने की गति 539% तक है।

4. टीबी: वैक्सीन से 50% तक बचाव की उम्मीद है

गेट्स मेडिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट ट्रायल कर रहा। शुरुआती नतीजों में 50% तक बचाव करती दिखी। विशेषज्ञ इसे 100 साल में सबसे उम्मीदभरी वैक्सीन मान रहे। इस साल आएगी।

5. रेबीज: एक वैक्सीन दो बीमारियों से बचाव करेगी

मैरिलैंड यूनिवर्सिटी पहली ड्यूल वैक्सीन बना रही, जो रेबीज और लासा फीवर से बचाएगी। लासा से हर साल 1-3 लाख लोग संक्रमित होते हैं। रेबीज से हर साल 59 हजार मौतें होती हैं।

6. एचआईवी: 75% मरीजों में मर्ज पर नियंत्रण दिखा

रॉकफेलर, इम्पीरियल कॉलेज, ऑक्सफोर्ड यूनि. ट्रायल कर रहीं। ये लॉन्ग-एक्टिंग एंटीबॉडी एचआईवी को कंट्रोल करने में मदद करती हैं। 75% मरीजों में 5 माह वायरस कंट्रोल में रहा।

7. एंग्जायटी: तुरंत राहत देगी, रोज नहीं लेनी होगी

मिनीमेड, विस्टाजेन इसका ट्रायल कर रहीं। पैनिक अटैक में तेज असर। रोज दवा की जरूरत कम। दिमाग के सेरोटोनिन सिस्टम को टारगेट करती है, जिससे चिंता और तनाव घटता है।

8. बच्चों का माइग्रेन: लंबे समय तक अटैक में कमी

यह माइग्रेन के हमलों को ट्रिगर करने में अहम भूमिका निभाने वाले प्रोटीन को टारगेट करती है। अटैक की फ्रीक्वेंसी घटती है। एफडीए से स्वीकृत है। 2026 में भारत में भी एंट्री संभव है।

9. कैंसर: शुरुआती ट्रायल में ट्यूमर की बढ़त धीमी की, साइड इफेक्ट कीमो से कम

कैंसर के लिए 3 नई तकनीकें उभर रहीं- गोली, इम्यूनोथेरेपी, नैनोबोट्स। डाराक्सोमरासिब पैंक्रियाटिक कैंसर के लिए एक गोली है, जो इस कैंसर के अधिकांश मरीजों में पाए जाने वाले KRAS जीन म्यूटेशन को सीधे टारगेट करती है। शुरुआती ट्रायल में इसने ट्यूमर की बढ़त धीमी की है। साइड-इफेक्ट कीमोथेरेपी से कम। Bria-IMT मेटास्टेटिक ब्रेस्ट कैंसर की इम्यूनोथेरेपी है, जो इम्यून सिस्टम को कैंसर पहचानकर उस पर हमला करना सिखाती है। नैनोबॉट्स-ड्रग डिलीवरी अभी रिसर्च स्टेज में है, जिसमें दवा सीधे कैंसर सेल तक जाएगी।

Dainik Bhaskar Page No-3

विराट रामायण मंदिर में 17 को सबसे बड़ा शिवलिंग स्थापित होगा

महाबलीपुरम से 45 दिन में गोपालगंज पहुंचा, कल केसरिया के लिए रवाना होगा, अभी सिर्फ शिवलिंग को स्थापित किया जाएगा

सिटी रिपोर्टर | पटना

पूर्वी चंपारण में बन रहे विराट रामायण मंदिर में दुनिया के सबसे बड़े शिवलिंग को 17 जनवरी को पूरे विधि-विधान के साथ स्थापित किया जाएगा। इस मौके पर हेलीकॉप्टर से पुष्प वर्षा कराने की तैयारी है। महावीर मंदिर न्यास के सचिव सायण कुणाल ने बताया कि अभी सिर्फ शिवलिंग को स्थापित किया जाएगा। इसकी प्राण-प्रतिष्ठा मंदिर के साथ होगी। यह शिवलिंग शनिवार को तमिलनाडु के महाबलीपुरम से गोपालगंज पहुंचा है. अभी यह शिवलिंग यूपी के रास्ते बिहार के गोपालगंज में बलथरी चेकपोस्ट के पास है। शिवलिंग के चेकपोस्ट पर पहुंचते ही इसे देखने और पूजा करने वाले श्रद्धालुओं का हुजूम उमड़ पड़ा. यह शिवलिंग महाबलीपुरम से 45 दिनों की यात्रा के बाद बिहार की सीमा में दाखिल हुआ है। 5 जनवरी यानी सोमवार को गोपालगंज से इसे लेकर ट्रक रवाना होगा। इसे खजुरियां-हुसैनी के रास्ते केसरिया स्थित विराट रामायण मंदिर ले जाएगा। इस शिवलिंग को एक ही पत्थर से तराश कर बनाया गया है।

33 फीट लंबा और 210 मीट्रिक टन वजन

इस शिवलिंग का निर्माण महाबलीपुरम के पट्टीकाडु गांव में बीते 10 साल से हो रहा था। इसे एक ही ब्लैक ग्रेनाइट मोनोलिथ पत्थर से तराशा गया है। इसकी लंबाई 33 फीट और वजन 210 मीट्रिक टन है। इस पर 1008 सहस्त्रलिंगम तैयार किया गया है। यह 21 नवंबर को महाबलीपुरम से 96 चक्के वाले ट्रक से विराट रामायण मंदिर के लिए रवाना हुआ था।

मंदिर के गर्भ गृह की पाइलिंग का काम पूरा

महावीर मंदिर न्यास समिति विराट रामायण मंदिर को बना रहा है। मंदिर का प्रवेश द्वार, गणेश स्थल, सिंह द्वार, नंदी, शिवलिंग, गर्भ गृह की पाइलिंग का काम पूरा हो गया है। यह मंदिर 1080 फीट लंबा और 540 फीट चौड़ा होगा। इसमें कुल 18 शिखर और 22 मंदिर होंगे। मुख्य शिखर की ऊंचाई 270 फीट, चार शिखर की ऊंचाई 180 फीट, एक शिखर की ऊंचाई 135 फीट, आठ शिखर की ऊंचाई 108 फीट और एक शिखर की ऊंचाई 90 फीट होगी। यह मंदिर आचार्य किशोर कुणाल का ड्रीम प्रोजेक्ट है।

अभी सबसे ऊंचे शिवलिंग

27 फीट का शिवलिंग है वृहदेश्वर मंदिर में | **20** फीट का शिवलिंग है भोजपुर मंदिर में

Dainik Bhaskar Page No-7

इस साल 16 बच्चियों को अमरीकी अभिभावकों ने गोद लिया, राज्य में 42 विशिष्ट दत्तक ग्रहण संस्थान चल रहे

अमेरिका में बच्चों को गोद लेने की प्रक्रिया जटिल, इसलिए वहां से दंपती बिहार की तरफ रुख कर रहे

भास्कर न्यूज | पटना

अमरीकी दंपती भारत आकर बिहार के बच्चों को गोद ले रहे हैं। इस साल 16 बेटियों को गोद लिया गया है। अमेरिका में जन्म दर कम और गोद लेने की प्रक्रिया जटिल है। इस कारण वहां के लोग बच्चों की चाह में यहां का रुख कर रहे हैं। पांच साल में 150 बच्चों को विदेश के दंपतियों ने गोद लिया है। इनमें 90 प्रतिशत बच्चियां हैं। इनमें भी 90 फीसदी दिव्यांग हैं, जिन्हें अमेरिका, इटली, न्यूजीलैंड और जर्मनी के लोगों ने गोद लिया है। वहीं, पिछले पांच साल में 666 बच्चों को गोद दिया गया। इनमें भी 60 से 70 बेटियां हैं। इस साल अबतक 87 बच्चों को गोद दिया गया है। इसमें 28 लड़के और 59 लड़कियां हैं। 19 बच्चों को विदेशी दंपतियों ने गोद लिया है, जिनमें 16 बच्चियों को अमेरिका के माता-पिता ने गोद लिया है।

बिहार में चार कैटेगरी में गोद दिए जाते हैं बच्चे

बिहार किशोर न्याय (बालकों की देखरेख एवं संरक्षण) नियमावली 2017 एवं दत्तक ग्रहण विनियम 2022 में बदलाव के तहत अब चार कैटेगरी में बच्चों को गोद दिया जाता है। पहले तीन ही कैटेगरी में गोद दिया जाता था। बच्चों को अधिक से अधिक समय तक माता-पिता का साथ मिले, इसलिए अब गोद देने की अधिकतम उम्र सीमा घटा दी गई है। पहले 45 साल तक के एकल माता या पिता को गोद दिया जाता था, अब एकल माता या पिता की उम्रसीमा 40 साल कर दी गई है। वहीं दोनों को मिलाकर भी उम्रसीमा घटाकर 90 से 85 साल किया गया है। गोद देने की न्यूनतम उम्र सीमा 25 साल है। इसके साथ गोद देने की राशि भी बढ़ा दी है। अब 40 हजार से 50 हजार रुपए गोद लेने के लिए राशि देनी पड़ेगी। राज्य में 28 विशेष दत्तक ग्रहण संस्थान हैं।

बच्चों को गोद लेने की प्रक्रिया

बच्चों को गोद लेने के लिए माता-पिता को missionvatsalya.wcd.gov.in वेबसाइट पर पैन नंबर के साथ आवेदन करना होता है। इसके बाद सभी आवश्यक दस्तावेज आवेदक द्वारा निर्धारित समय-सीमा में ऑनलाइन अपलोड किए जाते हैं। ऑनलाइन आवेदन के वक्त बच्चे की च्वाइस की उपलब्धता होने पर मिलान प्रक्रिया के तहत, दत्तक ग्रहण पूर्व पोषण-देखरेख में गोद देने की प्रक्रिया, संबंधित विशिष्ट दत्तक ग्रहण संस्थान में गठित दत्तक ग्रहण कमेटी द्वारा, कागजात की जांच एवं गोद लेने वाले व्यक्ति की सहमति वचनबंध में लेते हुए बच्चे को सुपुर्द किया जाता है। इसके बाद संस्थान की ओर से जिला बाल संरक्षण इकाई के माध्यम से जिलाधिकारी के न्यायालय में याचिका दायर की जाती है। जिलाधिकारी द्वारा दत्तक ग्रहण आदेश जारी करने के उपरांत, दत्तक माता-पिता अथवा एकल अभिभावक का नाम शामिल करते हुए बच्चे का जन्म प्रमाण-पत्र निर्गत किया जाता है। संस्थान द्वारा दत्तक ग्रहण के पश्चात दो वर्ष की अवधि तक फॉलो-अप किया जाता है।

पिछले 5 साल में गोद दिए गए बच्चे

- वर्ष 2020-21 : 110
- वर्ष 2021-22 : 81
- वर्ष 2022-23 : 151
- वर्ष 2023-24 : 170
- वर्ष 2024-25 : 154

भास्कर एक्सपर्ट

सुनील कु. झा, बाल संरक्षण विशेषज्ञ

अमेरिका जैसे विकसित देशों में स्वास्थ्य सुविधाएं भारत से बेहतर हैं। जेंडर असमानता कम है। लेकिन उन देशों में गोद लेने की प्रक्रिया काफी जटिल है। वहां की जन्मदर काफी कम है। वहां कोई भी दंपती चाहकर भी गोद नहीं ले पाते हैं। इसके विपरीत यहां भारत में गोद लेने की प्रक्रिया काफी सरल है। अब डीएम स्तर पर गठित कमेटी के माध्यम से बच्चों को गोद दिया जा सकता है। वहीं, एक तर्क यह भी है कि भारत की बेटियों में अच्छे संस्कार के साथ समृद्ध संस्कृति भी मिल जाती है, इसलिए अमेरिका जैसे देशों के लोग बिहार की बेटियों को गोद लेने में अधिक दिलचस्पी दिखाते हैं।

Dainik Bhaskar Page No-6

स्त्री-चेतना का आत्मविश्वासी स्वर

कविता में उतरता हुआ स्त्री-अनुभव कभी शब्दों की सीमाओं में बंधकर नहीं रह जाता, वह समय, स्मृति और संवेदना से निर्मित एक जीवंत साक्ष्य का रूप लेता है। देवयानी भारद्वाज की 'उसकी इच्छाओं में बारिश थी' इसका सशक्त उदाहरण है, जो बिना किसी उद्घोष या आग्रह के, अत्यंत सहजता से स्त्री के जीवन-सत्य हमारे सामने रख देती है। यह काव्य-संग्रह किसी एक स्त्री की कथा कहते-कहते अनेक स्त्रियों की साझा चुप्पियों, इच्छाओं और प्रतिरोध को स्वर देता है। इनका स्वर ऊंचा नहीं, बल्कि भीतर तक उतर जाने वाला धीमा और स्थिर है।

संग्रह की पहली कविता 'कामना का रंग' प्रेम और कामना के बीच मौजूद उस सूक्ष्म, किंतु गहरे अंतर को अत्यंत संवेदनशील ढंग से उद्घाटित करती है। 'उम्मीद', 'जुगनू', 'यहां से देखो' जैसी कई कविताएं कम शब्दों में जीवन की नाजुक सच्चाइयों और भीतर तक उतर जाने वाली गहरी बेचैनी को रचती हैं। एक संवेदनशील कविता 'मेरे घर की औरतें' में स्त्रियों की एक लंबी परंपरा सामने आती है, घर की बुआ, मामी, मौसी, दादी, नानी, बहन और चाची, जिनके जीवन अलग-अलग होते हुए भी एक ही सामाजिक ढांचे में ढले हुए हैं।

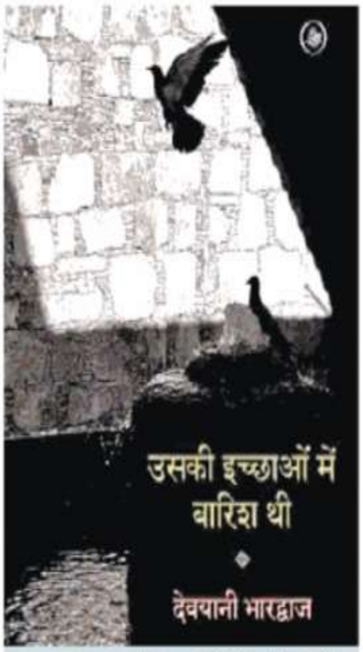

पुस्तक : उसकी इच्छाओं में बारिश थी
लेखिका : देवयानी भारद्वाज
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन
मूल्य : 250 रुपये

यह काव्य-पुस्तक ऐसी स्त्री-चेतना को स्वर देती है, जो न्याय की आकांक्षा रखती है, पर पितृसत्तात्मक समाज की सीमाओं को भी गहराई से समझती है। इन कविताओं में निराशा नहीं, बल्कि विवेक से उपजी हुई आशा है, जो आंख मूंदकर भरोसा नहीं करती, बल्कि यथार्थ को स्वीकारते हुए आगे बढ़ती है। देवयानी की कविता का केंद्रीय स्वर है- गलती करने की स्वतंत्रता। वही स्वतंत्रता, जो आज की स्त्री को परिभाषित करती है। ठंडी हवा की चाह में रेगिस्तान की आंधी में खिड़की खुली छोड़ देना और बाद में रेत की परतों या खोई हुई चीजों की तलाश को स्वीकार करना, इसी नई स्त्री की चेतना का संकेत है, जो जोखिम से डरती नहीं और जीवन को पूरे साहस के साथ जीना चाहती है। प्रेम के टूटने की धीमी ध्वनि, खेतों में किसान की मेहनत, मां के मुख से बेटी को दिया गया पितृसत्ता का पाठ जैसे अनेक अनुभव मिलकर इस संग्रह को एक गहरे, सघन और विश्वसनीय भावलोक में रूपांतरित कर देते हैं। इन कविताओं के सपनों में स्थायित्व से अधिक गति है, बादलों की तरह, जो आते हैं, बरसते हैं और धरती को नई सांस दे जाते हैं। एक ऐसी पुस्तक, जो सहेली की तरह है, न उपदेश देती है, न सांत्वना, बस साथ चलती है और मन में लंबे समय तक ठहरती है।

Dainik Jagaran Page No-9

भारतीय समाज–संस्कृति का चिंतन

मुकेश चौरसिया

बदलते परिवेश में संस्कृति और विज्ञान का चिंतन इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि प्रगति और विकास की अंधी दौड़ ने मानव को अपने सांस्कृतिक धरातल के बारे में सोचने को मजबूर कर दिया है। बैद्यनाथ सरस्वती की पुस्तक 'शास्त्र, समाज, संस्कृति और विज्ञान' में भारतीय समाज और संस्कृति को शास्त्रीय स्रोतों एवं विदेशी व्याख्याओं से खोजने का प्रयास किया गया है। पुस्तक में बताया गया है कि संसार की सभी विषमताओं को पाश्चात्य मानव-विज्ञान ने पवित्र और अपवित्र की दो श्रेणियों के माध्यम से समझाया है, लेकिन भारतीय दर्शन में पवित्र और अपवित्र के बीच सातत्य है। पुस्तक के लेखक ने इसे समुद्र मंथन की सृष्टि प्रक्रिया में शिव द्वारा विषपान से हुए उनके नीले कंठ की उपमा दी है। इन दो असंयोज्य श्रेणियों को आत्मसात करती काशी की संस्कृति को नीलकंठ संस्कृति का श्रेष्ठ उदाहरण माना है।

भारत में धर्म और संस्कृति की परिभाषाएं अलग हैं। अंग्रेजी में प्रचलित शब्दों कल्चर या रिलीजन से भारतीय संस्कृति और धर्म को समझा नहीं जा सकता। भारत में संस्कृति की व्यापक परिधि में धर्म, शिक्षा और संस्कार समाहित हैं। मानव विज्ञानियों ने संस्कृति को धर्म से अधिक व्यापक माना है। संस्कृति के इस पहलू को देश के मनीषियों ने अच्छी तरह समझा और धर्माचरण में

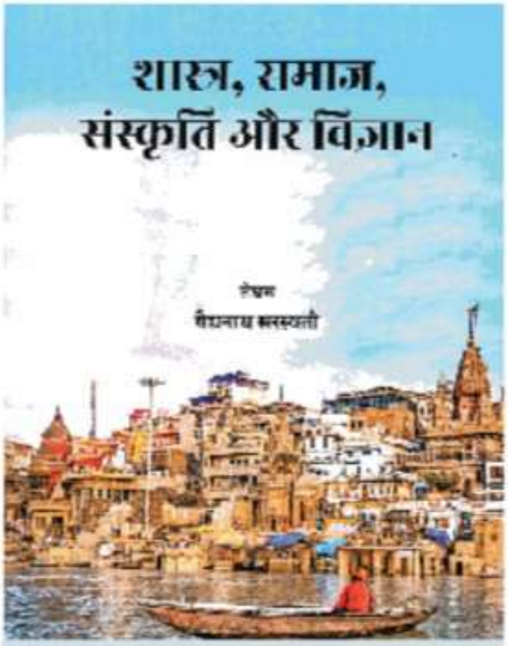

पुस्तक : शास्त्र, समाज, संस्कृति और विज्ञान
लेखक : बैद्यनाथ सरस्वती
प्रकाशक : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र
मूल्य : 400 रुपये

लोकाचार व देशाचार के महत्व को हमेशा स्वीकार किया है। कालांतर में यह उदारता समाप्त हो गई और मध्यकालीन भारत में धर्म संस्कृतियों के प्रति असहिष्णु हो उठा। पुस्तक में 14 अध्यायों के माध्यम से भारतीय समाज एवं संस्कृति को विभिन्न स्रोतों के आधार पर बताने की कोशिश की गई है। इस संकलन में संस्कृति, धर्म, परंपरा एवं परिवर्तन के विभिन्न आयामों, काशी की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, हिंदू धर्म और कबीर एवं महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं को परखा गया

जीवन का सुहाना सफर

ब्रजबिहारी

हर जीवन की एक कहानी होती है। कोई उसे लिख देता है, कोई नहीं। किसी का लिखा उसे प्रसिद्ध कर देता है और किसी की रचना उसके मन में उड़ती-घुमड़ती रह जाती है। कोई अपने भोगे हुए यथार्थ और दूसरों के जीवनानुभवों के सम्मिश्रण में कल्पना की ऐसी छौंक लगा देता है कि उसकी रचना सार्वभौम होकर अमर हो जाती है। पत्रकार, स्तंभकार और लेखिका पल्लवी अय्यर की नई पुस्तक 'ट्रैवल्स इन द अदर प्लेस' आठ निबंधों का एक ऐसा संग्रह है, जो उनके व्यक्तिगत जीवन का ब्योरा होते हुए भी सार्वजनिक अपील समेटे हुए है। उनका यह सफरनामा साहसिक और चित्ताकर्षक है, जो पाठक को निरंतर प्रयास करते रहने और कभी हार न मानने के लिए प्रेरित करता है।

पत्रकारिता के पेशे में चीन, बेल्जियम, जापान, इंडोनेशिया और स्पेन सहित आठ देशों में काम करने और वहां रहने के दौरान लेखिका जिन प्रश्नों से जूझती रहीं, उनके उत्तर उन्होंने इस पुस्तक में देने की कोशिश की है। पाठक भी उनके इस निष्कर्ष से सहमत होंगे कि जीवन के सफर का हर पड़ाव सुहाना हो सकता है, लेकिन इसके लिए जरूरी है कि आप उस मंजिल को उसके स्वरूप में स्वीकार करें, ना कि इस बात की शिकायत करते रहें कि ऐसा नहीं होता तो क्या होता।

किसी एक देश में जन्म लेना और वहां की सभ्यता-संस्कृति से एकाकार होने के बाद किसी दूसरे देश में जाकर रहना कितना मुश्किल होता है, यह प्रस्तुत पुस्तक को पढ़ने के बाद ही समझ में आएगा। खासकर चीन जैसे देश में, जहां की भाषा सीखना और समझना अत्यंत दुरूह है। एक ही शब्द को स्वर की अलग-अलग ऊंचाई पर उच्चारित करने से अर्थ बदल जाता है। चीनी भाषा में टैंग का अर्थ सूप भी होता है व शुगर भी, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उसका उच्चारण किस स्वर में किया गया है।

लेखिका ने पूरी पुस्तक में यात्रा को एक रूपक के रूप में प्रयोग किया है। जीवन की यात्रा अनंत है। हम रहें या न रहें, यह चलती रहती है। भौतिक जगत में एक देश से दूसरे देश की यात्रा करने के लिए पासपोर्ट और वीजा की आवश्यकता होती है, लेकिन दूसरी दुनिया में जाने के लिए किसी पासपोर्ट की आवश्यकता नहीं पड़ती है। लेखिका को इसका अनुभव तब हुआ, जब उन्हें डाक्टरों ने बताया कि उन्हें स्तन कैंसर है। इस जानलेवा बीमारी से संघर्ष के दौर में लेखिका को किशोर वय में पढ़ी सुसान सोनटैग की पुस्तक 'इलनेस ऐज मेटाफर' की भी याद आई,

यह पुस्तक लेखिका द्वारा की गई कई देशों की यात्रा के अनुभवों के साथ-साथ भारत के समाज, शिक्षा व्यवस्था और राजनीति पर भी पैनी दृष्टि डालती है...

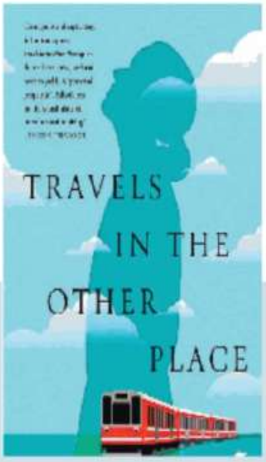

पुस्तक : ट्रैवल्स इन द अदर प्लेस
लेखिका : पल्लवी अय्यर
प्रकाशक : ट्रांक्वेबार (वेस्टलैंड बुक्स)
मूल्य : 599 रुपये

जिसमें सोनटैग ने इस नश्वर संसार के सभी प्राणियों को यह स्मरण कराया है कि हम अपनी प्रतिभा व संसाधनों के दम पर भले ही दुनिया के सबसे ताकतवर देश का पासपोर्ट हासिल कर लें, लेकिन एक दिन सभी को वहीं जाना है, जहां के लिए किसी पासपोर्ट की जरूरत नहीं होती।

लेखिका के अनुसार पासपोर्ट की व्यवस्था वास्तव में भेदभावकारी है। इसी दुनिया में कुछ ऐसे देश हैं, जहां का पासपोर्ट अगर आपके पास है तो कई देशों की यात्रा के लिए वीजा की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। मसलन, अमेरिकी पासपोर्टधारकों को 180 देशों में बिना वीजा के प्रवेश मिल जाता है या उन्हें वहां पहुंचने पर वीजा मिल जाता है, जबकि भारत जैसे देशों के पासपोर्ट को पश्चिमी देशों या अमेरिका में तीसरी दुनिया की नजर से देखा जाता है।

इस पुस्तक में लेखिका ने विभिन्न महादेशों में फैले कई देशों की यात्रा के अनुभवों के साथ-साथ भारत के समाज, शिक्षा व्यवस्था और राजनीति पर भी पैनी दृष्टि डाली है। हो सकता है कि इस संदर्भ में लेखिका के कई निष्कर्षों से आपकी असहमति हो, लेकिन उल्लेखनीय है कि उन्होंने इस मामले में राजनीतिक दलों के बीच कोई भेद नहीं किया है।

Dainik Bhaskar Page No-9

स्पोर्ट्स | क्रिकेट वर्ल्ड कप समेत कई खेलों में भागीदारी, दो टूर्नामेंट की मेजबानी भी

सिर्फ क्रिकेट नहीं, 9 बड़े वर्ल्ड इवेंट्स में रहेंगे मेडल के दावेदार

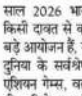

शारदा उगरा
स्पोर्ट्स एक्सपर्ट

साल 2026 भारतीय खेल प्रशंसकों के लिए किसी दावत से कम नहीं है। 2026 में ऐसे कई बड़े आयोजन हैं, जहां भारतीय खिलाड़ी और टीमें दुनिया के सर्वश्रेष्ठ से सीधा मुकाबला करेंगी। एशियन गेम्स, वर्ल्ड चेस चैम्पियनशिप और दो टी20 क्रिकेट वर्ल्ड कप इस साल की पहचान होंगी। उम्मीद यही है कि भारतीय खेल रिकॉर्ड, पदक, जीत और वर्ल्ड टाइटल के रूप में नए मुकाम छुए। क्रिकेट के लिहाज से यह साल ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ शुरू हो रहा है। पहली बार भारत की पुरुष और महिला टीमें एक साथ वर्ल्ड चैम्पियन हैं, भले ही फॉर्मेट अलग हों। पुरुष टीम को भारत और श्रीलंका में होने वाले टी20 वर्ल्ड कप में खिताब बचाने की चुनौती मिलेगी, जबकि महिला टीम इंग्लैंड में होने वाले टी20 वर्ल्ड कप में दुर्लभ डबल जीत का प्रयास करेगी। टेस्ट क्रिकेट में पुरुष टीम से खोई हुई चमक वापस पाने की उम्मीद रहेगी। 2027 वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल की राह कठिन है, लेकिन न्यूजीलैंड दौरे पर बेहतर प्रदर्शन इस दिशा में अहम कदम हो सकता है। यह साल नए चैम्पियनों के उभार और पुराने सितारों की वापसी का भी संकेत देता है। एथलेटिक्स में नीरज चोपड़ा से लेकर बैडमिंटन की उभरती पीढ़ी तक, भारतीय खेल एक नए दौर में प्रवेश करता दिख रहा है। साथ ही डोपिंग, संघों के पेशेवर प्रबंधन और फुटबॉल में मची उथल-पुथल से निपटने पर पर ध्यान देना जरूरी है।

इस साल ये 9 बड़े इवेंट्स... आंकड़ों में जानिए हमारी दावेदारी कितनी मजबूत

- जिम्बाब्वे-नामीबिया में जनवरी में यूथ वर्ल्ड कप, भारत 5 बार विजेता। सर्वाधिक 78% जीत, पिछले 5 फाइनल खेले। वैभव सूर्यवंशी बड़ा चेहरा।
- फरवरी में भारत टी20 वर्ल्ड कप में उतरेगा। गत चैम्पियन है। घर पर रिकॉर्ड 68% जीत के साथ खिताबी दावेदार।
- जून में महिला टी20 वर्ल्ड कप। भारत वनडे चैम्पियन है। 2025 में टी20 में दूसरा बेस्ट 143.92 स्ट्राइक रेट रहा।
- पुरुष हॉकी टीम अगस्त में वर्ल्ड कप में उतरेगी। 1975 के बाद सूखा तोड़ने की उम्मीद। टॉप-10 रैंकिंग में है, पिछले साल एशिया कप चैम्पियन बनी थी।
- अगस्त में 17 साल बाद वर्ल्ड बैडमिंटन चैम्पियनशिप की मेजबानी। वर्ल्ड नंबर-3 जोड़ी सात्विक-चिराग से बड़ी उम्मीदें।
- शतरंज ओलिंपियाड में डबल गोल्ड डिफेंड करेंगे। 'कैंडिडेट्स' जीतने पर वर्ल्ड फाइनल प्रागी बनाम गुकेश संभव।
- अक्टूबर में कुश्ती वर्ल्ड चैम्पियनशिप बहरीन में। भारत 23 मेडल जीता है, जिसमें 2018 के बाद 12 आए हैं। गैर ओलिंपिक वर्ष, इसलिए कम प्रतिस्पर्धा।
- एशियन गेम्स सितंबर में जापान में। पिछली बार 107 मेडल जीतकर बेस्ट प्रदर्शन। एथलेटिक्स, शूटिंग में उम्मीद।
- चीन में वर्ल्ड वेटलिफ्टिंग इवेंट। ओलिंपिक क्वालिफायर। यूथ रिकॉर्ड तोड़ चुकीं कोयल, चानू से उम्मीदें।

रोमांच: आईपीएल में 300+ की उम्मीद : आईपीएल में पहली बार 300+ स्कोर की संभावना है। पिछले सीजन रिकॉर्ड 52 बार 200+ पार हुए। औसत स्ट्राइक रेट 152.39 रिकॉर्ड स्तर पर है। टीम इंडिया भी टी20 वर्ल्ड कप में ऐसा कर सकती है।

Dainik Bhaskar Page No-2

खरी खरी

आजकल की दिनचर्या

शरद उपाध्याय

रोजाना की तरह आज भी सूर्योदय हुआ। नींद तो मेरी बहुत ही पहले खुल गई थी, पर अभी स्वर्गमय स्थिति से नर्कमय स्थिति में जाने के लिए हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। परंतु कहा गया है कि हर स्थिति का अंत होता है, सो उठना ही पड़ा। सबसे पहले रजाई में से मुंह निकाला। लेकिन सर्द हवा के कारण उसे पुनः रजाई में देना पड़ा। वैसे कब तक रजाई में बना रहता, सो रजाई से निकलकर मैं धरातल पर आ गया। घर का फर्श बर्फ की चट्टानों सा प्रतीत हो रहा था। बाहर देखा तो सूरज भी मेरी तरह ठिठुर रहा था।

दो-तीन चाय पीकर शरीर इस हालत में आया कि वह थोड़ा हिल सके। इस बीच श्रीमतीजी का नहाने संबंधी प्रस्ताव आया, जिसे मूल्यवान जल का महत्व समझाते हुए नकार दिया। मैं अपनी इस उपलब्धि पर बहुत खुश था, लगातार सात दिन न नहाकर मैंने कितने अमूल्य जल की बचत की थी। नए वर्ष में कम से कम एक सप्ताह जल की बचत तो की ही जा सकती है।

कुछ देर बाद श्रीमतीजी नाश्ता लेकर आईं। सर्दी के दिनों में डाइनिंग-रूम वीरान पड़ा रहता है। बेडरूम का कार्यभार अधिक बढ़ जाता है। नाश्ते के बाद एक नींद लेकर मैंने खाना भी वहीं खाया। आफिस का समय निकले एक घंटा बीत चुका था। श्रीमतीजी दुश्मन की तरह मुझे बार-बार आफिस की याद दिला रही थीं। क्या करूं, मजबूरी में जाना ही पड़ा।

कई लेयर के कपड़े डालकर मैं आफिस की ओर चल पड़ा। मुझे लग रहा था कि बुलेटप्रूफ कपड़े ऐसे ही होते होंगे। अगर गोली भी घुसेगी तो शरीर को नहीं छू पाएगी। आफिस पहुंचा तो दो घंटे लेट हो चुका था। चपरासी बोला, 'क्या बात है बाबूजी, आज जल्दी आ गए। अभी तो कोई नहीं आया।'

मुझे पत्नी पर गुस्सा आ गया। इतनी जल्दबाजी भी ठीक नहीं है। ये शर्मा और वर्मा तो बिस्तर में दुबके होंगे और यहां हम सर्दी में परेशान हो रहे हैं। हम भी कोई कम थोड़े ही हैं। मैंने चपरासी को आवाज लगाई और कुर्सी धूप में निकालने को कहा। चपरासी निरपेक्ष भाव से मुझे देखता रहा। शायद आवाज उसके कानों तक पहुंचने से पहले जम गई थी। लंच टाइम तक काफी लोग आफिस आ चुके थे। कुछ लोग काम के लिए आए भी, उन्हें शीतलहर खत्म होने के बाद आने को कहा।

जाने कैसे आफिस में टाइम पास होता है, यह मैं ही जानता हूं। घड़ी का कांटा पता नहीं क्यों धीरे चलता हुआ महसूस होता है। यहां तो सबकुछ चाय के ही सहारे चल रहा है। सूरज छिपने से पहले ही पक्षी घोंसलों की ओर चल दिए। सो मैं भी झट से घर की ओर चल दिया। हालांकि छुट्टी में अभी समय बाकी था। लेकिन शाम होते-होते जो धूप गायब हो जाती है, उसके बाद तो लगता है मैं मोटरसाइकिल की जगह पैदल ही घर चल जाऊं। अभी तो किसी तरह सूरज की हल्की किरणों को देखकर घर की ओर चलने की हिम्मत मिल जाती है।

किसी तरह घर पहुंचा और शाम की चाय पीने के बाद फिर से बिस्तर में घुस गया। फिर खाने की बात होने लगी। बातों की शुरुआत स्वास्थ्य निखारने की बातों से होती है। हरी सब्जियों से प्रारंभ होती हुई फिर नाना प्रकार के पराठों पर खत्म हो जाती है। सो इसी तरह चल रहा है। ठंड के मारे सारा देश कांप रहा है। सारा काम ठप पड़ा है, कोशिश कर रहे हैं, पर हाथ है कि बाहर निकलने का नाम ही नहीं लेते। क्या कह रहे हैं, आप कोशिश करके देखेंगे। अरे रहने दो, थोड़ी गर्मी आ जाने दो, क्यों परेशान हो रहे हो। थोड़े दिन काम नहीं करेंगे तो कौन सा पहाड़ टूट पड़ेगा। सो बस बैठे हैं।

(लेखक व्यंग्यकार हैं)

Useful For Mains

भीड़ की अदालत में गलती

जनसत्ता सरोकार

कुछ चीजें गलत होती हैं, और कुछ चीजों पर शोर होता है। जिन चीजों पर शोर होता है, जरूरी नहीं कि वे गलती के अनुपात में हो। इंटरनेट के इस दौर में सबसे बड़ा आघात निजता पर हुआ है। कई मसले ऐसे होते हैं, जो निजी तौर पर व्यवहार का हिस्सा होते हैं। अगर उससे दिक्कत होती भी है, तो उसके दायरे में आने वाले लोगों से बातचीत कर उसे सुलझाया जा सकता है। अगर उन्हीं मसलों को सार्वजनिक मंच पर डाल दिया जाता है, तो वे शोर के शिकार हो जाते हैं। ऐसे में किसी के लिए फैसला लेना मुश्किल होता है कि वह क्या करे। वह शोर की परवाह करे या अपने निजी रिश्तों की परवाह करे, जो भावनात्मक तौर पर उन पर निर्भर हैं।

पिछले साल एस्ट्रोनामर कंपनी के मानव संसाधन विभाग की पूर्व प्रमुख क्रिस्टीन कैबट ने 16 जुलाई 2025 में हुए कोल्डप्ले विवाद को लेकर अपनी बात सामने रखी है। कोल्डप्ले के समारोह के दौरान कैमरे ने कैबट को उनकी कंपनी के प्रमुख अधिकारी एंडी बायरन के साथ नजदीक होते दिखाया था। समारोह के दौरान ही यह वीडियो एक उपयोगकर्ता ने सोशल मीडिया पर डाल दिया

मार्गदर्शन

जो वायरल हो गया। वीडियो ने नैतिकता को लेकर बहस छेड़ दी। कैबट और उनके अधिकारी की तस्वीर दुनिया भर के लोगों के फोन में थी। अब दुनिया भर के लोग क्रिस्टीन के लिए न्यायाधीश बने हुए थे। वे क्रिस्टीन को दुनिया की गंदी महिला का खिताब देने वाले संदेश भेज रहे थे।

एक स्त्री के तौर पर क्रिस्टीन के लिए उस वक्त का माहौल बोझिल बन गया था। यह उनकी कंपनी, दोस्तों, परिवार, शहर या देश तक का मामला नहीं रह गया था। दिनभर आते अनगिनत फोन और घर के बाहर जुटे 'पैपराजी'। सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहे थे क्रिस्टीन के दो बच्चे और तलाक की प्रक्रिया से गुजर रहे उनके पति। उस वक्त क्रिस्टीन ने अपने हिस्से में चुप्पी को चुना और कंपनी की साख बचाने के लिए बैरन और क्रिस्टीन दोनों ने इस्तीफा दे दिया। उस वक्त क्रिस्टीन इस अपराध बोध में थीं कि मैंने अपनी जिंदगी से जुड़े अच्छे लोगों को दुखी कर दिया।

बीते साल के अंत में क्रिस्टीन ने उस बुरे दौर के अनुभव को सामने रखा है। उस दिन, समारोह में उनके दूसरे पति भी उपस्थित थे, जिनसे अब उनका रिश्ता खत्म हो चुका है। क्रिस्टीन आज भी उस पल की व्याख्या करने में असमर्थ हैं, जिसने उनकी जिंदगी बदल दी। उनके अनुसार, वह एक बत्ती बुझने और जलने जैसा पल था।

अपनी जिंदगी के इस खौफनाक साल का अंत होते क्रिस्टीन का साझा किया अनुभव हम सबके लिए सबक है। हर आता नया साल तकनीक के मामले में और नया होगा, साथ ही हमारी निजता के लिए खतरा और बढ़ेगा। कोल्डप्ले के समारोह में तो सैकड़ों कैमरे थे, पर आज सड़क पर भी कृत्रिम मेधा वाले चश्मे का खौफ है। हर कोई, हर कहीं किसी कैमरे में कैद हो रहा है। हर किसी पर खतरा मंडरा रहा है कि वह भीड़ के इंसाफ की जद में न आ जाए। शोर और भीड़ के इस समय को समझना अब ज्यादा जरूरी है।

Jansatta Page No-17

नया अखाड़ा

बाखबर

सुधीश पचौरी

> एक शाम एक चैनल ने बताया कि तृणमूल कांग्रेस के कुछ सांसदों का दल 'एसआइआर' को लेकर चुनाव आयोग से मिला, लेकिन बाहर आकर तृणमूल कांग्रेस के एक नेता ने 'बातचीत' के बारे में कम और चुनाव आयोग द्वारा 'अंगुली दिखाने' के बारे में ज्यादा बताया।

भाजपा कहिन कि कांग्रेस में जनतंत्र नहीं। कांग्रेस कहिन कि भाजपा में जनतंत्र नहीं। अपने जनतंत्र का यही विचित्र तंत्र है कि है भी, नहीं भी!

नया वर्ष आ रहा था, लेकिन संवाददाता खांस रहे थे। कोई अक्षरधाम पर खांस रहा था, कोई धौला कुआं पर हांफ रहा था। एक चैनल ने स्क्रीन पर आठ खिड़कियां खोल दी थीं और सभी में सारा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र धुंधला नजर आ रहा था। फिर एक शाम 'नेशन फर्स्ट' चैनल का एंकर परंपरागत भक्तिभाव को त्यागकर 'अरावली' को बचाने निकल पड़ा। कई दिन तक वह सरकार को निशाने पर लेता रहा... जब मुद्दा जम गया, तब छोड़ा। फिर आई इंदौर में सरकारी महकमे से प्रदत्त प्रदूषित पानी पीकर बच्चों और लोगों की मौत की खबरें और देखते-देखते अधिकतर चैनल मध्य प्रदेश सरकार और मंत्री को कठघरे में खड़ा करते रहे। अपने राष्ट्रवादी एंकर ने तो मंत्री को तुरंत हटाने की मांग तक कर डाली। एक ने तो मंत्री को 'अपराधी' तक बताया।

कई चैनल फिल्म 'धुरंधर' की 'बल्ले बल्ले' करते रहे कि फिल्म ने कुछ ही दिनों में एक हजार करोड़ से अधिक की कमाई कर सारे कीर्तिमान तोड़ दिए... वह 'शोले' के बाद सबसे बड़ी फिल्म है, उसमें 'राजनीतिक यथार्थ' और 'कला' का अद्भुत संगम है..! तो भी 'धुरंधर' की हर बहस कला बरक्स 'प्रोपेगेंडा' के बीच फंसती रही। एक कथन कि यह 'मुसलिम विरोधी' प्रोपेगेंडा है, तो दूसरा कथन कि वह मुसलिमों के खिलाफ एक 'सांस्कृतिक परियोजना' है। लेकिन एक ने कहा कि जिसे आम जनता हाथोंहाथ ले रही हो, जिसे मुसलिम भी पसंद कर रहे हों, उसे कोई 'सांस्कृतिक परियोजना' कहे, तो ऐसे में क्या कहा जाए?

इस बीच एक से एक 'विभाजनकारी' कहानी बांग्लादेश देता रहा। आए दिन किसी हिंदू की भीड़ के हाथों हत्या की खबरें हिलाती रहती हैं। चैनलों की बहसों में कई नेता इन हत्याओं पर इस तर्क के साथ जवाब देते रहते हैं कि जो बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहा है, वही भारत में मुसलमानों पर हो रहा है। एक उकसावेबाज बोला कि भारत सरकार वहां के हिंदुओं को बचाने के लिए कोई 'आपरेशन सिंदूर' क्यों नहीं करती!

फिर एक दिन लखनऊ के ताजा उद्घाटित 'प्रेरणा स्थल' से गमलों की चोरी की खबर ने राष्ट्रमंडल खेलों के दिनों की याद दिला दी। तब गमला चोरों का दिल्ली में प्राकट्य हुआ था।

ऐसे ही एक दिन दिग्विजय जी पर शायद भूत सवार हो गया और उनके मुखारविंद से कुछ वचन फूट निकले कि संघ की कार्यपद्धति अच्छी... मैं संघ की विचारधारा का विरोधी हूं! लेकिन संघ की 'कार्य पद्धति' उसके विचार से ही तो निकली है, तब काहे का विरोध सर जी! इसी बीच एक इस्लामी विद्वान शमाइल नदवी कई चैनलों पर अवतरित हुए। इसका श्रेय उस बहस को जाता है, जिसमें 'ईश्वर' के अस्तित्व को लेकर 'नदवी बरक्स-जावेद अख्तर' बहस कराई। उधर मुर्शिदाबाद में बाबरी मस्जिद बनाने वाले हुमायूं कबीर हर शुक्रवार को अपना मुंह खोलते हैं और जवाब में कल तक के मंदिर विरोधी 'मंदिर मंदिर' जपने लगते हैं कि सिलीगुड़ी में 'महाकाल मंदिर' बनाएंगे और कि 'दुर्गा आंगन' सरकारी कोष से बनाएंगे। इसे देख हुमायूं ने पूछा कि मंदिर के लिए सरकारी धन क्यों?

फिर एक शाम एक चैनल ने बताया कि तृणमूल कांग्रेस के कुछ सांसदों का दल 'एसआइआर' को लेकर चुनाव आयोग से मिला, लेकिन बाहर आकर तृणमूल कांग्रेस के एक नेता ने संवाददाता सम्मेलन में 'बातचीत' के बारे में कम और चुनाव आयोग द्वारा 'अंगुली दिखाने' के बारे में ज्यादा बताया। बहसों में चर्चक कहे कि बंगाल का आगामी चुनाव 'घुसपैठियों' के मुद्दे पर लड़ा जाना है। तृणमूल कांग्रेस कहती है कि 'घुसपैठियों' के लिए केंद्र जिम्मेदार है, तो गृहमंत्री ने स्पष्ट किया कि बंगाल सरकार तारबंदी के लिए जमीन नहीं देती, इसलिए जहां तारबंदी नहीं है, वहीं से घुसपैठिए घुसते हैं। इतने पर भी ममता दीदी ने 'दुर्योधन' और 'दुशासन' को ललकार दिया! लेकिन 'एसआइआर' ने नई मतदाता सूची के शुरुआती आंकड़ों के जरिए यह संकेत देकर, कि सभी राज्यों में वोट कटने हैं, उत्तर प्रदेश में तो दो करोड़ से अधिक कटने हैं, तो किसी राज्य में साठ-सत्तर लाख वोटर कटने हैं, सभी दलों के पेट में मरोड़ पैदा कर रखी है।

और चलते-चलते भी शाहरुख खान द्वारा बांग्लादेश के क्रिकेटर मुस्तफिजुर रहमान को 9.20 करोड़ रुपए में अपनी टीम 'केकेआर' के लिए खरीदकर एक विवाद को अनजाने ही जन्म दे दिया। एक हिंदूवादी नेता ने शाहरुख को 'गद्दार' तक कह दिया। एक एंकर ने कहा कि भारत के विदेश मंत्री खालिदा जिया को श्रद्धांजलि देने बांग्लादेश गए, तो क्या वे भी 'गद्दार' हो गए! इसी बीच कुछ बाबा कूद पड़े। फिर कुछ मौलाना भी कूद पड़े... नया अखाड़ा खुला..!

Jansatta Page No-16

समय सूचक

पूंजीपति बना श्रमिकों का मसीहा

जनसत्ता सरोकार

यरूशलम में एक ऐसे इंसान की कब्र है जो नाजी पार्टी का सदस्य था। वह नाजी पार्टी, जिसने यहूदियों का जनसंहार किया। यहूदियों पर नाजियों का जुल्म मानव इतिहास की खौफनाक घटनाओं में से एक है। द्वितीय विश्वयुद्ध की आपदा को पूंजीपतियों ने एक अवसर की तरह देखा, जिसमें आस्कर शिंडलर भी थे। 1939 में जर्मनी ने पोलैंड पर कब्जा किया। वहां के शहर क्राको में शिंडलर ने यहूदियों के पुराने कारखाने की मरम्मत करके फौजियों की जरूरत के बर्तन बनाने शुरू कर दिए। शिंडलर ने कारखाने में सिर्फ यहूदी श्रमिकों को ही रखा, क्योंकि उनका वेतन सीधे नाजी खजाने में जाता था, और उन्हें काफी कम वेतन दिया जाता था। शिंडलर सस्ते श्रमिक के चक्कर में कुछ यहूदियों के फर्जी कागजात भी तैयार करवाते हैं। शिंडलर इस कारोबार में काफी मुनाफा कमाते हैं। यहूदी समुदाय शिंडलर के कारखाने को सुरक्षित पनाहगाह के रूप में देखने लगते हैं, क्योंकि वे अपने श्रमिकों को नाजियों के अत्याचार से बचाने की भरपूर कोशिश करते हैं। यहूदियों पर नाजियों का अत्याचार देख शिंडलर का ह्रदय परिवर्तन होता है। जो शिंडलर सस्ते मजदूर और मुनाफे के लिए यहूदियों को बचाते हैं, वही बाद में अपना पूरा मुनाफा सिर्फ यहूदियों को बचाने में खर्च कर देते हैं। यहूदियों को बचाने के लिए वे नाजी अधिकारियों को भारी-भरकम रिश्वत देते हैं। शिंडलर्स ने अपने राजनीतिक संपर्क और पैसे की बदौलत 11,00 से अधिक यहूदियों को उनकी कत्लगाह आशविट्ज जाने के बजाए अपने उस कारखाने में भेजा, जहां उत्पादन के नाम पर यहूदियों का जीवन था। थामस केनेली ने इस उद्योगपति के जीवन पर आधारित 'शिंडलर्स आर्क' नाम का उपन्यास लिखा। इस उपन्यास पर स्टीवन स्पिलबर्ग ने 'शिंडलर्स लिस्ट' नाम की फिल्म बनाई, जिसे सात आस्कर पुरस्कार मिले।

आस्कर शिंडलर

नशे का जाल

आमतौर पर नशा न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता है, बल्कि मानसिक और सामाजिक जीवन को भी प्रभावित करता है। यह आदत कब लत में तब्दील हो जाए, पता नहीं चलता। आदत को एक सकारात्मक अवधारणा के तौर पर देखा जाता है, जबकि लत या व्यसन एक नकारात्मक अवधारणा है। यह एक मनोविकार है, क्योंकि जिस नशे के सेवन की लत लग जाए, उसके बिना जीवन की निरंतरता असंभव दिखाई देती है। आदत बदलना संभवतः आसान हो सकता है, पर लत से पीछा छुड़ाना बहुत मुश्किल लगता है। चिकित्सक भी मानते हैं कि नशीले पदार्थों का सेवन अनेक बीमारियों की जड़ है।

हालांकि, देखा जाए तो नशीले पदार्थों का सेवन कहीं न कहीं हमारी सांस्कृतिक व्यवस्था का हिस्सा रहा है। ग्रामीण परिवेश में हुक्का, बीड़ी और तंबाकू इत्यादि का सेवन लोग इस तर्क पर करते हैं, ताकि अधिक श्रम कर सकें और नींद की उपेक्षा कर सकें। यही नहीं, मनोरंजन के लिए भी इनका उपयोग होता था। इसका एक पक्ष यह भी था वे लोग खुद तो इनका सेवन करते थे, पर युवा पीढ़ी को इनसे दूर रहने की नसीहत और हिदायत भी देते थे, क्योंकि वे स्वयं भी मानते थे कि इन पदार्थों का सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इसी तरह, एक समय 'वाइन' (शराब) पीना प्रतिष्ठा, पश्चिमी जीवन शैली और आधुनिकीकरण के अनुकरण का प्रतीक बन गया तथा धीरे-धीरे कुछ लोगों की जिंदगी में इसने लत का रूप ले लिया। वहीं सामंतवाद में नशीले पदार्थों का सेवन राजशाही का प्रतीक था और अब पूंजीवाद के दौर में इसने एक बाजार का रूप ले लिया।

नशीले पदार्थों के सेवन को तीन दृष्टिकोणों के आधार पर समझने का प्रयास किया जा सकता है। पहला, नशे का सेवन एक चलन बन गया है, कुछ जगह इसे प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है, बच्चे या किशोर खुद को परिपक्व दिखाने के लिए इनका सेवन शुरू कर देते हैं। दूसरा, मित्र समूहों के दबाव में नशे का सेवन करना। कुछ लोग इस तरह के दबाव में आकर या घर के किसी सदस्य को नशा करते देखकर इन आदतों को अपना लेते हैं। तीसरा, राजनीतिक-अर्थवाद के रूप में नशे का सेवन करना। इस दृष्टि से देखें तो नशीले पदार्थों के बाजार से राजस्व की प्राप्ति होती है, जो किसी भी समाज के विकास के लिए आवश्यक है। दूसरी तरफ इसके सेवन से श्रम शक्ति कमजोर होती है, मानव पूंजी नष्ट होती है और उत्पादकता का दायरा कम होता है। यहां यह सवाल विचारणीय है कि नुकसान किसमें ज्यादा है?

इसका एक पहलू यह भी हो सकता है कि नशे का वैश्विक बाजार युवा शक्ति को निर्बल करने का अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र हो। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि कोई देश अगर कमजोर है, तो वह दूसरे देश को हराने के लिए या उसकी अर्थव्यवस्था को नष्ट करने के लिए या उस समाज में बिखराव लाने के लिए नशीले पदार्थों का बाजार विकसित कर सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक नई रपट में बताया गया है कि प्रति वर्ष 26 लाख मौतें शराब के सेवन के कारण होती हैं, जो कुल मौतों का 4.7 फीसद है। 15-29 वर्ष की आयु वर्ग के लोगों में धूम्रपान की लत भी बढ़ी है, ग्रामीण क्षेत्रों में यह वृद्धि 26 फीसद है, जबकि शहरों में 68 फीसद है। हाल ही में सामने आए टोरंटो विश्वविद्यालय के एक अध्ययन के अनुसार, भारत में 18 साल की उम्र में धूम्रपान करने वाले पुरुषों की संख्या में 36 फीसद की वृद्धि हुई है। रपट में कहा गया है कि नशीले पदार्थों का सेवन व्यक्तिगत स्वास्थ्य को गंभीर रूप से नुकसान पहुंचाता है। हर साल इससे लाखों ऐसी मौतें होती हैं, जिन्हें रोका जा सकता है। इससे दुर्घटनाओं और हिंसा का खतरा भी बढ़ जाता है।

इस पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है कि नशे के नुकसानों से परिचित होने के बाद भी ये आंकड़े क्यों बढ़ते जा रहे हैं? इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं: परिवार एवं अनौपचारिक समूहों के नियंत्रण का अभाव, नशीले पदार्थों की आसानी से उपलब्धता, मित्र समूहों की भूमिका, एकाकीपन को समाप्त करने का माध्यम, तनाव, अस्थिरता, असुरक्षा, अलगाव, भय, असफलता, कुंठा, आपराधिक प्रवृत्ति और झूठी शान का दिखावा। इसके अलावा नशीले पदार्थों के सेवन को प्रोत्साहित करने वाली गतिविधियां भी इसके लिए जिम्मेदार हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रपट के अनुसार, 76 फीसद फिल्मों में तंबाकू एवं 72 फीसद फिल्मों में शराब का सेवन धड़ल्ले से दिखाया जाता है। वर्ष 2005 में इस पर प्रतिबंध लगाया गया था, मगर वर्ष 2009 में अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर इस प्रतिबंध को हटा दिया गया और अब केवल लिखित

समाज

ज्योति सिडाना

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि कोई देश अगर कमजोर है, तो वह दूसरे देश को हराने के लिए या उसकी अर्थव्यवस्था को नष्ट करने के लिए या उस समाज में बिखराव लाने के लिए नशीले पदार्थों का बाजार विकसित कर सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक नई रपट में बताया गया है कि प्रति वर्ष 26 लाख मौतें शराब के सेवन के कारण होती हैं, जो कुल मौत का 4.7 फीसद है।

चेतावनी दिखाई जाती है। इसी तरह, वर्ष 2008 में सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान पर प्रतिबंध लगाया गया, वर्ष 2004 में स्कूलों से लगभग 300 मीटर के दायरे में तंबाकू एवं गुटखे की बिक्री और सेवन पर पाबंदी लगाई गई थी। इसके बावजूद भारत नशाखोरी में विश्व में दूसरे स्थान पर है।

नशीले पदार्थों के सेवन का प्रभाव केवल शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य पर नहीं पड़ता है, बल्कि शिक्षा, परिवार, रोजगार, व्यक्तित्व विकास, कानून व्यवस्था, अनुशासन और अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है। समाज पर इनके प्रभावों पर गौर करें तो इसमें संबंधित व्यक्ति का अपने आर्थिक दायित्वों को पूरा न कर पाना, उधार लेना, आपराधिक गतिविधियों में संलग्न होना, सामाजिक मूल्यों एवं आत्म नियंत्रण में कमी आना, पारिवारिक संघर्षों में वृद्धि और सड़क दुर्घटनाओं का बढ़ना आदि शामिल हैं। यह कैसा विरोधाभास है कि राज्य का एक विभाग (आबकारी विभाग) तो इनसे होने वाली राजस्व प्राप्ति के लिए काम करता है और दूसरा विभाग (मद्यनिषेध विभाग) नशा मुक्ति अभियानों, विज्ञापनों पर करोड़ों रुपए खर्च करता है? सोचना यह है कि राजस्व से होने वाला लाभ ज्यादा है या विज्ञापनों एवं अभियानों पर होने वाला खर्च? किसी भी देश का यह मूल दायित्व है कि वह अपने नागरिकों को शिष्ट, सुरक्षित, स्वस्थ और विकासोन्मुखी जीवन पद्धति प्रदान करे। इसलिए राजस्व हानि की परवाह किए बिना नशा करने के विभिन्न साधनों के प्रयोग पर नियंत्रण आवश्यक हो जाता है।

लोकतंत्र में विपक्ष

वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

> देश की समस्या यह है कि जब तक मजबूत विपक्ष नहीं होता है, तब तक लोकतंत्र वास्तव में खतरे में रहता है। बिहार जीतने के बाद नरेंद्र मोदी में वही पुरानी ऊर्जा दिखने लगी है जो लोकसभा चुनावों के बाद काफी महीनों तक नहीं दिखी थी, क्योंकि पहली बार प्रधानमंत्री बने थे बिना पूर्ण बहुमत हासिल किए। अब फिर से अपनी उपलब्धियां गिनवाने लगे हैं जैसे कि भारत को विकसित करवाने का पूरा श्रेय उनको निजी तौर पर मिलना चाहिए।

राजनीतिक नजरिए से अगर गए साल को देखा जाए, तो क्या दिखता है? मैंने अपने आप से जब यह सवाल पूछा, तो राहुल गांधी का चेहरा सामने आया इसलिए कि 2025 में उन्होंने साबित करके दिखाया कि नेता प्रतिपक्ष की भूमिका उनसे संभाली नहीं जा रही है। इस पद को संभालने का अवसर उनको मिला मुश्किल से। दो लोकसभा चुनावों में उनके नेतृत्व में कांग्रेस को इतनी कम सीटें मिलीं कि नेता प्रतिपक्ष बनने का अधिकार नहीं मिल सका उन्हें। तीसरे लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को कम से कम इतनी सीटें दिलवाईं कि इस पद को हासिल कर सके, लेकिन नेता प्रतिपक्ष बनने के बाद उन्होंने पूरी तरह साबित किया कि नरेंद्र मोदी को हराना उनके बस की बात नहीं है।

हरियाणा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, दिल्ली और बिहार में चुनाव हुए हैं लोकसभा चुनाव के बाद और इन चुनावों में जीत हुई है भारतीय जनता पार्टी की। नतीजा यह कि गए साल के अंतिम दिनों में दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में चर्चा यही रही कि जब तक नरेंद्र मोदी के मुख्य प्रतिद्वंद्वी राहुल गांधी रहेंगे, तब तक मोदी को हराना मुश्किल नहीं, नामुमकिन है। चर्चा यह भी होने लगी कि कांग्रेस अगर अपना अस्तित्व गंवाना नहीं चाहती है, तो राहुल की जगह प्रियंका को देनी चाहिए, लेकिन यह असंभव है, क्योंकि सोनिया गांधी ऐसा होने नहीं देंगी।

सवाल यह है कि राहुल गांधी इतने कमजोर नेता प्रतिपक्ष क्यों हैं? इसका जवाब है कि इतने चुनावों को हारने के बाद भी उन्होंने कभी ईमानदारी से हारने के कारणों को जानने की कोशिश नहीं की है। इसके बदले उन्होंने दोष डाला है चुनाव आयोग पर। पहले तो ईवीएम में 'गड़बड़' होने का आरोप लगाया, यह भूल कर कि जब कांग्रेस जीतती है, तो आरोप लगाना भूल जाते हैं। फिर शिकायत थी उनको एसआइआर (विशेष गहन पुनरीक्षण) से। 'वोट चोरी' का नारा उठाया। कहने लगे कि हरियाणा और महाराष्ट्र में कांग्रेस की जीत तय थी, लेकिन भारतीय जनता पार्टी ने चुनाव आयोग की सहायता से जीत चुराई। बिहार की बारी जब आई 2025 के आखिरी महीनों में, तो मतदान से पहले ही हल्ला मचाने लगे कि वोट चोरी होने वाली है। यात्रा निकाली इस मुद्दे को लेकर और हर आमसभा में लोगों से 'वोट चोर, गद्दी छोड़' का नारा बुलंद करवाते रहे। ऐसा करने के बाद निकल गए एक बार फिर किसी विदेश यात्रा पर।

मैंने उनकी 2025 में विदेशी यात्राओं का जब हिसाब लगाया, तो मालूम यह हुआ। वर्ष के शुरू होते ही निकल गए थे वियतनाम, फिर दुबई और कतर गए, उसके बाद मलेशिया, फिर दक्षिण अमेरिका गए जहां ब्राजील, कोलंबिया, पेरू और चिली में दिखे। साल के अंतिम दिनों में जर्मनी की यात्रा की। जहां गए वहां अक्सर उनकी मुलाकातें हुईं प्रवासी भारतीयों से जिनको उन्होंने बताया कि भारत में लोकतंत्र तकरीबन समाप्त कर दिया है नरेंद्र मोदी ने। हर भाषण में कहा कि भारत में सारी लोकतांत्रिक संस्थाओं को बर्बाद किया है मोदी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने। सवाल यह है कि जब देश का इतना बुरा हाल है, तो नेता प्रतिपक्ष को विदेश में घूमना चाहिए या देश में रह कर समाधान ढूंढ़ने चाहिए?

देश की समस्या यह है कि जब तक मजबूत विपक्ष नहीं होता है, तब तक लोकतंत्र वास्तव में खतरे में रहता है। बिहार जीतने के बाद नरेंद्र मोदी में वही पुरानी ऊर्जा दिखने लगी है जो लोकसभा चुनावों के बाद काफी महीनों तक नहीं दिखी थी, क्योंकि पहली बार प्रधानमंत्री बने थे बिना पूर्ण बहुमत हासिल किए। अब फिर से अपनी उपलब्धियां गिनवाने लगे हैं जैसे कि भारत को विकसित करवाने का पूरा श्रेय उनको निजी तौर पर मिलना चाहिए। ऐसा शायद ही कोई दिन गुजरता है जब अखबारों में उनकी तस्वीरें न दिखती हों और टीवी पर उनका कोई भाषण सुनने को न मिलता हो।

ऐसा नहीं है कि भारत वास्तव में विकसित होने का सपना साकार करने वाला है। सड़कें, हवाईअड्डे, और बंदरगाह बेशक तीव्र गति से बनते हैं मोदी के राज में, लेकिन बेरोजगारी का काला साया नौजवानों के जीवन पर अभी भी मंडरा रहा है। पर्यावरण की समस्याएं इतनी गंभीर हो गई हैं कि शहरों में सांस लेना मुश्किल हो गया है। अरावली पहाड़ियों को बर्बाद करने की साजिश अगर फिलहाल रुक गई है, तो सिर्फ इसलिए कि 'गोदी मीडिया' वालों ने भी इतना हल्ला मचाया कि सर्वोच्च न्यायालय को अपना फैसला बदलना पड़ा है।

देहातों में गरीबी की समस्या इतनी गंभीर अभी भी है कि राजनीतिक पंडित मानते हैं कि बिहार में अगर महिलाओं को दस हजार रुपए देने की योजना न बनी होती ऐन चुनावों से पहले, तो शायद भारतीय जनता पार्टी और नीतीश कुमार की जीत नहीं होती। महिलाओं में चुनावों से पहले पैसे बांटने की योजनाएं बनीं हैं मध्यप्रदेश के विधानसभा चुनावों के बाद और इस में कोई शक नहीं है कि इस 'चुनावी घूस' की वजह से चुनावों की हवा बदलती है, लेकिन इस मुद्दे को कांग्रेस पार्टी उठा नहीं सकती है इसलिए कि राहुल गांधी ने बार-बार वादा किया है कि उनकी सरकार बनने के बाद महिलाओं के बैंक खातों में कई हजार रुपए आने वाले हैं 'खटाखट-खटाखट'।

सरकार राहुलजी तब बनेगी, जब आप चुनाव जीत कर दिखाएंगे। चुनाव कैसे जीतेंगे जब आपका ध्यान विदेशों में घूमने पर ज्यादा रहता है। इन यात्राओं को लेकर 2025 के आखिरी दिनों में मजाक हो रहा था सोशल मीडिया पर कि इस साल नेता प्रतिपक्ष भारत आए हैं पांच बार। सुनने में आया है कि इन दिनों राहुल गांधी एक बार फिर वियतनाम जाने की तैयारी में लगे हुए हैं!

2025 बनाम नफरत

दूसरी नजर

पी चिदंबरम

> धर्मनिरपेक्षता के पतन ने नफरत को जन्म दिया है, एक ऐसा शब्द जिसकी हर धर्म निंदा करता है। दुख की बात है कि नफरती भाषण और लेखन के अधिकांश उदाहरण धर्म पर आधारित हैं। नफरत के अन्य कारण नस्ल, भाषा और जाति हैं। सबसे स्पष्ट नफरत मुसलमानों, उनके पहनावे और खान-पान की प्रथाओं तथा मुसलमानों के धार्मिक स्थलों के खिलाफ दिखाई देती है। मुस्लिमों की इबादत में बाधा डाली जाती है या उन पर प्रतिबंध लगाया जाता है।

वर्ष 2025 की आपकी सबसे यादगार स्मृति क्या है? वह कौन सा शब्द है, जो उस स्मृति को संजो कर रखेगा? भारत में सबसे अधिक लोगों को प्रभावित करने वाला शब्द कौन-सा रहा?

अल्पकालिक शब्द

सिंदूर शब्द एक स्पष्ट दावेदार है। राष्ट्रीय जांच एजंसी के अनुसार, पहलगाम में हुए आतंकी हमले को तीन पाकिस्तानी घुसपैठियों और उन्हें शरण देने वाले दो स्थानीय सहयोगियों ने अंजाम दिया था। इसके जवाब में आपरेशन सिंदूर चलाया गया, जो एक स्वैच्छिक संघर्ष था। भारतीय वायु सेना, मिसाइलों और ड्रोन ने पाकिस्तान के सैन्य ढांचे को व्यापक क्षति पहुंचाई और इसके परिणामस्वरूप भारत को भी कुछ नुकसान उठाना पड़ा (जो युद्ध में अपरिहार्य है)। पहलगाम हमले को अंजाम देने वाले तीनों पाकिस्तानी एक मुठभेड़ में मारे गए। जांच के दौरान गिरफ्तार किए गए दो भारतीयों के संबंध में अभी तक कोई जानकारी नहीं है। संघर्ष के परिणामों को लेकर पारदर्शिता की कमी अभी भी बनी हुई है। *आपरेशन सिंदूर* केवल चार दिन तक चला, जो कोई स्थायी प्रभाव छोड़ने के लिए बहुत छोटा था।

एक और दावेदार है *शुल्क*। 2 अप्रैल, 2025 से यह शब्द हर बातचीत में सुनाई देने लगा। इसका एकमात्र प्रतिद्वंद्वी शब्द था- ट्रंप! ट्रंप और शुल्क ने कई देशों की अर्थव्यवस्थाओं को तहस-नहस कर दिया है, और इसका सिलसिला अभी खत्म नहीं हुआ है। उदाहरण के लिए, भारतीय निर्यात पर पारस्परिक शुल्क और (रूस से तेल खरीदने पर) जुर्माना अभी भी लागू है, जिससे इस्पात, एल्युमीनियम, तांबा, वस्त्र, रत्न एवं आभूषण, समुद्री उत्पाद और रसायनों का निर्यात बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। पीयूष गोयल की ओर से किया गया 'निकट भविष्य' में अमेरिका से द्विपक्षीय व्यापार समझौते का वादा वर्ष 2025 के अंत तक उतना ही दूर है, जितना अप्रैल 2025 में था।

जीएसटी भी एक मजबूत दावेदार है। जीएसटी की विनाशकारी शुरुआत के आठ साल बाद केंद्र सरकार ने अच्छे सुझावों पर ध्यान दिया और कर संरचना को तर्कसंगत बनाया तथा कई वस्तुओं एवं सेवाओं पर कर की दरें कम कीं- फिर भी प्रशासनिक तौर पर उत्पीड़न जारी है। व्यापारियों के हर संगठन ने जीएसटी कानूनों के अनुपालन को एक दुःस्वप्न बताया है। खुदरा उपभोग के आकार की तुलना में कर में दी गई छूट बहुत कम होने के कारण खपत में अपेक्षित वृद्धि नहीं हुई। उच्च खपत आबादी के केवल शीर्ष दस फीसद हिस्से तक ही सीमित रही।

शब्द, जो खो गए

एक अपरिचित मुहावरा- *अर्थव्यवस्था के लिए सुनहरा वर्ष*- चर्चा में आया, लेकिन जल्द ही गायब हो गया। यह साहित्यिक संदर्भ पढ़े-लिखे लोगों के लिए भी अपरिचित था। इसके अलावा, आइएमएफ ने भारत के राष्ट्रीय खातों की विश्वसनीयता पर सवाल उठाए। पूर्व मुख्य आर्थिक सलाहकार से लेकर प्रोफेसरों और शोधकर्ताओं तक, कई लोगों ने अर्थव्यवस्था की कमजोरियों पर बात की। अंततः रोजगार की मांग ने आधिकारिक रूप से प्रायोजित उत्सव के शोर को दबा दिया। यहां एक सबक है: वर्तमान विकास दर पर, अमेरिका, चीन और भारत का 2025 में अपने सकल घरेलू उत्पाद (स्थिर अमेरिकी डालर में) में 'उत्पादन' का योगदान इस प्रकार रहा : (**देखें तालिका**)

एक ओर चीन जहां अमेरिका (सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था) के साथ अंतर कम कर रहा है, वहीं भारत और चीन तथा भारत और अमेरिका के बीच का अंतर बढ़ता जा रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था में कई कमजोरियां हैं, जिन्हें सरकार स्वीकार करने से इनकार करती है या शायद समझ भी नहीं पाती। *द हिंदू* ने अपने संपादकीय में लिखा: 'अमेरिका की ओर से लगाया गया पचास फीसद शुल्क अभी भी लागू है, निजी निवेश सुस्त बना हुआ है, विदेशी पूंजी देश से बाहर जा रही है, कमजोर रुपया आयात पर निर्भर अर्थव्यवस्था के लिए आयात को और महंगा बना रहा है, वास्तविक वेतन में अपेक्षित वृद्धि नहीं हो रही है और उपभोक्ता मांग सुस्त बनी हुई है।' ऐसे में सुनहरे अवसर का दावा खोखला साबित हो रहा है।

कभी आम बोलचाल में इस्तेमाल होने वाला शब्द *धर्मनिरपेक्ष* अब लगभग गायब हो चुका है। यह इस साल का सबसे कम इस्तेमाल होने वाला शब्द बन गया है। बहुत कम लोग खुद को गर्व से धर्मनिरपेक्ष बताते हैं। संपादकीय लेखक इस शब्द से परहेज करते हैं। मूल रूप से धर्मनिरपेक्ष का अर्थ राज्य और धर्म का पृथक्करण था, लेकिन बाद में इसका अर्थ यह हो गया कि एक धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति के मूल्य तर्क और मानवतावाद पर आधारित होते हैं, न कि धार्मिक सिद्धांतों पर।

देश	वृद्धि दर	*2025 में अतिरिक्त उत्पादन*
चीन	4.8 %	931 अरब अमेरिकी डालर
अमेरिका	1.8 %	551 अरब अमेरिकी डालर
भारत	6.6 %	276 अरब अमेरिकी डालर

शर्मनाक 'विजेता'

धर्मनिरपेक्षता के पतन ने नफरत को जन्म दिया है, एक ऐसा शब्द जिसकी हर धर्म निंदा करता है। दुख की बात है कि नफरती भाषण और लेखन के अधिकांश उदाहरण धर्म पर आधारित हैं। नफरत के अन्य कारण नस्ल, भाषा और जाति हैं। सबसे स्पष्ट नफरत मुसलमानों, उनके पहनावे और खान-पान की प्रथाओं तथा मुसलमानों के धार्मिक स्थलों के खिलाफ दिखाई देती है। मुसलिमों की इबादत में बाधा डाली जाती है या उन पर प्रतिबंध लगाया जाता है। खोखला तर्क दिया जाता है कि मुसलमानों ने भारत पर आक्रमण किया और यहां के कई हिस्सों पर छह शताब्दियों तक शासन किया, और अब हिंदुओं के लिए मुसलमानों को उनकी जगह दिखाने का समय आ गया है। नफरत का दूसरा निशाना ईसाई समुदाय है। गिरजाघरों में तोड़फोड़ की जाती है, ईसाई पादरियों और प्रचारकों की हत्या की जाती है, और कैरोल गाते ईसाई बच्चों पर हमला किया जाता है। ये सब हिंदू 'अधिकारों' को स्थापित करने के नाम पर किया जाता है। भारत के संविधान के लिए हिंदू वर्चस्व का विचार जितना घृणित हो सकता है, उतना और कुछ नहीं।

भारत का विचार नागरिकता की नींव पर बना है, न कि धर्म, नस्ल, जाति या भाषा पर। भारत की अधिकांश जनता डा अब्दुल कलाम और मदर टेरेसा का सम्मान करती है, लेकिन एक छोटा सा वर्ग मुसलमानों और ईसाइयों के खिलाफ नफरत फैलाता है।

सबसे चिंताजनक पहलू इन अवैध कार्यों को साफ-सुथरा दिखाने या सही ठहराने का प्रयास है। इसके मुख्य दोषी राज्य, महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन नेता और राज्य के संरक्षण से सशक्त हुए कुछ संगठन हैं। उनके शब्द, कार्य या मौन नफरत फैलाने वालों को अत्याचार करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यह प्रवृत्ति भारत को टुकड़ों में बांट देगी और जो होना तय है, वही होगा: एक ऐसा भारत, जो संकीर्ण घरेलू दीवारों से टुकड़ों में बंटा होगा।

इन सभी कारणों से अत्यंत शर्म और खेद के साथ मैं उस शब्द का चयन करता हूं, जिसने 2025 में भारत को परिभाषित किया: *नफरत*।

Jansatta Page No-16

अनंत विजय

anant@nda.jagran.com

आजकल

ताजा हवा के झोंके की तरह अपराध कथा

आजकल वेबसीरीज का दौर है, ऐसा कहा जा सकता है। हालांकि यह नाम सुनते ही सबसे पहले आम तौर पर यही प्रतिक्रिया होती है कि उसमें गालियां बहुत होंगी। परंतु हाल ही में मिसेज देशपांडे नामक एक ऐसी वेबसीरीज आई है, जिसमें ऐसा कुछ नहीं है। माधुरी दीक्षित की मुख्य भूमिका में बनी इस वेबसीरीज से एक उम्मीद यह भी जगी है कि ओटीटी प्लेटफार्म पर चलने वाली सामग्री में परिपक्वता आने लगी है। इसे एक शुभ संकेत की तरह लिया जाना चाहिए। इसने यह भी संकेत दिया है कि साफ-सुथरी वेबसीरीज को दर्शक पसंद करते हैं

वेबसीरीज मिसेज देशपांडे में मुख्य भूमिका में हैं माधुरी दीक्षित। फाइल

ओवर द टाप (ओटीटी) प्लेटफार्म्स पर चलने वाली वेबसीरीज की बात आते ही पहली प्रतिक्रिया होती है कि उसमें गालियों की भरमार होगी। जबरदस्ती ठूंसी गई यौनिकता या न्यूडिटी होगी। जबरदस्त हिंसा होगी। शरीर के अंगों को काटा जा रहा होगा और तड़पते हुए कटे अंग होंगे। प्रश्न आता है कि कोई अच्छी और साफ-सुथरी वेबसीरीज बताइए। उत्तर मिलता है पंचायत और गुल्लक। अच्छी कहानी, साफ-सुथरी प्रस्तुति, कम गाली-गलौच और न्यूनतम हिंसा जिस वेबसीरीज में हो उसकी संख्या कम है। हमारे देश में विशेषकर हिंदी में बनने वाली वेबसीरीज एक ऐसी राह पर चली गई जिसमें निर्माता और निर्देशकों को लगता है कि बगैर गालियों के, बिना यौनिकता और हिंसक दृश्यों के वेबसीरीज लोगों को पसंद नहीं आएंगी। लिहाजा सफलता के लिए ये तीन अवयव जबरदस्ती कहानी में ठूंसे जाते हैं। अपराध कथा हो तो यह तो आवश्यक ही होते हैं। भले ही ये कहानी का सत्यानाश क्यों न कर हो जाए। पता नहीं निर्देशकों को क्या लगता है और वो भारतीय दर्शकों की मानसिकता को किस तरह से विश्लेषित करते हैं। इनको पता नहीं ये बात कब समझ में आएगी कि दर्शकों को कहानी चाहिए। बेहतर कहानी और बेहतर ट्रीटमेंट ही किसी सीरीज को दर्शकों की पसंद बना सकती है। एक जमाने में इसी तरह से हिंदी फिल्मों में अश्लीलता दिखाने के लिए तर्क गढ़े जाते थे। नायिकाओं को बिकिनी या अर्धनग्न दिखाने के लिए उसको कहानी का हिस्सा बनाया जाता था। कई ऐसी फिल्में दर्शकों ने पसंद भी की थीं, लेकिन ये ट्रेंड लंबे समय तक नहीं चल सका और दर्शक जबरदस्ती ठूंसी गई नग्नता से ऊब गए। फिर हिंदी फिल्मों ने अपनी राह बदली।

आज वेबसीरीज के निर्माताओं को इस पर विचार करने की आवश्यकता महसूस होनी चाहिए। वेबसीरीज पर चूंकि किसी प्रकार के सेंसर अथवा प्रमाणन की व्यवस्था नहीं है, इस कारण वहां अराजकता जारी है। इस स्तंभ में अनेक बार इस ओर ध्यान दिलाया गया है। स्वनियंत्रण और स्वनियमन की आड़ में प्रमाणन को रोका गया है। सरकार इस कारण से इस दिशा में गति से नहीं बढ़ रही है, क्योंकि अगर प्रसारण पूर्व प्रमाणन का निर्णय होता है तो एक अलग संस्था बनानी होगी। अलग संस्था नहीं बनाई जाती है और केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड को यह दायित्व दे दिया जाता है तब भी बहुत बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर की आवश्यकता होगी। मानव संसाधन की आवश्यकता तो होगी ही। इसलिए सरकार जल्द निर्णय लेने के मूड में नहीं दिखाई देती है।

सरकार ने एक व्यवस्था बनाई है और जब किसी वेबसीरीज को लेकर अधिक विवाद होता है या अधिक आलोचना आदि होती है तो सूचना और प्रसारण मंत्रालय अपने स्तर से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से हस्तक्षेप करके मामले को सुलझा देता है। आज चर्चा वेबसीरीज के प्रमाणन पर नहीं, बल्कि एक ऐसी वेबसीरीज की करनी है जो बहुत ही साफ-सुथरी, न्यूनतम गाली गलौच के साथ और बगैर किसी अश्लीलता और जुगुप्साजनक हिंसा के बनाई गई है। ये वेबसीरीज अपराध कथा है, उसमें मर्डर है, ग्लैमर और लड़कियां हैं, प्रेम-प्रसंग हैं, अश्लीलता दिखाने का अवसर भी है, लेकिन अश्लीलता या नग्नता कम से कम है। इस वेबसीरीज को परिवार के सभी लोग एक साथ बैठकर देख सकते हैं। रोचकता अपने चरम पर है और दर्शकों के दिमाग में इसको देखते हुए बस यही चलता रहता है कि आगे क्या? यही तो निर्माता निर्देशक की सफलता है।

बात हो रही है एक वेबसीरीज मिसेज देशपांडे की। छह एपिसोड की यह सीरीज एक सीरियल किलर को पकड़ने की कथा है। कहा गया है कि यह किसी फ्रेंच कहानी पर आधारित सीरीज है, लेकिन इसके निर्देशक और लेखक नागेश कुकनूर ने जिस प्रकार से कहानी को भारतीय पुट दिया है, वह बहुत ही प्रशंसनीय है। अपने जमाने की सुपरस्टार रही माधुरी दीक्षित इस सीरीज में मुख्य भूमिका में हैं। उन्होंने अपने अभिनय कला से दर्शकों को बांधे रखा है। अधिक मेकअप के बिना और चेहरे पर बढ़ती उम्र के निशान के बावजूद माधुरी दीक्षित ने जिस तरह से मिसेज देशपांडे के पात्र को पर्दे पर जीवंत किया है, वह अपनेआप में उल्लेखनीय है। माधुरी दीक्षित अपनी परिस्थितियों के कारण सीरियल किलर बन जाती हैं। पकड़ ली जाती हैं और मिसेज देशपांडे को जेल में जीनत का नाम मिलता है। वह इस पहचान के साथ जेल में सूर्य नमस्कार करती हैं और साथी कैदियों को भोजन बनाकर खिलाती हैं। सीरियल किलर होने के बावजूद अन्य कैदी, जो संभवतः उसके अपराध से परिचित नहीं हैं, माधुरी का सम्मान करते हैं। यह सीरियल किलिंग पुणे में हुई थी। मिसेज देशपांडे के केस की फाइल किसी एक लड़की के हाथ लग जाती है। यहां भी कहानी में एक दिलचस्प मोड़ है कि वह लड़की पहले लड़का होती है, लेकिन अपनी मानसिक स्थिति के कारण वह चिकित्सकीय रास्ते से लड़की बनती है। यह लड़की पुणे की सीरियल किलर मिसेलज देशपांडे की कापीकैट किलर बनती है। उसके ही अंदाज में अपने शिकार का नायलान की रस्सी से गला घोंटकर हत्या करती है और उसकी आंख खोल देती है।

जब कापीकैट किलर ने मुंबई में कत्ल करना आरंभ किया तो पुलिस कमिश्नर ने मिसेज देशपांडे यानी जीनत की मदद लेना तय किया। कहानी में इतने चक्करदार घुमाव हैं कि मिसेज देशपांडे इस केस की जांच करने वाले पुलिस आफिसर की मां होती है और कापीकैट किलर जांच अधिकारी की पत्नी की दोस्त। कहानी इतने दिलचस्प मोड़ लेती है कि दर्शक उससे बंधे रहने पर मजबूर होता है। जब दर्शक को लगता है कि पुलिस किलर के पास पहुंच गई है तो कहानी में एक नया मोड़ आता है और किलर की नए सिरे से तलाश आरंभ हो जाती है। कोई नया क्लू मिलता है। जिस पर किलर होने का शक होता है या जिसको किलर की तरह प्रस्तुत किया जाता है वह तो किसी और ही मानसिक स्थिति में होता है। दर्शक जब उसकी वास्तविकता को जानता है तो उसके प्रति संवेदना से भर उठता है।

प्रश्न उठता है कि आखिर किलर कौन है? निर्देशक ने कहानी को किसी तरह से लाउड नहीं होने दिया है। न ही किसी प्रकार का छद्म वातावरण तैयार करके अपराध कथा को तिलस्मी स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किया। बगैर लाउड हुए कहानी का ट्रीटमेंट बेहतरीन है। बस कहानी में एक ही चीज खटकती है। अंत में भेद खुलता है कि मिसेज देशपांडे को उसके पिता ने ही सेक्सुअली अब्यूज किया था। वह अपने पिता की हत्या के लिए पहुंचती है। वह छत से कूदकर अपनी जान दे देते हैं। हालांकि पश्चिम में इस तरह की कहानी होती होगी, लेकिन भारतीय दर्शकों के लिए यह एक झटके की तरह है। इस तरह की वेबसीरीज से उम्मीद जगती है कि ओटीटी पर चलने वाली सामग्री में परिपक्वता आनी आरंभ हो गई है। दूसरे निर्माता भी इसको देखकर प्रेरित होंगे और कहानी का इस तरह का ट्रीटमेंट करेंगे। मिसेज देशपांडे को एक शुभ संकेत की तरह लिया जाना चाहिए। इसकी सफलता ने यह संकेत भी दिया है कि साफ-सुथरी वेबसीरीज दर्शकों को भाती है। मिसेज देशपांडे उन निर्देशकों के लिए मिसाल है जो सेक्स और हिंसा दिखाकर सफल होना चाहते हैं।

Dainik Jagaran Page -9

न्याय, शिक्षा व भाषा पर औपनिवेशिक छाया

इतिहासकार मीनाक्षी जैन की 'द ब्रिटिश मेकओवर आफ इंडिया' दो भागों में प्रकाशित है। पहला भाग 'ज्यूडिशियल एंड अदर इंडिजिनस इंस्टीट्यूशंस अपटर्ल्ड' (2024) में, जबकि दूसरा भाग 'इंडिजिनस एजुकेशन एंड लैंग्वेजेज डाउनग्रेडेड' (2025) में प्रकाशित हुआ है। पहला भाग 1765 में दीवानी प्राप्ति के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों द्वारा देखी गई स्वदेशी न्यायिक प्रणालियों पर केंद्रित है, जिन्हें उन्होंने आरंभ में प्रभावी मानकर सराहा, किंतु आगे चलकर ब्रिटिशों ने त्वरित, सस्ती और सुलभ न्याय प्रदान करने वाली इन्हीं स्वदेशी न्यायिक और अन्य संस्थाओं को उलट-पुलट दिया, जिसके दुष्परिणामस्वरूप भारत आज भी उस दौर में गढ़े गए जटिल न्याय-तंत्र से जूझ रहा है। इसी पृष्ठभूमि में भाषा का प्रश्न भी उभरता है। चार खंडों में विभाजित दूसरा भाग, शिक्षा और भारतीय भाषाओं के क्रमिक पतन पर ही केंद्रित है।

यतीन्द्र मिश्र

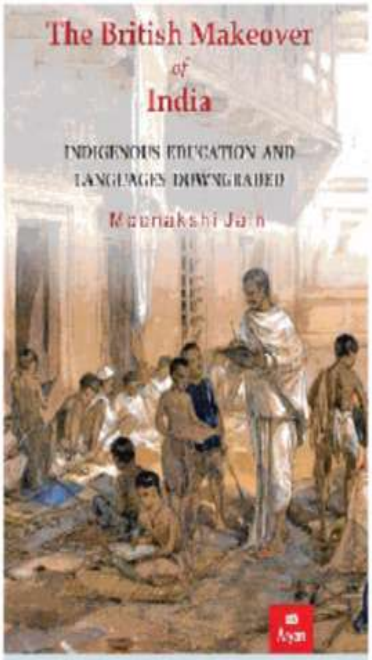

पुस्तक : द ब्रिटिश मेकओवर आफ इंडिया
लेखिका : मीनाक्षी जैन
प्रकाशक : आर्यन बुक्स इंटरनेशनल
मूल्य : 995 रुपये

प्राचीन काल से भारत में स्वदेशी ज्ञान के संरक्षण और हस्तांतरण की सुदृढ़ परंपरा रही है। परिवार, आचार्यों के आश्रम तथा मंदिरों से जुड़े महाविद्यालय और मठ ज्ञान-संप्रेषण के प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित हुए। 19वीं शताब्दी के आरंभ तक स्वदेशी शिक्षा-प्रणालियां सुदृढ़ थीं, पर औपनिवेशिक सत्ता के मजबूत होते ही उन पर ब्रिटिश पाठ्यक्रम और अंग्रेजी शिक्षा थोप दी गई। स्थिति गंभीर हुई, जब मिशनरियों ने शिक्षा के माध्यम से धर्मांतरण को उद्देश्य बना लिया। चार्ल्स ग्रांट जैसे मिशनरी विचारकों ने 1792 में अंग्रेजीकरण और ईसाईकरण की वैचारिक नींव रखी, जिसे आगे चलकर थामस बी. मैकाले ने 1835 की औपचारिक नीति के रूप में लागू किया। दूसरा खंड दर्शाता है कि किस प्रकार मिशनरियों ने शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश किया, ताकि मतांतरण को सुगम बनाया जा सके। अंत में औपनिवेशिक काल में भाषा के जरिये गढ़ी गई सांस्कृतिक पहचान सामने आती है। विस्तृत संदर्भों, अभिलेखों और सर्वेक्षण रिपोर्टों पर आधारित यह शोधग्रंथ केवल औपनिवेशिक शिक्षा या भाषा-नीति की आलोचना नहीं, बल्कि उस बौद्धिक दासत्व को उजागर करता है। निस्संदेह मीनाक्षी जैन अपनी संतुलित, निष्पक्ष और गहन शोध-दृष्टि से इतिहास को नए सिरे से देखने और वर्तमान की बुनियादी धारणाओं पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं।

****

विकसित भारत की राह के रोड़े

संजय गुप्त

जब सरकारी कामकाज दोयम दर्जे का होता है, तब उसका दुष्प्रभाव कहीं अधिक होता है, क्योंकि सरकारी दखल हर कहीं है

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नव वर्ष के आगमन के ठीक पहले पिछले वर्ष की उपलब्धियां गिनाते हुए कहा कि देश अब रिफार्म एक्सप्रेस पर सवार हो गया है। इसके उपरांत उन्होंने सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी आधारित बहुआयामी मंच 'प्रगति' की बैठक में सड़क, रेलवे, बिजली, जल संसाधन और कोयला सहित विभिन्न क्षेत्रों की पांच महत्वपूर्ण अवसंरचना परियोजनाओं की समीक्षा की। इस बैठक में उन्होंने देश को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए सुधार, प्रभावी क्रियान्वयन और व्यापक परिवर्तन बेहद जरूरी बताए। प्रधानमंत्री ने 2025 में किए गए जिन महत्वपूर्ण सुधारों का उल्लेख किया था, उनमें जीएसटी में व्यापक बदलाव, बीमा क्षेत्र में सौ प्रतिशत विदेशी पूंजी निवेश को अनुमति, ग्रामीण रोजगार कानून मनरेगा में आमूलचूल परिवर्तन और श्रम संहिताओं को लागू करने और परमाणु ऊर्जा से जुड़े सुधारों का उल्लेख किया। निःसंदेह जीएसटी में सुधार से आम आदमी को लाभ मिला है, लेकिन अन्य सुधारों का लाभ मिलने में समय लगेगा। मोदी सरकार विभिन्न क्षेत्रों में लगातार सुधार करने के साथ नई योजनाएं और कार्यक्रम शुरू करती रही है। इनके जरिये उसने सुशासन स्थापित करने की कोशिश की है ताकि जनता की समस्याओं का समाधान हो और देश तेजी के साथ आगे बढ़े।

इसमें संदेह नहीं कि प्रशासनिक कामकाज में सरकारी नियंत्रण कम होने और विभिन्न क्षेत्रों में निजी क्षेत्र की भागीदारी से आम जनता को लाभ मिलता है, लेकिन यह भी सच है कि कोई भी देश सरकारी नियंत्रण के बिना नहीं चलता, लेकिन यह नियंत्रण एक सीमा तक ही होना चाहिए। अपने देश में सरकारी नियंत्रण कम करने की बातें तो बहुत होती हैं, लेकिन उनके अनुरूप कुछ ठोस होता हुआ नहीं दिखता और इसीलिए पश्चिमी देश अभी भी यह शिकायत करते हैं कि भारत में सरकारी नियंत्रण अधिक है। वे इस नियंत्रण को सरकारी हस्तक्षेप के रूप में देखते हैं। इसी तरह विदेशी निवेशक भी कारोबारी सुगमता में तमाम सुधार होने के बाद भी भारत में काम करने में बाधाएं देखते हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियां यह शिकायत करती ही रहती हैं कि भारत में कोई उद्योग-व्यापार स्थापित करना अभी भी कठिन बना हुआ है, क्योंकि कदम-कदम पर सरकारी अनुमति की आवश्यकता पड़ती है।

मोदी सरकार की ओर से पिछले 11 सालों में उद्योग-व्यापार स्थापित और उन्हें संचालित करने में सरकारी दखल को कम करने के तमाम कदम उठाए जाने के बाद भी स्थितियां वैसी नहीं बन सकी हैं, जैसी बननी चाहिए। इस

अवधेश राजपूत

मामले में बात केवल केंद्र सरकार की ही नहीं, राज्य सरकारों की भी है। देश के सभी राज्यों का रवैया उद्योग एवं व्यापार के बहुत अनुकूल नहीं कहा जा सकता और इसीलिए विकसित भारत के लक्ष्य में बाधाएं खड़ी हुई दिखती हैं। यह एक तथ्य है कि विकसित भारत के लक्ष्य को पाने के लिए देश में जैसी कारोबारी सुगमता होनी चाहिए, वैसी नहीं है। कारोबारी सुगमता केवल होनी ही नहीं चाहिए, बल्कि वह दिखनी भी चाहिए- खास तौर पर कारोबारियों को। इसी तरह सरकारी तंत्र को जन समस्याओं के समाधान में तत्पर दिखना चाहिए। अधिकांश मामले में इस तत्परता का अभाव ही दिखता है।

निःसंदेह यह आशा की जा रही है कि इस नए वर्ष में भी सुधारों का सिलसिला कायम रहेगा। जनता और उद्योग-व्यापार जगत उन क्षेत्रों में सुधार की खास तौर पर उम्मीद कर रहा है, जहां उनकी गति धीमी है। शहरी ढांचे को ठीक करने के लिए जैसे कदम उठाए जाने आवश्यक हो गए हैं, उनमें देरी नहीं की जानी चाहिए। इसलिए और भी, क्योंकि नगर निकायों के कामकाज में अपेक्षित सुधार न होने से शहरी नागरिकों की समस्याएं दूर होने का नाम नहीं ले रही हैं। हमारे शहर आबादी के बोझ तले दब रहे हैं और उनका ढांचा चरमरा रहा है। बात चाहे सीपीडब्ल्यूडी की हो या पीडब्ल्यूडी की, वे ढंग की सड़कें भी नहीं बना पा रहे हैं। यही स्थिति नागरिक सुविधाएं उपलब्ध कराने वाले अन्य विभागों की भी है। उनकी ओर से किए जाने वाले कार्यों की गुणवत्ता ठीक नहीं हो पा रही है। उनके कामकाज में पारदर्शिता और जवाबदेही का अभाव भी व्याप्त है। यह तब है, जब सब जानते हैं कि शहर आर्थिक विकास के इंजन हैं।

अपने देश में समस्या केवल सरकारी कामकाज में गुणवत्ता के अभाव की ही नहीं है। यह अभाव उद्योग-व्यापार जगत में भी देखने को मिलता है। यह समझा जाना चाहिए कि सरकारी और निजी क्षेत्र की कामकाज की गुणवत्ता ठीक करके ही विकसित भारत की नींव को मजबूत किया जा सकता है। जब सरकारी कामकाज दोयम दर्जे का होता है, तब उसका दुष्प्रभाव कहीं अधिक होता है, क्योंकि हर कहीं सरकारी दखल है और सरकारें सबसे बड़ी नियोक्ता हैं। विडंबना यह है कि औसत सरकारी कर्मियों का काम न तो पारदर्शी ढंग से होता है और न ही जवाबदेही के साथ। गुणवत्ता को प्राथमिकता देने के बजाय जुगाड़ संस्कृति पर जोर दिया जाता है। दुर्भाग्य यह है कि देश में कम ही निजी उद्योग हैं, जहां गुणवत्ता और उत्पादकता को प्राथमिकता दी जाती है। यह एक तथ्य है कि भारत के बहुत कम उत्पाद विश्वस्तरीय गुणवत्ता के लिए जाने जाते हैं। यदि सरकार अपने हर काम की गुणवत्ता ठीक करने को प्राथमिकता दे तो उसका प्रभाव निजी क्षेत्र पर भी पड़ेगा।

सरकारी क्षेत्र में अपेक्षित बदलाव तभी संभव है, जब देश की नौकरशाही के सोच में आमूलचूल परिवर्तन आएगा। समस्या यह है कि फिलहाल सरकार के एजेंडे पर यह दिख नहीं रहा है। नौकरशाही में सुधार की जो प्रतीक्षा की जा रही है, वह इस नए वर्ष पूरी होनी चाहिए। नौकरशाही को अपने कामकाज के तौर-तरीकों के साथ अपनी मानसिकता भी बदलनी चाहिए। इसी के साथ यह भी आवश्यक है कि जनप्रतिनिधि भी अपने काम का तरीका और सोच बदलें। यह भी समय की मांग है कि आम जनता भी अपना कार्य-व्यवहार बदले। उसे अपने अधिकारों के प्रति सचेत होने के साथ ही कर्तव्यों के प्रति भी सजग होना चाहिए। क्या कभी इसकी चर्चा होती है कि एक नागरिक के तौर पर हम अपने संवैधानिक कर्तव्यों के प्रति कितने जागरूक हैं? देश के हर व्यक्ति को, चाहे वह सरकारी कर्मचारी हो या फिर कारोबारी या फिर श्रमिक अथवा अन्य कोई, अपना काम इस तरह करने के लिए तत्पर रहना चाहिए, जिससे विकसित भारत की नींव मजबूत हो।

response@jagran.com

Dainik Jagaran Page -8

भास्कर इंटरव्यू 9 साल में 1 लाख करोड़ मार्केट कैप वाली कंपनी खड़ी करने वाले ग्रो के को-फाउंडर व किसान के बेटे ललित केशरे

सबसे बड़ी सीख- अच्छा आइडिया तभी सफल होता है, जब वो सही समय पर लागू हो

ललित केशरे (44 वर्ष) उन दिग्गज उद्यमियों में हैं, जिन्होंने साधारण पृष्ठभूमि से निकलकर असाधारण असर पैदा किया। मध्यप्रदेश के किसान परिवार में जन्मे ललित का सफर आईआईटी बॉम्बे, कॉर्पोरेट नौकरी, एक असफल स्टार्टअप और फिर भारत के अग्रणी निवेश प्लेटफॉर्म ग्रो की स्थापना तक पहुंचता है। 9 वर्षों में ही ग्रो को 1 लाख करोड़ रु. से अधिक के मार्केट कैप तक ले जाना उनकी दूरदृष्टि, धैर्य और कस्टमर-फोकस का प्रमाण है। वे मानते हैं कि सफलता हर दिन खुद को दोबारा साबित करने का नाम है। आइए, उन्हीं से जानें उनकी कहानी...

ललित केशरे
सह-संस्थापक,
GROWW (ग्रो)

मेरे नाना जी कहते थे- दुनिया में अगर वैल्यू क्रिएट करो, तो असली खुशी मिलती है। उनकी यही सीख आज तक मोटिवेट करती है। जब 1999 में आईआईटी बॉम्बे में चयन हुआ, तब आईटी बूम का दौर था। चारों तरफ स्टार्टअप्स की चर्चा थी। मेरे मन में भी कुछ नया और बड़ा करने की चाह पैदा हुई।

कॉलेज से निकलने के बाद आईटी कंपनी में 7 साल नौकरी की। फिर एक जुनूनी टीम के साथ एजुटेक स्टार्टअप एडुफिलिक्स शुरू किया। मकसद किफायती दामों पर अच्छी क्वालिटी का एजुकेशन कंटेंट देना था। हम स्केल नहीं कर पाए। यह असफलता मेरे लिए सबसे बड़ी सीख बन गई। समझ आया कि किसी आइडिया का सही समय होना कितना जरूरी है। उस दौर में इंटरनेट स्लो था, पहुंच कम थी और इकोसिस्टम तैयार नहीं था। यहीं से मैंने प्रोडक्ट-मार्केट फिट और कस्टमर की असली समस्या को समझने का महत्व सीखा।

आर्थिक चुनौतियां बढ़ीं तो फ्लिपकार्ट से जुड़ा। वहां बड़े स्केल पर बिजनेस चलाना सीखा। बेंगलुरु के एक कैफे में हम चार दोस्त हर रविवार मिलते थे। वहीं निवेश को सरल बनाने का विचार पक्का हुआ। देश में निवेश करने वालों की संख्या बहुत कम थी, जबकि समस्या बड़ी थी। सही समय आने पर हम को-फाउंडर्स ने अपनी-अपनी जॉब छोड़ी और ग्रो की शुरुआत की। परिवार और मेंटर्स का साथ मिला। ग्रो की सबसे बड़ी ताकत है- कस्टमर को सुनना। हम रोज फीडबैक पढ़ते हैं और उसी के आधार पर प्रोडक्ट बनाते हैं। म्यूचुअल फंड, ट्रेडिंग, वेल्थ मैनेजमेंट- हर फीचर जमीन से निकली जरूरत का नतीजा है। पुरानी सफलताएं मायने नहीं रखतीं। हर रोज, हर नया प्रोडक्ट नई लड़ाई है, उसे जीतना ही असली सफलता है।'

- जैसा कृष्णा मोहन तिवारी को बताया

₹10 हजार करोड़ की संपत्ति वाले ललित की जिंदगी के 9 बड़े सबक

1. **जमीन से जुड़े रहना जरूरी;** हर दिन कस्टमर का फीडबैक पढ़ना याद दिलाता है कि असली बॉस कौन है। सफलता के बाद इन कस्टमर्स से दूरी बना लेना खतरनाक है।

2. **बड़ा सपना छोटे साधनों से भी शुरू हो सकता है;** किसी छोटे कैफे में बैठकर भी बड़े आइडिया जन्म लेते हैं। संसाधनों की कमी सोच को रोकनी नहीं चाहिए।

3. **सीखने के लिए नौकरी सबसे अच्छी पाठशाला;** फ्लिपकार्ट में नौकरी ने ही सिखाया कि बड़े पैमाने पर बिजनेस कैसे चलता है। हर नौकरी आपको अगले कदम के लिए तैयार कर सकती है।

4. **हर समस्या सलाह ही मांगती हो, ये जरूरी नहीं;** लोगों को हर बार गाइडेंस नहीं, सरल प्रोसेस चाहिए होता है। जटिलता हटाना अक्सर सबसे बड़ा समाधान होता है।

5. **सही सवाल पूछना आधी समस्या हल कर देता है;** 'लोग निवेश क्यों नहीं कर रहे?'- इस सवाल ने ग्रो की दिशा तय की। सही सवाल ही सही प्रोडक्ट तक ले जाता है, जवाब सही कदम दिखाता है।

6. **फैमिली और जीवनसाथी का भरोसा सबसे बड़ी पूंजी;** जब घर से समर्थन मिलता है, तो फैसले मजबूत होते हैं। जोखिम लेने की शक्ति मिलती है।

7. **स्मार्ट बनें, पर सुनना न छोड़ें;** हम जितने ज्यादा स्मार्ट होते जाते हैं, लोगों को सुनना कम करते जाते हैं। बेहतर प्रोडक्ट के लिए ऐसे लोग चाहिए, जो ईगो दूर रख सकें। बेहद विनम्र हों और लोगों को सुनते रहें।

8. **अनुशासन और रूटीन:** अगर काम पसंद का है, टीम इंटरेस्टिंग है और रूटीन में अनुशासन है, तो बोरियत के लिए आपकी जिंदगी में कोई जगह नहीं बचेगी।

9: **सीखने की निरंतरता:** ललित हर रोज हिस्ट्री, फिक्शन से लेकर इंवेस्टिंग के बारे में पढ़ते हैं। इससे न केवल ज्ञान बढ़ता है, बल्कि मानसिक सुकून भी मिलता है।

Dainik Bhaskar Page No-3

स्वच्छ ऊर्जा आधारित अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहा है देश

बढ़ती मांग को पूरा करने, ऊर्जा सुरक्षा हासिल करने और जलवायु लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भारत स्वच्छ ऊर्जा का उत्पादन तेजी से बढ़ा रहा है। 2025 के दौरान नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता में अब तक की सबसे अधिक वृद्धि दर्ज की गई है। केंद्र सरकार ने 2030 तक 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता का लक्ष्य निर्धारित किया है। इससे 2070 तक नेट-जीरो का लक्ष्य हासिल करने में मदद मिलेगी। 2026 में, भारत कुल ऊर्जा खपत में स्वच्छ ऊर्जा की हिस्सेदारी बढ़ाने में वैश्विक स्तर पर अग्रणी बना रहेगा।

253.96
गीगावाट तक पहुंच गई है नवंबर, 2025 में नवीकरणीय ऊर्जा की कुल स्थापित क्षमता

205.52
गीगावाट थी नवंबर, 2024 में नवीकरणीय ऊर्जा की कुल स्थापित क्षमता

50%
हासिल कर लिया था भारत ने जून 2025 में गैर-जीवाश्म ईंधन स्रोतों से अपनी कुल विद्युत स्थापित क्षमता का, जो पेरिस समझौते के लिए निर्धारित राष्ट्रीय योगदान (एनडीसी) के तहत 2030 के लक्ष्य से पांच साल पहले है

262.74
गीगावाट तक पहुंच गई है नवंबर 2025 तक कुल गैर-जीवाश्म विद्युत स्थापित क्षमता जो देश की कुल विद्युत स्थापित क्षमता का 51.5% है

घरेलू उत्पादन में विस्तार

स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजनाओं के तहत सौर माड्यूल, इलेक्ट्रोलाइजर व बैट्री घटकों के घरेलू उत्पादन में विस्तार हुआ। हरित हाइड्रोजन परियोजनाएं घोषणाओं से आगे बढ़कर प्रायोगिक स्तर पर औद्योगिक उपयोग में आ गईं, विशेष रूप से शोधन, उर्वरक व इस्पात उद्योगों में। इससे जीवाश्म ईंधन की खपत कम हुई है।

सौर ऊर्जा की हिस्सेदारी अधिक

इस प्रगति में सौर ऊर्जा का प्रमुख योगदान है। जनवरी, 2025 में सौर ऊर्जा की स्थापित क्षमता 100 गीगावाट का आंकड़ा पार कर गई। नवंबर, 2025 तक सौर ऊर्जा की स्थापित क्षमता 132.85 गीगावाट तक पहुंच गई है। यह नवंबर 2024 के 94.17 गीगावाट की तुलना में 41 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि है।

पवन ऊर्जा क्षमता में भी हुई वृद्धि

पवन ऊर्जा की स्थापित क्षमता मार्च, 2025 में 50 गीगावाट का आंकड़ा पार कर गई। नवंबर, 2025 में पवन ऊर्जा की स्थापित क्षमता 53.99 गीगावाट तक पहुंच गई। इस तरह से पवन ऊर्जा क्षमता में नवंबर, 2024 के 47.96 गीगावाट की तुलना में 12.5 प्रतिशत से अधिक वृद्धि हुई है।

262.4
करोड़ पौधे लगाए गए प्रधानमंत्री द्वारा शुरू किए गए एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत 24 दिसंबर, 2025 तक

25.17%
भाग वन और वृक्ष आवरण से ढका हुआ है देश के भौगोलिक क्षेत्रफल का

4.83%
की वृद्धि हुई है वर्ष 2013 से वन और वृक्ष आवरण में कुल

9 वें स्थान पर है (पहले 10वें स्थान पर था) भारत वन क्षेत्रफल के मामले में विश्व स्तर प

- तीसरे स्थान पर बना हुआ है भारत विश्व स्तर पर वार्षिक शुद्ध वन वृद्धि के मामले में

वायु गुणवत्ता सुधार और शहरी पर्यावरण

792.72
करोड़ जारी किए गए राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (एनसीएपी) योजना के तहत वित्त वर्ष 2025-26 में 82 शहरों को

103
शहरों में 2024-25 में पीएम10 के स्तर में 2017-18 की तुलना में कमी दर्ज की गई

20% से अधिक की कमी देखी गई 64 शहरों में

25 शहरों ने 40% से अधिक की कमी हासिल की है इनमें से

22
शहरों ने पीएम10 के स्तर के लिए राष्ट्रीय परिवेशी वायु गुणवत्ता मानकों को पूरा किया

लड़ाकू विमानों की गड़गड़ाहट से काराकस की जमीन कांपी, दहशत और डर से इधर-उधर भागते नजर आए लोग

अंधेरे में अमेरिकी हमलों से दहला वेनेजुएला

तबाही

काराकस, एजेंसी। वेनेजुएला में तड़के अचानक तेज धमाकों से नींद खुली तो लोगों को कुछ पल तक समझ ही नहीं आया कि हो क्या रहा है। कुछ ही देर में आसमान गूंज उठा, जमीन कांपने लगी और बेहद नीचे उड़ान भरते लड़ाकू विमानों की गड़गड़ाहट से पूरे काराकस में अफरातफरी मच गई। घबराए लोग घरों से बाहर निकल आए। कोई इधर-उधर भागता दिखा।

हमले के कुछ घंटे बाद राजधानी की तस्वीर पूरी तरह बदल चुकी थी। राष्ट्रपति भवन मिराफ्लोरेस के आसपास भारी हथियारों से लैस सुरक्षाबलों की तैनाती दिखी, लेकिन शहर के बड़े हिस्से में सन्नाटा पसरा रहा। जिन इलाकों को सत्तारूढ़ दल का गढ़ माना जाता है, वहां हथियारबंद लोग सड़कों पर दिखे पर बाकी क्षेत्रों में दुकानें बंद रहीं और सड़कें खाली नजर आईं। अमेरिकी सेना ने एक बयान में कहा, अमेरिकी सेना का कहना है कि राष्ट्रपति ट्रंप ने शुक्रवार शाम 10.46 बजे हमले के आदेश जारी किए।

आसमां में धुएं की काली लकीरें दिखीं: आसमां में धुएं की काली लकीरें तैरती रहीं। उत्तर में ला गुएरा बंदरगाह की दिशा से काला धुआं उठता दिखा। राजधानी के एक सैन्य हवाईअड्डे के पास भी धुएं का गुबार नजर आया। कई इलाकों में बिजली गुल हो गई।

तेल ठिकानों पर असर नहीं : अमेरिकी सैन्य कार्रवाई के बावजूद वेनेजुएला के तेल उत्पादन व रिफाइनिंग पर कोई सीधा असर नहीं पड़ा। सरकारी तेल कंपनी पीडीवीएसए से जुड़े सूत्रों के अनुसार, शनिवार को सभी प्रमुख तेल क्षेत्र और रिफाइनरियां सामान्य रूप से काम करती रहीं। अमेरिकी सेना सितंबर से कैरेबियाई सागर व प्रशांत क्षेत्र में मादक पदार्थों की तस्करी से जुड़े पोतों पर हमले कर रही है। 35 हमलों में 115 लोगों की मौत का दावा किया गया है।

युद्धपोत से अमेरिका लाए जा रहे मादुरो : इधर, एक बयान में राष्ट्रपति ट्रंप ने बताया, मादुरो और उनकी पत्नी को अमेरिका के एक युद्धपोत से न्यूयॉर्क रवाना किया गया, जहां उनके खिलाफ मुकदमा चलेगा।

काराकस में शनिवार रात हमले के बाद काफी देर तक धुएं के गुबार देखे गए। • एजेंसी

वेनेजुएला की राजधानी काराकस में शुक्रवार रात अमेरिकी सैन्य हमले में ला कार्लोटा मिलिट्री एयर बेस पर तबाह एंटी एयरक्राफ्ट यूनिट। • रॉयटर्स

मादुरो को आवास से पकड़ा

वेनेजुएला में सत्तारूढ़ पार्टी के नेता नहूम फर्नांडीज ने बताया कि मादुरो को काराकस स्थित सैन्य अड्डे के भीतर उनके आवास से पकड़ा गया। मीडिया रिपोर्ट्स में अमेरिकी अधिकारियों के हवाले से बताया गया कि मादुरो और पत्नी को सेना ने बेडरूम से घसीटकर निकाला और कब्जे में लिया। अमेरिकी सेना ने काराकस की बिजली गुल करने के बाद ऑपरेशन को अंजाम दिया। कार्रवाई के समय रात के दो बज रहे थे। अमेरिका का कहना है कि कार्रवाई का उद्देश्य मादक पदार्थों की तस्करी से जुड़े नेटवर्क को तोड़ना है। वहीं, वेनेजुएला का आरोप है कि अमेरिका की नजर विशाल तेल भंडार पर है। इस बीच भारत ने अपने नागरिकों को वेनेजुएला की यात्रा करने से बचने की सलाह दी है।

काराकस में हवाई हमलों के बाद इमारतों से निकलकर भागते लोग। • एपी

07 धमाके अमेरिकी सेना ने राजधानी काराकस में किए

150 से ज्यादा लड़ाकू विमानों का इस्तेमाल हुआ

- 50 मिलियन डॉलर का इनाम अमेरिका ने मादुरो पर रखा है
- 07 टन कोकीन की बरामदगी में मादुरो का जुड़ाव होने के हैं आरोप

आपबीती

आगे क्या होगा पता नहीं

वेनेजुएला के राष्ट्रपति मादुरो के पकड़े जाने के अमेरिकी दावे ने अनिश्चितता बढ़ा दी। लोग यह समझने की कोशिश करते रहे कि अब सत्ता किसके हाथ में है। वेलेंसिया शहर की 74 वर्षीय नैन्सी पेरेज ने कहा, पहले सोशल मीडिया पर देखा, फिर टीवी पर। आंखों पर यकीन नहीं हुआ। अब बस यही सोच रही हूं कि आगे क्या होगा।

बहन ने रोते हुए फोन किया

तेल केंद्र माराकाइबो में रहने वाले 39 वर्षीय मैकेनिक जाइरो वासिन ने कहा, मेरी बहन अमेरिका में है। उसने रोते हुए फोन किया और बताया कि हमला हो गया है। पहले तो यकीन नहीं हुआ। दुकान देखने बाहर निकला, लूटपाट का डर था पर सड़कें पूरी तरह खाली थीं। पेट्रोल पंप बंद थे, इसलिए खाने-पीने का सामान खरीद लिया।

सुरक्षित तरीके से सत्ता हस्तांतरण तक हमारा नियंत्रण:ट्रंप

तर्क

मादुरो को तानाशाह बताते हुए कहा, उन्हें न्याय के कटघरे तक लाने के लिए यह कदम उठाया गया

- अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा, अमेरिका की तेल कंपनियां वेनेजुएला में काम करेंगी

पाम बीच, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने शनिवार को कहा, अमेरिका वेनेजुएला में तब तक शासन संभालेगा, जब तक वहां सुरक्षित तरीके से सत्ता हस्तांतरण नहीं होता।

फ्लोरिडा स्थित मार-ए-लागो में प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान ट्रंप ने कहा कि वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को हटाने के बाद अमेरिका देश की जिम्मेदारी अपने हाथ में लेगा। उन्होंने संकेत दिया कि वेनेजुएला में अमेरिका की मौजूदगी की तय समयसीमा नहीं है। ट्रंप ने कहा, हम यह जोखिम नहीं ले सकते कि कोई ऐसा व्यक्ति सत्ता संभाल ले, जो वेनेजुएला के लोगों के हित में काम न करे। ट्रंप ने मादुरो को तानाशाह बताते हुए कहा कि उन्हें न्याय के कटघरे तक लाने के लिए यह कदम उठाया गया। उन्होंने बताया कि मादुरो और उनकी पत्नी के खिलाफ न्यूयॉर्क के साउदर्न डिस्ट्रिक्ट में नार्को-आतंकवाद से जुड़े गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं और अब उन्हें अमेरिकी अदालतों में न्याय का सामना करना होगा। ट्रंप ने कार्रवाई को अमेरिकी इतिहास के सबसे प्रभावी अभियानों में से एक बताया। ट्रंप ने इसे द्वितीय विश्व युद्ध के बाद का सबसे शक्तिशाली सैन्य हमला भी बताया। ट्रंप ने यह भी संकेत दिया कि अमेरिका की बड़ी तेल कंपनियां भविष्य में वेनेजुएला में काम करेंगी। वेनेजुएला का तेल क्षेत्र लंबे समय से बदहाल है। अमेरिकी तेल कंपनियां वहां अरबों डॉलर का निवेश करेंगी। राष्ट्रपति ने बताया, ऑपरेशन में थल, जल और वायु तीनों मोर्चों पर सेनाओं का इस्तेमाल किया गया। ट्रंप ने संकेत दिए कि लैटिन अमेरिका में बढ़ते तनाव के बीच अमेरिका का ध्यान वेनेजुएला तक सीमित नहीं रहेगा और क्यूबा भी अब चर्चा के दायरे में आ सकता है।

तेल भंडार के पांचवें हिस्से वाला देश है वेनेजुएला

नई दिल्ली। वेनेजुएला के पास दुनिया का सबसे बड़ा प्रमाणित कच्चा तेल भंडार है। यह सऊदी अरब और ईरान जैसे देशों से भी अधिक है। वेनेजुएला के पास 303 अरब बैरल कच्चे तेल का विशाल भंडार है, जो दुनिया के कुल भंडार का लगभग पांचवां हिस्सा है।

वेनेजुएला के ओरिनोको बेल्ट वाले क्षेत्र में अधिकांश तेल है, 55,000 वर्ग किमी में फैला हुआ है। दरअसल, वेनेजुएला का तेल अतिरिक्त भारी और सोर (अधिक सल्फर वाला) वाला होता है, जो डीजल बनाने के लिए सबसे उपयुक्त है। इस पर अमेरिका की नजर है।

आगे क्या

क्या अमेरिका से अपने देश लौट पाएंगे मादुरो

अमेरिका ने शनिवार तड़के सैन्य कार्रवाई में वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी सीलिया फ्लोरेस को बंदी बना लिया। उन्हें अमेरिका ले जाकर, उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई हो सकती है। ऐसे में यह सवाल उठने लगा है कि मादुरो के साथ आगे क्या होगा।

दर्ज मुकदमे में ये आरोप

- मादुरो ने अपनी शक्तियों का इस्तेमाल अमेरिका में नशे की तस्करी में किया
- अमेरिकी लोगों को 'सेहत को नुकसान' पहुंचाने की बड़ी पैमाने पर साजिश रची
- अमेरिका में पकड़ी गई सात टन कोकीन सीधे मादुरो और उनके गुट से जुड़ी थी
- अमेरिका के खिलाफ 'फार्क' नाम के एक हिंसक आतंकवादी ग्रुप से मिलीभगत

37 साल बाद हमले की दूसरी घटना

शनिवार को अमेरिका ने वेनेजुए पर जिस तरह हमले किए, वह युद्ध के दौर के बाद किसी लैटिन अमेरिकी देश में की गई पहली कार्रवाई है। 37 साल पहले 19 तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति ज एच.डब्ल्यू. बुश ने सैन्य शास मैनुअल नोरिएगा को हटाने के 'ऑपरेशन जस्ट कॉज' के दौरा लैटिन अमेरिकी देश पनामा में 20,000 सैनिक भेजे थे।

क्या है 'कार्टेल ऑफ सन्स'

अमेरिका ने मादुरो पर मादक द्रव्यों की तस्करी करने जिस समूह के नेतृत्व का आरोप लगाया, उसका नाम 'कार्टेल ऑफ सन्स' बताया है। इस नाम का अर्थ है 'सूरजों का गुट'। वेनेजुएला में उच्चस्तरीय सैन्य अधि अपनी यूनिफॉर्म पर इसी नाम से सितारे पहनते हैं।

न्यूयॉर्क में चलेगा मुकदमा, उम्रकैद हो सकती है

मादुरो के खिलाफ न्यूयॉर्क के दक्षिणी जिले में 2020 से एक संघीय अभि दर्ज है। 28 पन्नों के इस कानूनी दस्तावेज में उन पर नार्को-टेररिज्म और कोकीन भेजने की साजिश के आरोप हैं। ऐसे में उनके खिलाफ न्यूयॉर्क में मुकदमा चलाया जाएगा। हालांकि, मादुरो को अपना पक्ष रखने का मौका मिलेगा या नहीं, अभी स्पष्ट नहीं है। मादुरो पर लगे आरोप बहुत गंभीर हैं उनमें कड़ी सजा का प्रावधान है। अकेले नार्को-टेररिज्म के आरोप में कम कम 20 साल की जेल और अधिकतम उम्रकैद की सजा हो सकती है।

वेनेजुएला में अराजकता की स्थिति बनी

मादुरो को हिरासत में लिए जाने के बाद वेनेजुएला में अराजकता की स्थिति है। सरकार ने आपातकाल की घोषणा की है। रक्षा मंत्री लोपेज ने अमेरिकी कार्रवाई को साम्राज्यवादी हमला करार दिया है और इसके खिलाफ मोर्चा बनाने की अपील की है। देशभर में सशस्त्र बल तैनात हैं।

बगदादी-गद्दाफी जैसे तानाशाह को भी पकड़

अमेरिका पहले इराक के पूर्व राष्ट्र सद्दाम हुसैन, लीबिया के तानाशा गद्दाफी, सीरिया के इस्लामीक कट्टरपंथी अबु बक्र अल बगदादी को भी पकड़ चुका है। इनको पक के लिए अमेरिकी सैनिकों की स यूनिट डेल्टा फोर्स को लगाया गय था, जिसने मादुरो को भी पकड़ा।

मैंने उस शहर का कर्ज उतारा

'जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ' जैसे बहुचर्चित नाटक के लेखक असगर वजाहत ने साहित्य की अनेक विधाओं में लेखन के साथ-साथ फिल्म लेखन और चित्रकला के क्षेत्र में भी खासी ख्याति अर्जित की है। हिंदी साहित्य में साठोत्तरी पीढ़ी के बाद के महत्वपूर्ण कहानीकार एवं नाटककार। हिंदी अकादमी के शलाका और व्यास सम्मान से सम्मानित असगर वजाहत के यात्रा-संस्मरण 'अतीत का दरवाजा' से प्रस्तुत है संपादित अंश...

इलस्ट्रेशन : यशवंत नामदेव

अद्भुत यात्रा संस्मरण-41

असगर वजाहत

जन्म : 05 जुलाई, 1946

लगता है मेरे ऊपर उनका कर्ज है, भारी देनदारी है, जिन्होंने ईसा से लगभग दो सौ वर्ष पहले सीरिया में पेत्रा नाम का शहर बसाया था। उन कलाकारों के ऋण से मैं उस वक्त तक मुक्त नहीं हो सकता, जब तक उनकी महानता का गुणगान न कर लूं। वर्तमान में पेत्रा, जॉर्डन देश की सीमा में है और जॉर्डन की राजधानी अम्मान से 245 किलोमीटर दूर है। कई जगह लिखा गया है कि मरने से पहले आदमी को जो कुछ जगहें देख लेनी चाहिए, उनमें 'पेत्रा' भी एक है। अकल्पनीय सौंदर्य और महानतम प्रतिभा का अनोखा मिश्रण पेत्रा को मनुष्य की कला प्रतिभा के उच्चतम शिखर पर स्थापित करता है।

पेत्रा तक आने की यात्रा जॉर्डन की राजधानी अम्मान से शुरू हुई थी। जॉर्डन यात्रा की प्रेरणा डॉ. दिनेश शर्मा से मिली थी। डॉ. शर्मा एक प्रसिद्ध वास्तुशास्त्री और चिकित्सक होने के साथ-साथ घुमक्कड़, शौकीन तबीयत, मस्तमौला, साहित्य और सौंदर्य प्रेमी हैं। वे अपने किसी काम से जॉर्डन जा रहे थे। जॉर्डन मेरी भी यात्रा-सूची में था। इस तरह हम साथ हो गए, लेकिन कार्यक्रम यह बना था कि डॉ. शर्मा अपना काम खत्म करके दो दिन बाद मुझे ज्वॉइन करेंगे। तब तक मैं अकेला अम्मान का मजा लेता रहूंगा।

सुबह-सवेरे बाजार बंद थे और मैं सड़क पर था। होटल से नीचे उतरा, तो मुख्य सड़क पर आ गया। बिना मकसद एक तरफ चलना शुरू कर दिया। सभी दुकानें बंद थीं, लेकिन चाय-कॉफी की दुकानें खुली थीं। एक चाय की दुकान में चला गया। वहां दो लड़के बैठे थे। अब सवाल पैदा हुआ कि किस जुबान में बात की जाए? हिंदी-अंग्रेजी ये क्यों जानते। अरबी मुझे नहीं आती। 'कॉफी' कहकर खामोश हो गया। वे समझ गए कि मैं विदेशी हूं। अब टूटी-फूटी अंग्रेजी और अरबी के कुछ शब्दों के माध्यम से संवाद आगे बढ़ने लगा। पता चला उनमें से एक लड़का सीरिया के गृहयुद्ध के कारण यहां आ गया है। दूसरा स्थानीय है। सीरिया पर बात होने लगी कि शिआ-सुन्नी आपस में लड़ते हैं। उनके पीछे क्षेत्र के दो बड़े देश हैं और जनता मरती-खपती है, जिसे क्षेत्रीय राजनीति से कोई सरोकार नहीं है। दोनों लड़के एक के बाद एक सिगरेट सुलगा रहे थे। मैंने सिगरेट का पैकेट उठाया, उस पर अरबी में लिखी इबारत के कुछ शब्द मैंने पढ़ लिए। लड़के हैरान हुए कि मैं अरबी पढ़ सकता हूं।

आगे बढ़ा तो फुटपाथ पर एक गरीब बुढ़िया दो बिल्लियों को दूध पिला रही थी। जॉर्डन में गरीबी है। ग्रामीण क्षेत्रों में तो विशेष रूप से बेरोजगारी और गरीबी है, जिसे हमने गांवों में जाकर देखा था। आमतौर पर लोग राज व्यवस्था से संतुष्ट नहीं हैं, क्योंकि देश में भारी असमानता है, लेकिन राज विरोध का स्वर बहुत दबा हुआ है। हो सकता है, इसका कारण राजशाही का आतंक या धर्म की अफीम हो।

होटल में नाश्ता करने के बाद फिर सड़क पर आ गया। मेरे खयाल से किसी देश को देखने और समाज को समझने का सड़कों पर घूमने से अच्छा और कोई दूसरा रास्ता नहीं है। सड़क किताब होती है। बाजार खुल गया था। मैं दुकानों और लोगों को देखता आगे बढ़ने लगा। खयाल यह था कि मुहाजिरों के बस अड्डे जाकर कोई ऐसी बस पकड़ूंगा, जो एक-दो घंटे में किसी दूसरे कस्बे या शहर ले जाएगी। वहां घूमूंगा और शाम तक वापसी हो जाएगी।

बाजार का रंग बदल गया था। दुकानों के अलावा फुटपाथ पर सामान फैला पड़ा था। फुटपथिया दुकानें बता रही थीं कि उनके ग्राहक भी बड़ी संख्या में हैं। फुटपाथ पर लगी दुकानें देखते-देखते अचानक मैंने फुटपाथ पर बच्चों के पुराने खिलौनों की दुकान देखी और डर गया। एक अजीब तरह का डर लगने लगा। मैं उस दुकान के सामने ठहर गया। लोग, मतलब गरीब लोग अपने बच्चों के लिए दूसरे बच्चों द्वारा खेले गए पुराने खिलौने खरीद रहे थे।

मैंने यह भी देखा कि पुराने खिलौने खरीदने वालों के साथ बच्चे नहीं हैं। पुराने खिलौने देखकर बच्चे मां-बाप से क्या यह न पूछते होंगे कि खिलौने पुराने क्यों हैं? ये भी पूछते होंगे कि उन्हें किन बच्चों ने खेल कर पुराना या गंदा कर दिया है। बच्चों के मन में यह भी आता होगा कि वे बच्चे कैसे होंगे, जो नए खिलौनों से खेलते होंगे। मां-बाप के लिए बच्चों को यह समझाना मुश्किल हो जाता होगा।

कॉफी पीकर फिर टहलने लगा। मिठाई की एक दुकान दिखाई पड़ी और कुछ अपने यहां जैसी मिठाइयों की शक्लें थीं। बड़ी-बड़ी रंग-बिरंगी जलेबियां और कुछ रसगुल्ले जैसा दिखाई पड़ा। सोचा, 'ट्राई किया जाए।' मिठाई खानी नहीं चखनी थी। यह बात दुकानदार को समझाने में वक्त लगा। मिठाई खाई, तो कुछ खास नहीं लगी। आगे बढ़ा। घूमते-घूमते दोपहर हो गई थी और खाने का मसला सामने था। दो-तीन खाने के होटलों में से एक चुना और खाने बैठ गया।

इधर, जिस बस अड्डे की तलाश थी, वहां तो नहीं पहुंच पाया, लेकिन एक ऐसी जगह आ गया, जहां से मिनी बसें कहीं या कई तरफ जा रही थीं। पूछने पर पता चला कि मैं मिनी बस में बैठकर वादिए-मूसा नामक कस्बे तक जा सकता हूं और शाम तक वापस आ सकता हूं।

शहर से निकलने का अच्छा तरीका था। जल्दी ही शहर की चमक-दमक से दूर उजाड़ पहाड़ों और सूखे इलाकों से गुजरती मिनी बस कस्बे में आ गई। देखकर अच्छा लगा कि यही यथार्थ है, सच्चाई है, देश यही है, यही असली लोग हैं। उतर कर कस्बे के बाजार में घूमने लगा। सफाई-व्यवस्था अच्छी लगी। बहुत अधिक भीड़-भाड़ भी नजर नहीं आई। हां, थोड़ी पस्ती जरूर दिखाई पड़ी। एक गली में चाय-कॉफी की दुकान नजर आई, वहां दो लड़के बैठे थे। मैं वहीं बैठ गया। उम्मीद थी कि वे शायद अंग्रेजी जानते होंगे पर अनुमान गलत निकला।

कॉफी पीकर फिर टहलने लगा। मिठाई की एक दुकान दिखाई पड़ी और कुछ अपने यहां जैसी मिठाइयों की शक्लें थीं। बड़ी-बड़ी रंग-बिरंगी जलेबियां और कुछ रसगुल्ले जैसा दिखाई पड़ा। सोचा, 'ट्राई किया जाए।' मिठाई खानी नहीं, चखनी थी। यह बात दुकानदार को समझाने में वक्त लगा। मिठाई खाई, तो कुछ खास नहीं लगी।

आगे बढ़ा। घूमते-घूमते दोपहर हो गई थी और खाने का मसला सामने था। दो-तीन खाने के होटलों में से एक चुना और खाने बैठ गया। बड़ी-सी रोटी, कबाब और दही के रायते का 'कॉम्बिनेशन' मजेदार था। खाकर पैसे पूछे, उसने तीस रियाल बताए। मैंने गलती से उसे तीन सौ दे दिए। उसने फौरन मेरी गलती की तरफ इशारा किया और आसमान की तरफ उंगली उठाकर कुछ कहा, जिसका मतलब साफ था।

होटल के नीचे वाली मुख्य सड़क पर प्राचीन रोमन थिएटर के विशाल खंडहर हैं। इस प्रांगण में शाम के वक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। पहले दिन ही शाम को घूमता-घामता वहां पहुंचा और अरब नर्तकों का नृत्य देखा। परंपरागत वेशभूषा में दस-पंद्रह आदमी नाच रहे थे। उनका नाच कुछ मार्शल आर्ट जैसा था। कुछ ऐसा नृत्य था, जो युद्ध के बाद या पहले किया जाता रहा होगा। यह अजीब लगा कि दो-तीन नृत्य जो वहां देखे उनमें सभी आदमी थे, कोई महिला नहीं थी, जबकि अरब की महिला नर्तकियां बहुत विख्यात रही हैं। हो सकता है, वर्तमान समय की कट्टरवादिता ने महिलाओं को नृत्य के हाशिये पर डाल दिया हो।

रोमन थिएटर के प्रांगण में मैंने ऊपर से नीचे तक काले बुर्कों में ढंकी सात-आठ महिलाओं को एक साथ बैठे देखकर उनका फोटो ले लिया। मुझे लगा और दूसरे लोग भी कहते हैं कि मुस्लिम समाज ने महिलाओं के पर्दे के प्रति कुछ ज्यादा ही कड़ा रवैया अपनाया हुआ है। यह प्रायः अरब देशों में देखा जा सकता है।

(साभार : 'अतीत का दरवाजा', राजपाल एंड संज, दिल्ली से संपादित अंश)

वो लम्हा

लुई ब्रेल

ब्रेल लिपि के आविष्कारक

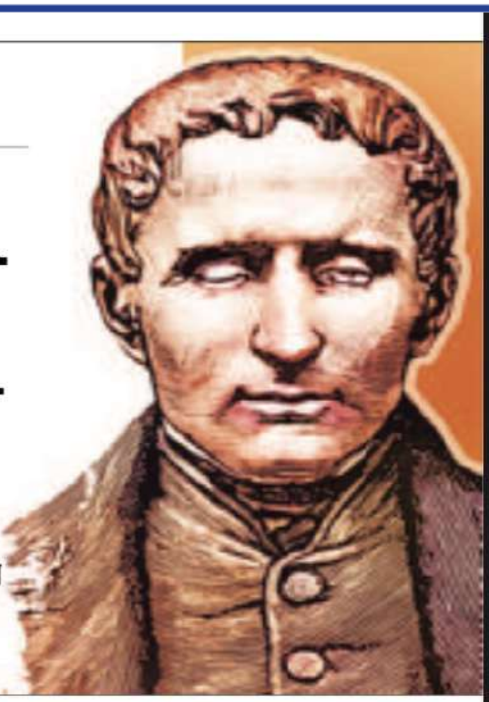

घने अंधेरों में उभरे अक्षरों का आलोक

दृष्टिबाधितों के उस विद्यालय में पढ़ाई नाममात्र की थी, क्योंकि उभरे अक्षरों वाली किताबें न के बराबर थीं। ऐसे बच्चों को कोई न कोई काम सिखा दिया जाता था, ताकि जिंदगी कट जाए। उस बालक को भी बक्से और चप्पलें बनाना सिखा दिया गया था।

असंख्य ऐसे इंसान होते हैं, जिनकी जिंदगी में रात कभी नहीं ढलती। हमेशा अंधेरा छाया रहता है। उस 12 वर्षीय बालक का भी यही हाल था। वह टटोलते हुए ही सब कुछ करता था। उसकी पढ़ाई भी सिर्फ थोड़ा टटोलने और कुछ समझ जाने तक महदूद थी, लिखने का तो कोई सवाल ही पैदा नहीं होता था।

वह बीते दो वर्ष से पेरिस में दृष्टिबाधित बच्चों के विशेष स्कूल 'रॉयल इंस्टीट्यूट फॉर ब्लाइंड यूथ' में पढ़ रहा था। पढ़ाई तो नाममात्र की थी, क्योंकि उभरे अक्षरों वाली किताबें न के बराबर थीं। ऐसे बच्चों को कोई न कोई काम सिखा दिया जाता था, ताकि जिंदगी कट जाए। उस बालक को भी बक्से और चप्पलें बनाना सिखा दिया गया था। जिंदगी किसी तरह चल रही थी, पर वह अक्सर याद करता था कि कभी उसकी आंखें ठीक थीं। तीन साल की उम्र रही होगी, वह घर-दरवाजे पर खूब दौड़ता-भागता था। एक दिन खेल-खेल में पिता का कोई औजार उसकी दायीं आंख में जा लगा। तब अच्छी चिकित्सा के दिन नहीं आए थे। बायीं आंख में भी संक्रमण फैला और कुछ ही दिनों में दोनों आंखों ने देखना बंद कर दिया। तब वह लाचार बच्चा जिससे भी मिलता था, यही पूछता था कि यहां इतना अंधेरा क्यों है?

उस अंधेरे ने ही उसे अपने गांव से दूर पेरिस के उस खास स्कूल तक पहुंचाया था। किसी तरह समय बीत रहा था, लेकिन एक दिन स्कूल में एक खास हस्ती का आगमन हुआ। पूर्व सैन्य कप्तान चार्ल्स बार्बियर ने विशेष छात्रों को बताया कि हम सैनिक रात के अंधेरे में कहीं संदेश भेजने या संदेश पढ़ने के लिए एक खास लिपि या शैली का उपयोग करते हैं। इस लिपि में उभरे हुए कुछ संदेशों का उस बालक ने भी पूरे मनोयोग से स्पर्श किया और उसका रोम-रोम हर्षित हो उठा। उसने इस विशेष विधि को तत्काल प्रयोग में लाने का फैसला कर लिया।

अब क्या था, कक्षा में कोई पाठ सुनने और चप्पलें बनाने के काम के बाद जैसे ही मौका मिलता, वह अंधेरे में लिखने की उस विधि पर काम शुरू कर देता। जल्दी ही उसे एहसास हो गया कि इस विधि को और कारगर बनाया जा सकता है। सैनिक अपनी कूट लिपि के लिए 12 डॉट के ढांचे का इस्तेमाल करते थे, लेकिन उस किशोर ने केवल छह डॉट वाला ढांचा बनाया। उसने एक विशेष स्लेट या स्केल तैयार किया। डॉट बनाने के लिए एक औजार बनाया, जिसे स्टाइलस नाम दिया। यह पूरी विधि बनाने में तीन वर्ष का समय लगा। अब अपने नए काम को साबित करने की बारी थी। पेरिस में तब प्रचंड ठंड के दिन चल रहे थे। साल चल रहा 1824, उस रॉयल इंस्टीट्यूट के हेडमास्टर डॉक्टर अलेक्जेंडर रेने पिग्नियर बहुत चकित भाव से आए। उन्हें बताया गया कि आपके संस्थान के छात्र लुई ब्रेल एक लिपि का प्रदर्शन करेंगे। 15 वर्षीय लुई ब्रेल ने हेडमास्टर साहब से कहा, सर, आप किताब में से कोई लेख पढ़िए और मैं सुनकर लिखता जाऊंगा।

हेडमास्टर साहब ने बोलना शुरू किया और ब्रेल स्टाइलस, रूलर-स्केल के सहारे कागज पर निशान बनाते चले गए। हेडमास्टर साहब धीरे-धीरे पढ़ रहे थे, तब खुद ब्रेल ने कहा कि सर, आप और तेजी से पढ़िए, मैं लिख रहा हूं।

हेडमास्टर साहब तेजी से पढ़ते गए और ब्रेल ने उस पूरे लेख को निशान बना-बनाकर उकेर दिया। जब हेडमास्टर साहब ने लेख पढ़ना समाप्त किया, तब ब्रेल ने अपने लेखन की शुरुआत में वापस जाकर, अपनी उंगलियों को उभरे हुए बिंदुओं पर फेरा और पूरा पाठ शब्दशः सुना दिया। वहां मौजूद तमाम लोग दंग रह गए। खुशी से भाव-विभोर हेडमास्टर साहब ने वहीं घोषणा कर दी कि जो लोग देख नहीं पाते, आज उनकी दुनिया में क्रांति का आगाज हो गया है। स्कूल ने अगले ही दिन ब्रेल की उभरे बिंदुओं वाली प्रणाली को पढ़ाना शुरू कर दिया। ब्रेल कागज पर स्टाइलस को इतनी तेजी से चलाते थे, मानो उनके हाथ में कोई मशीन लगी हो। पेरिस की एक प्रदर्शनी में ब्रेल को प्रति मिनट 2,500 बिंदु या डॉट बनाते हुए देखा गया। वह एक के बाद एक उपयोगी किताबों की रचना ब्रेल में किए जा रहे थे, ताकि उन जैसों के संसार में भी अक्षरों का आलोक अच्छे से फैल जाए। उनकी दुनिया के लोग न केवल पढ़ सकें, मनचाहा लिख भी सकें।

धीरे-धीरे पूरी दुनिया ने लुई ब्रेल की लिपि को अपना लिया। ब्रेल के निधन की 100वीं बरसी पर आयोजित एक समारोह में विश्व प्रसिद्ध लेखिका व दृष्टिबाधितों की दुनिया की सबसे खास मिसाल हेलेन केलर ने कहा था, हम तमाम दृष्टिबाधित लोग लुई ब्रेल के ऋणी हैं। हमारी उंगलियों के नीचे उभरे हुए अक्षर अनमोल बीज हैं, जिनसे हमारी बौद्धिक संपदा का अंकुर फूटा है।

4 जनवरी को जन्मे लुई ब्रेल (1809-1852) फ्रांस ही नहीं, दुनिया के महानतम नायकों में शुमार हैं। दुनिया उनकी ऋणी है।

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

जीना इसी का नाम है

चेतना गाला सिन्हा
बैंकर, समाजसेवी

लाखों ग्रामीण औरतों की सहारा बनी एक चेतना

चेतना चाहतीं, तो वह मुंबई में एक आरामदेह जिंदगी जी सकती थीं, मगर गांधी-जेपी के दर्शन ने उन पर कुछ ऐसा जादू किया था कि वह महाराष्ट्र के गांवों में पहुंच वहां के भूमि अधिकार आंदोलनों, कृषि आंदोलनों और महिला सशक्तीकरण की मुहिम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने लगीं।

हमारे देश में बहुत सारे लोगों, खासकर राजनेताओं को इस बात का बड़ा गुमान रहता है कि उन्होंने न जाने कितने भारतीयों की जिंदगी संवार दी। दर-हकीकत, वे समूचे सिस्टम के काम का सेहरा अपने सिर सजाने की कोशिश करते रहते हैं और सरमायेदारों की एक पूरी फौज उनके दावों की मुनादी करती रहती है। ऐसे में, जब चेतना गाला सिन्हा जैसे जमीनी लोगों के काम सामने आते हैं, तब यह एहसास होता है कि हमारे सियासतदां इन लोगों के आगे कितने बौने हैं!

आज से करीब 68 साल पहले मुंबई के एक सुशिक्षित, आर्थिक रूप से सक्षम परिवार में चेतना पैदा हुईं। महानगरीय सुविधाओं के बीच पली-बढ़ी चेतना को बचपन से ही बेहतर शिक्षण संस्थानों में पढ़ने का मौका मिला। 1980 के दशक की शुरुआत में जब वह बॉम्बे यूनिवर्सिटी की कॉमर्स स्नातक की छात्रा थीं, तभी उनकी मुलाकात प्रसिद्ध गांधीवादी नेता जयप्रकाश नारायण से हुई। उस मुलाकात ने चेतना की पूरी चेतना बदल डाली। दरअसल, जेपी उन दिनों देश भर के कॉलेजों-यूनिवर्सिटियों में जा-जाकर नौजवानों का आह्वान कर रहे थे कि वे गांवों में जाकर काम करें।

चेतना चाहतीं, तो उन्हें मुंबई (तब बॉम्बे) में अच्छी नौकरी मिल सकती थी और वह एक आरामदेह जिंदगी भी जी सकती थीं, मगर गांधी-जेपी के दर्शन ने कुछ ऐसा जादू किया था कि वह महाराष्ट्र के गांवों में पहुंच वहां के भूमि अधिकार आंदोलनों, कृषि आंदोलनों व महिला सशक्तीकरण की मुहिम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने लगीं। इसी क्रम में चेतना सूखा प्रभावित गांव मसवाड़ पहुंचीं। वहां के युवा किसान नेता विजय सिन्हा से वह बहुत प्रभावित हुईं। विजय बहुत पढ़े-लिखे तो नहीं थे, मगर एक प्रखर वक्ता थे। उनकी बातें लोगों पर खूब असर करतीं। उन्हें सुनने बड़ी भीड़ जुटती। आहिस्ता-आहिस्ता चेतना और विजय एक-दूसरे से प्यार करने लगे और अंततः उन्होंने विवाह करने का फैसला किया।

घरवाले और कॉलेज के तमाम साथी चेतना के इस फैसले से हैरान थे। उनका चौंकना स्वाभाविक भी था। कहां देश के सबसे महंगे, सुविधायुक्त महानगर में पली-बढ़ी लड़की और कहां एक सूखाग्रस्त गांव, जहां बुनियादी सुविधाएं तक न थीं। चेतना का परिवार चिंतित था कि वह निबाह कैसे करेंगी, उस गांव में तो शौचालय तक नहीं था! नैतिक आदर्शों और प्रेम ने सभी चिंताओं व नसीहतों पर विजय पाई थी। चेतना ने विजय से विवाह भी किया और सन् 1987 में वह अपने ससुराल मसवाड़ आ बसीं।

मसवाड़ में रचे-बसे चेतना को कई वर्ष बीत चुके थे। वह तीन बेटों की मां बन चुकी थीं। एक दिन कांताबाई नाम की गांव की एक महिला चेतना से मिलने आई और उनसे कहा कि वह बचत खाता खुलवाना चाहती हैं। चेतना ने कांताबाई से पूछा,

क्या आपके पास इतने पैसे होते भी हैं कि आप बचा सको? आप तो फुटपाथ पर रहती हो? कांताबाई ने कहा, मैं पैसे बचाना चाहती हूं, ताकि मानसून के आने तक इतने रुपये जमा कर सकूं कि प्लास्टिक शीट खरीद पाऊं। वह अपने परिवार को बारिश की मार से बचाना चाहती थीं।

कांताबाई को लेकर चेतना बैंक पहुंचीं, मगर बैंक मैनेजर ने छोटी रकम का हवाला देते हुए खाता खोलने से साफ इनकार कर दिया। चेतना को यह बात बुरी तरह चुभी। कांताबाई कर्ज मांगने तो बैंक नहीं गई थीं, वह तो इतना भर चाहती थीं कि मेहनत से कमाई गई उनकी छोटी रकम भी सुरक्षित रहे। चेतना ने सोचा कि यदि बैंक यह काम नहीं कर रहा, तो क्यों न एक कॉपरेटिव बैंक शुरू किया जाए, ताकि कांताबाई जैसी औरतों को बचत का मौका मिले। साल 1996 में उन्होंने लाइसेंस के लिए आवेदन किया। रिजर्व बैंक ने यह कहते हुए चेतना का आवेदन खारिज कर दिया कि आरबीआई ऐसे बैंक की इजाजत नहीं दे सकता, जिसके प्रमोटर्स अशिक्षित हों।

चेतना लगभग रोती हुई गांव लौटीं और कांताबाई व दूसरी औरतों को बताया कि वह लाइसेंस नहीं हासिल कर सकीं, क्योंकि आप लोग पढ़ी-लिखी नहीं हो। औरतों ने कहा, आप मत रोइए, हम लिखना-पढ़ना सीखेंगे और फिर से लाइसेंस के लिए आवेदन देंगे। छह महीने में चेतना की मेहनत ने रंग दिखाया, मसवाड़ की महिलाओं ने लिखना-पढ़ना, दस्तखत करना सीख लिया। सन् 1997 में चेतना 15 महिलाओं को साथ लेकर आरबीआई की दहलीज पर पहुंचीं। आरबीआई ने चेतना व उनके गांव की महिलाओं के जज्बे को सलाम करते हुए लाइसेंस जारी कर दिया और इस तरह देश का पहला महिला ग्रामीण बैंक (मान देशी महिला बैंक) वजूद में आया।

यह महिलाओं का अपना बैंक था। उनके हितों की खैरख्वाह चेतना ने एक और कमाल किया। चूंकि गरीब महिलाएं बैंक नहीं आ सकती थीं, क्योंकि इससे उनकी मजदूरी या काम का नुकसान होता, इसलिए बैंक उनके घर तक पहुंचा। महिलाओं का महिलाओं के लिए महिलाओं द्वारा संचालित इस बैंक ने कांताबाई को पक्का मकान बनाने में ही मदद नहीं की, बल्कि इसने महाराष्ट्र की लाखों महिलाओं की जिंदगी को रोशन किया। यह बैंक बेटियों को साइकिल, महिलाओं को सिलाई मशीन से लेकर दूसरे उपकरण खरीदने या कोई कारोबार शुरू करने के लिए कर्ज देता है। बीते वर्षों में मान देशी महिला बैंक का कारवां बढ़ता गया। आज दस लाख से

साल 1997 में चेतना 15 महिलाओं को साथ लेकर आरबीआई की दहलीज पर पहुंचीं। आरबीआई ने चेतना व उनके गांव की महिलाओं के जज्बे को सलाम करते हुए लाइसेंस जारी कर दिया और इस तरह देश का पहला महिला ग्रामीण बैंक (मान देशी महिला बैंक) वजूद में आया।

अधिक महिलाएं इसकी खाता धारक हैं और इस बैंक की बाजार-कीमत 200 करोड़ रुपये की है। चेतना की इस खामोश क्रांति को पूरी दुनिया ने सराहा। उन्हें अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया। साल 2018 में वह वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की सह-अध्यक्षता करने वाली हिन्दुस्तान की पहली महिला बनीं।

बगैर किसी गुरूर के दूसरे के काम आना गांधी ने सिखाया, जेपी ने अपनाया और चेतना सिन्हा उसे आगे बढ़ा रही हैं। ऐसी जिंदगी से भला किसे रश्क न होगा?

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

जंग की आहटें और यह नया साल

वर्ष 2025 ने अगर बहुत कुछ दिया है, तो साल 2026 के समक्ष युद्धों की नई चुनौती खड़ी कर दी है। क्या हर रोज जंग की ज्वाला की ओर घिसट रही हमारी दुनिया में अब भी शांति और सहमति के नए सूत्र तलाशने की कुव्वत शेष है? इस सवाल का जवाब ही घातकतम हथियारों से बजबजाती धरती का भविष्य तय करेगा।

आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

आजकल

शशि शेखर

क्या आपने अमेरिकी स्पेशल फोर्स के जवानों की गिरफ्त में जंजीरों में वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो का फोटो देखा? क्या यह तस्वीर आपको दिसंबर 2003 में छपे एक और दर्दनाक चित्र की याद नहीं दिला गई?

उस फोटो में सद्दाम हुसैन थे, इसी तरह जकड़े हुए, हतप्रभ और हताश। मादुरो भी सद्दाम की तरह एक संप्रभु देश के निर्वाचित राष्ट्रपति हैं। क्या अंतरराष्ट्रीय कानून और संयुक्त राष्ट्र अमेरिकी हुक्मरानों की सनक के गुलाम हैं? जॉर्ज डब्ल्यू बुश सद्दाम को सूली पर चढ़ाने के बावजूद अपना एक भी आरोप प्रमाणित नहीं कर पाए थे, क्या मादुरो झूठ की इस परंपरा की अगली कड़ी साबित होने जा रहे हैं?

अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति डोनाल्ड जे ट्रंप का यह कारनामा आशंकाओं का भरा-पूरा महाकाव्य रचने की कुव्वत रखता है। दशकों से किसी अमेरिकी राष्ट्रपति ने नए साल के पहले हफ्ते में दुनिया को जंग की ऐसी सौगात नहीं दी थी। वेनेजुएला की यह वारदात डरावनी है।

मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि ट्रंप की तरह ही रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन अपने यूक्रेनियाई समकक्ष वोलोदिमीर जेलेंस्की को गिरफ्तार करना चाहते हैं। अभी तक वह अपने मकसद में भले सफल न हो सके हों, लेकिन उनकी फौज ने यूक्रेन के बड़े भूभाग पर कब्जा कर लिया है। सोवियत फौजियों का यूक्रेन की धरती में धंसाव जारी है और हर पल कीव की स्थिति नाजुक होती जा रही है।

साल के पहले दिन मॉस्को के आला अधिकारियों ने एक वीडियो जारी कर घोषणा की कि यूक्रेन के 91 ड्रोन हमारे हुक्मरां पुतिन के आधिकारिक आवास पर दागे गए। इस हमले का मकसद पुतिन को सांघातिक नुकसान पहुंचाना था। कीव ने इसका खंडन किया है, मगर मॉस्को बदला लेने के 'हक' पर अड़ा हुआ है। कोई आश्चर्य नहीं कि हम आने वाले दिनों में वेनेजुएला की राजधानी कराकस जैसी या उससे मिलती-जुलती कोई घटना कीव में घटती देखें।

यहां एक और त्रासद तथ्य की ओर आपका ध्यान खींचना चाहूंगा। अमेरिकी राष्ट्रपति ने वेनेजुएला में हमला इस बिना पर किया कि वहां के राष्ट्रपति नशीले पदार्थों के तस्करों को पनाह देते हैं, जिनमें से कई तो दहशतगर्दों की श्रेणी में रखे जाते हैं। ऐसा कहते वक्त वह सुविधापूर्वक भूल जाते हैं कि उनके परम मित्र पाकिस्तान के हुक्मरां तो ओसामा बिन लादेन से लेकर अजहर मसूद तक को न केवल पनाह देते आए हैं, बल्कि उन जैसों को जनने में भी उन्हें महारत हासिल है। उधर, पुतिन ने हमले के वक्त दावा किया था कि जेलेंस्की फासिस्ट हैं। दुनिया पर सबसे बड़ा असर डालने वाली घटनाओं के मूल में इसी तरीके के कुतर्क पाए जाते हैं।

दुनिया की मौजूदा अशांति इन्हीं असत्यों की देन है।

'ग्लोबल पीस इंडेक्स' (जीपीआई) की ताजा रिपोर्ट बताती है कि संयुक्त राष्ट्र के 193 सदस्य देशों में से 78 इस समय किसी न किसी रूप में जंग से जूझ रहे हैं। द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद यह पहला अवसर है, जब इतनी बड़ी संख्या में संप्रभु राष्ट्र एक-दूसरे से टकरा रहे हैं। 17 दुर्भाग्यशाली देश तो ऐसे हैं, जिनके एक हजार से अधिक नागरिक 2025 में मारे गए।

मैं जान-बूझकर यहां पश्चिमी अफ्रीकी माली, नाइजर, बुर्किना फासो, चाड आदि देशों की बात नहीं कर रहा। वे बरसों से इस प्राणलेवा बला की चपेट में हैं। अब तो थाईलैंड और कंबोडिया जैसे शांत समझे जाने वाले देश भी गुत्थमगुत्था हो रहे हैं। पिछले महीने की 13 तारीख को थाईलैंड ने अमेरिका के दिए हुए एफ-16 बमवर्षक का उपयोग करते हुए कंबोडिया पर बम बरसाए। इससे 11 लोग मारे गए। अकाल काल के गाल में समाए लोग वहां मनोरंजन के लिए जुटे थे। युद्ध उनके ख्वाबों-ख्यालों से परे था।

हथियारों के बारे में कहा जाता है कि जो भी उनका संग्रह करता है, वह इसका शिकार जरूर बनता है।

जीपीआई की ही रिपोर्ट बताती है कि संसार के 84 देश ऐसे हैं, जो पिछले छह साल से निरंतर अपना रक्षा व्यय बढ़ाते जा रहे हैं। इनमें परमाणु शक्ति से संपन्न राष्ट्र भी हैं। सन् 2023 में इनका कुल रक्षा व्यय विश्व जीडीपी का 11.6 प्रतिशत तक पहुंच चुका था। इसी का नतीजा है कि समूची धरती पर शांति-कामना में 0.3 प्रतिशत की और गिरावट आई है। अपने में सिकुड़ते-सिमटते देशों के बाशिंदे भला किस मुंह से नई और भली 21वीं सदी की संरचना करेंगे?

इसी बीच रूस और यूक्रेन की जंग चौथे साल की दहलीज पर पहुंच चुकी है। इसके चलते अब तक 53 हजार के करीब लोग मारे जा चुके हैं और एक करोड़ से अधिक विस्थापित हो चुके हैं। इस युद्ध ने न केवल इन दो देशों को प्रभावित किया है, बल्कि पिछले 50 सालों में सर्वाधिक शांत माने जाने वाले यूरोप को भीतर से झिंझोड़ दिया है। डेनमार्क न केवल द्वितीय विश्व-युद्ध में बनाई उन सुरंगों की सफाई करा चुका है, जिनमें हमला होने की स्थिति में सामान्य लोग छिप सकते थे, बल्कि उसने नए मारक हथियारों के सौदे भी शुरू कर दिए हैं। पड़ोसी स्वीडन की भी यही स्थिति है। यूरोप में ऐसा कोई दिन नहीं जाता, जब कोई बड़ा नेता या जनरल रूस के आक्रमण की आशंका नहीं दोहरा देता।

डोनाल्ड ट्रंप ने जब से नाटो से अधिक रक्षा शुल्क वसूलने की जद्दोजहद शुरू की है, तब से यूरोपीय देश अपने रक्षा व्यय में और बढ़ोतरी के लिए मजबूर हो रहे हैं। इसका असर संसार की माली हालत पर पड़ रहा है और विश्व की कल्याणकारी योजनाएं शिथिल पड़ रही हैं।

क्या 1991 से 2019 के बीच रची गई विकास-गाथा अतीत बन चली है?

हमारे यहां भी सत्ता-प्रतिष्ठान और सैन्य प्रशासन रह-रहकर ऑपरेशन सिंदूर-02 की आशंकाएं जताता रहता है। पाकिस्तान तो पहले से इस आपदा का शिकार था, लेकिन उसके द्वारा आरोपित हालात ने हमें बड़ी जंग की तैयारी पर मजबूर कर दिया है। हमारी एक चुनौती यह भी है कि दूसरा पड़ोसी चीन, जिसकी आर्थिक और सैन्य भुजाएं हमसे कहीं बलवान हैं, शत्रुतापूर्ण रवैया रखता है। आपको देश के पहले 'चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ' जनरल विपिन रावत का वह बयान याद होगा कि हमें एक साथ दो मोर्चों पर लड़ाई के लिए तैयार रहना चाहिए।

यही नहीं। पिछले एक साल से बांग्लादेश में जिस तरह की घटनाएं हो रही हैं और उनको इस्लामाबाद के साथ बीजिंग से जैसा समर्थन हासिल हो रहा है, वह कुछ नई चिंताएं जनता है। बांग्लादेश आंतरिक हिंसा के दावानल से झुलस रहा है। वहां अब तक महत्वपूर्ण छात्र नेताओं की रहस्यपूर्ण तरीके से हत्या हो चुकी है। हर हत्या के बाद वहां बदअमनी का आकार बढ़ जाता है और भारत विरोध का शोर भी। सवाल उठता है कि हमारे इस पड़ोसी को भड़काने की साजिश कर कौन रहा है?

वर्ष 2025 ने अगर बहुत कुछ दिया है, तो साल 2026 के समक्ष युद्धों की नई चुनौती खड़ी कर दी है। क्या हर रोज जंग की ज्वाला की ओर घिसट रही हमारी दुनिया में अब भी शांति और सहमति के नए सूत्र तलाशने की कुव्वत शेष है? इस सवाल का जवाब ही घातकतम हथियारों से बजबजाती धरती का भविष्य तय करेगा।

X @shekharkahin
@shashishekhar.journalist

EDU TERIA